॥ भूमिका ॥

प्रिय पाठकगण ! आज मैं भी एक नवीन उपहार लेकर सेवा में उपस्थित होता हूँ। यद्यपि आप मेरे परिचय से अनभिज्ञ हैं तथापि आशा करता हूँ कि अब से आप महाशय गण मुझे भी अपने सेवकों में गिनेंगे। अत्यानन्द का विषय है कि आजकल तन्त्र शास्त्र की चर्चा अधिकाई से होने लगी है, जिधर तिधर तन्त्र शास्त्र का प्रचार होता जाता है। वास्तव में यदि इस शास्त्र का सदुपयोग कियाजाय तो सँसार का महान् उपकार होसक्ता है। तन्त्र शास्त्र में कामरत्न तन्त्र भी एक प्रधान तन्त्र है, इस तन्त्र में वह २ लटके हैं जिससे प्रत्येक मनुष्य का महान् उपकार होसक्ता है। अतएव इसको अत्युत्तम जानकर भाषा टीका किया। फिर यह विचार किया कि इस अनुपम ग्रन्थ को किस महोपकारी सज्जन की सेवा में अर्पित करूँ जो मुद्रित करके प्रकाशित करे। इस विचारही में था कि इतने में मेडिकल यन्त्र कानपुर के सत्वाधिकारी ब्रह्मकुलभूषण सत्यसिन्धु के प्रकाशक पँ० हरिहरप्रसाद जी पाठक ने अपनी इच्छा इसके मुद्रित करने को प्रगट की। मैंने

अहोभाग्य जानकर इस कामरत्न पुस्तक को इन महाशय की सेवा में अधिकार के साथ समर्पण किया। इन महाशय को कोटि २ धन्यवाद दियाजाता है, यदि इनका अपार अनुग्रह मुझ पर न होता, तो अभी तक इस ग्रन्थ को आप लोग न देख सकते।

तन्त्र शास्त्र के देखने से ज्ञात हुआ कि कामरत्न तन्त्र नामक दो पुस्तक हैं, एक नित्यनाथ विरचित और दूसरा नागभट्ट विरचित है। अतएव प्रस्तुत पुस्तक नागभट्ट का ही बनाया हुआ है। दूसरे तन्त्र का कहीं पता नहीं लगता।

यदि आप लोगों ने उत्साह दिखाया तो बहुत शीघ्र कोई दूसरा पुस्तक लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हूँगा।

मोहल्ला गुलाबनगर (बांस) बरेली

भवतां कृपाभिलाषी
पण्डित बांकेलालात्मज
श्यामसुन्दर शर्मा

Obedient servant
SHYAM SUNDER SHARMA
Mohalla Gulab Nagar,
Bareilly O. & R. R.

॥ श्रीः ॥

॥ कामरत्न तन्त्रम् ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥

॥ अथ मङ्गलाचरणम् ॥

यस्येश्वरस्यविमलं चरणारविन्दं,
संसेव्यतेविबुधसिद्ध मधुव्रतेन ।
निर्म्माणशातकगुणाष्टकवर्गपूर्णं,
तंशङ्करंसकलदुःखहरं नमामि ॥१॥

देवतागण और सिद्धगण मधुकर रूप से जिनके अमल चरण कमलों की सेवा करते रहते हैं, जो सम्पूर्ण सृष्टि के सँहार, गुण, ध्यान, धारणादि अष्टाङ्ग योग और धर्म्मादि चार बर्ग में बिराजित हैं; उन्हीं सम्पूर्ण दुःखनाशक शङ्कर को नमस्कार है ॥१॥

अथ ग्रन्थोक्त विषय निरूपणम्

॥ श्रीनागभट्ट उवाच ॥

कामतन्त्रमिदंचित्रं नामशुश्रावयेन्मया ।
वश्यादियक्षिणीमन्त्र साधनान्तंसमुद्धृतम् ॥२॥

महा सिद्ध योगी नागभट्ट ग्रन्थ के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण करके ग्रन्थोक्त विषय का आदि और अन्त निरूपण करते हैं–मैं विचित्र कामतन्त्र प्रकाशित करता हूँ, श्रवण करो। इसमें पहले वशीकरण तत्व और अन्त में यक्षिणी साधन तत्व वर्णित है ॥२॥

अथ षट्कर्म्म निरूपणम्

शान्तिवश्यस्तम्भनानि द्वेषणोच्चाटनेतथा ।
मारणान्तानिशंसन्ति षट्कर्म्माणिमनीषिणः॥३॥

शान्ति कर्म्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, और मारण इन छैः प्रकार के कर्मों का नामही षट्कर्म है ॥३॥

अथ षट्कर्म्माणां ऋतु निर्णयः

वश्याकर्षणकर्म्माणि वसन्तेसाधयेत्प्रिये ।

ग्रीष्मेविद्वेषणंकुर्य्यात् प्रावृषिस्तम्भनंतथा ॥
शिशिरेमारणञ्चैव शान्तिकंशरदिस्मृतम् ।
उच्चाटनंहेमन्तेच षट्कर्म्माणिविशारदः ॥५॥

षट्कर्म्म विशारद पुरुष गण वसन्त काल मेँ वशीकरण और आकर्षण, ग्रीष्म काल में विद्वेषण वर्षा काल मेँ स्तम्भन शीत काल मेँ मारण शरद् काल में शान्ति कर्म्म और हेमन्त काल मेँ उच्चाटन क्रिया को करैं ॥४॥ ॥५॥

वसन्तश्चैवपूर्व्वाह्ने ग्रीष्मोमध्याह्नउच्यते ।
वर्षाज्ञेयापराह्नेतु प्रदोषेशिशिरःस्मृतः ॥६॥
अर्द्धरात्रौ शरत्काल ऊषाहेमन्त उच्यते ।
ऋतवःकथिताह्येते शास्त्रज्ञैःपूर्व्वसूरिभिः ॥७॥

दिन का पूर्व भाग वसन्त, मध्याह्न ग्रीष्म, अपराह्न वर्षा, प्रदोष शिशिर, आधीरात शरत्, और ऊषा (प्रातः) हेमन्त जानना चाहिये । नित्य इस प्रकार (६) छैः ऋतु उदय होती हैं इस प्रकार दिनमेँ सब ऋतुओं से ज्ञात होकर जिस समय जो ऋतु उदय हो, उस समय मेँ उसी ऋतु विहित कार्य्य का अनुष्ठान करना कर्त्तव्य है । शास्त्रवित् पूर्व पण्डित गण इस प्रकार कहगये हैं ॥६॥ ॥७॥

॥ तद्विहीनानसिध्यन्ति प्रयत्नेनापिकुर्व्वतः ।
अनन्यकरणात्तेहि ध्रुवंसिध्यन्तिनान्यथा ॥८॥

दिन में किस समय कौन ऋतु उदय होती है इसको न जानकर बहुत यत्न से षट्कर्म्म करने पर भी सिद्धि लाभ होने की सम्भावना नहीं है। इसलिये जिस जिस समय जिस २ क्रिया का अनुष्ठान करना कर्त्तव्य है, उसी समय उस क्रिया का अनुष्ठान करने से ही सिद्धि लाभ होती है ॥८॥

इति षट्कर्म्म की ऋतु निर्णय समाप्त।

अथ षट्कर्माणां तिथि निर्णयः

वशीकरण कर्म्माणि सप्तम्यांकारयेद्बुधः ।
तृतीयायांत्रयोदश्यां तथाकर्षणकर्म्मंच ॥९॥
उच्चाटनंद्वितीयायां षष्ठ्यांञ्चैवप्रसाधयेत् ।
स्तम्भनञ्चचतुर्दश्यां चतुर्थ्यांप्रतिपद्यपि ॥१०॥
मोहनत्तनवम्याञ्च तथाष्टम्यांप्रयोजयेत् ।
द्वादश्यांमारणंशस्त मेकादश्यांतथैवच ॥११॥
पञ्चम्यांपौर्णमास्याञ्च योजयेच्छांतिकादिकम् ।
सर्व्वविद्याप्रसिद्धार्थ तिथयःकथिताःक्रमात् ॥१२॥

षट् कर्म्म के मध्य में कौन तिथि में कौन कर्म्म करना कर्त्तव्य है, वही लिखते हैं--वशीकरण सप्तमी में, आकर्षण तृतीया अथवा त्रयोदशी में, उच्चाटन द्वितीया अथवा षष्ठी में, स्तम्भन प्रतिपदा चतुर्थी अथवा चतुर्दशी में, मोहन अष्टमी अथवा नवमी में और मारण कर्म्म दशमी, एकादशी, पूर्णिमा अथवा पञ्चमी में करे। सम्पूर्ण विद्या सिद्ध होने के अर्थ इस प्रकार तिथि निरूपण है ॥९॥ ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥

इति षट् कर्म्म की तिथि निर्णय समाप्त।

अथ षटकर्म्माणां माहेन्द्रादि निर्णयः

स्तम्भनंमोहनञ्चैव वशीकरणमुत्तमम्।
माहेन्द्रेवारुणेचैव कर्त्तव्यमिहसिद्धिदम् ॥१३॥
विद्वेषोच्चाटनेवह्नि वायुयोगेनकारयेत्।
ज्येष्ठाचैवोत्तराषाढ़ा अनुराधाचरोहिणी।
माहेन्द्रमण्डलस्थाच प्रोक्तकर्म्मप्रसिद्धदा॥१४॥
स्यादुत्तरपदामूला ऋक्षेशतभिषातथा।
पूर्वाभाद्रपरश्लेषा ज्ञेयावारुणमध्यगाः ॥१५॥

पूर्व्वाषाढ़ाततःकर्म्म सिद्धिदाशम्भुनास्मृता ।
स्वातीहस्तामृगशिरा आर्द्राचोत्तरफाल्गुणी ॥१६॥
पुष्यापुनर्व्वसुर्नाम्नि मण्डलस्थाप्रकीर्त्तिता ।
अश्विनीभरणीचित्रा धनिष्ठाश्रवणामघा ॥१७॥
विशाखाकृत्तिकापूर्व्वं फाल्गुणीरेवतीतथा ।
वायुमण्डलमध्यस्था तत्तत्कर्म्मप्रसिद्धिदा ॥१८॥

माहेन्द्रादि योग में वशीकरणादि कर्म्म करना होता है स्तम्भन, मोहन और वशीकरण कर्म्म जलतत्व के उदय होने पर, विद्वेषण वह्नि तत्व के उदय होनेपर और उच्चाटन वायु तत्व के उदय होने पर करें। ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़, अनुराधा, और रोहिणी इन सब नक्षत्रों को पृथ्वी तत्व, उत्तरा भाद्रपद, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद और अश्लेषा इन सब नक्षत्रों को जल तत्व, पूर्व्वाषाढ़, स्वाती, मृगशिरा, आर्द्रा, उत्तरा फाल्गुणी, पुष्य और पुनर्व्वसु इन सब नक्षत्रों को वह्नि तत्व, और अश्विनी, भरणी, चित्रा, धनिष्ठा, श्रवण, मघा, विशाखा, कृत्तिका, पूर्व्वा फाल्गुणी और रेवती इन सब नक्षत्रों को वायु तत्व जानें ॥१३॥ ॥१८॥

इति षट्कर्म्मणां माहेन्द्रादि निर्णय समाप्त ।

अथ षट्कर्म्मणि अंगुलि निर्णयः

शान्तिकेपौष्टिकेचैव आभिचारिककर्म्मणि।
तर्जन्यादिसमारूढं कुर्य्याद्यत्नात्क्रमंसुधीः।
तत्रांगुष्ठसमारूढा सर्व्वकर्म्मशुभेरतः॥१९॥

अँगुष्ठ और तर्जनी अँगुलि द्वारा शान्ति कार्य्य, मध्यमा और अँगुष्ठांगुली द्वारा पौष्टिक कार्य्य, अनामिका और अँगुष्ठांगुली द्वारा मारणादि सम्पूर्ण अभिचार क्रिया करनी होती हैं

इति षट्कर्म्माणि अँगुलि-निर्णय समाप्त।

अथ मूलिका ग्रहण विधिः

विधिमन्त्रसमायुक्त मौषधंसफलंभवेत्।
विधिमन्त्रविहीनन्तु काष्ठवद्धेषजंभवेत्॥२०॥

औषधि यथाविधि मस्तुत और मन्त्र समन्वित होने पर ही फलदायक होती है। किन्तु विधि मन्त्र विहीन होने पर यह काष्ठवत् विफल होती है, जिससे किसी फल के मिलने की आशा नहीं। अर्थात् षट्कर्म्म साधनार्थ औषधि के सम्बन्ध में जो समस्त मन्त्र और जिस प्रकार नियम लिखे हैं,

मैं तुमको नमस्कार करता हूँ (यह कहकर नमस्कार करे) ॥२५॥

॥ ततः खननम् ॥

येनत्वांखनतेब्रह्मा येनत्वांखनतेभृगुः ।
येनइन्द्रोऽथवरुणो येनत्वामुपचक्रमे ॥२६॥
तेनाहंखनयिष्यामि मन्त्रपूतेनपाणिना ।
मातेपातेमानिपाति मातेभेजोऽन्यथाभवेत् ।
अत्रैवतिष्ठकल्याणि ममकार्य्यंकरीभव ॥२७॥
ॐ ह्रीं क्ष्रौं फट्स्वाहा। अनेनमूलिकांछेदयेत् ।

इसके उपरान्त मूल लिखित "येनत्वांखनतेब्रह्मा" इत्यादि मन्त्र पाठ करके वृक्ष मूल खनन करता हुआ "ॐ ह्रीं क्ष्रौं फट् स्वाहा" यह मन्त्र जपकर तरु मूल छेदन करे ॥२६॥ ॥२७॥

हेत्यवंसर्व्वविद्यानां षट्कर्म्माणांसुसिद्धये ।
कथितश्चात्रयत्नेन मूलिकाग्रहणंशुभं ॥२८॥

इस प्रकार जिस भांति से षट्कर्म्म और अन्यान्य विद्या साधने के लिये मूलिका ग्रहण करनी होती है वह लिखागया ॥

इति मूलिका ग्रहण विधि समाप्त ।

पुत्र, क्या मित्र, क्या राजा, क्या बन्धु बान्धव सभी वशीभूत होते हैं यह मन्त्र सिद्धियोग कहागया है ॥१॥२॥३॥४॥

उोंनमःकटविकट घोररूपिणिस्वाहा।
सप्ताभिमन्त्रितंचान्नं भुक्तेसप्तग्रासंयदि ।
प्रत्यहंयस्यनाम्नातु वशीभवतिसध्रुवम् ॥५॥

प्रतिदिन "उोंनमःकटविकटघोररूपिणिस्वाहा" इस मन्त्र द्वारा सप्त ग्रास अन्न अभिमन्त्रित करके जिसका नाम उच्चारण कर भक्षण कियाजाय, वह व्यक्ति निस्सन्देह वशीभूत होता है ॥५॥

उों वश्यमुखीराजमुखी स्वाहा।
वशीभवन्तिसर्व्वेतु सप्ताभिक्षालितेमुखे।
सर्व्वेषुवश्यमन्त्रेषु मन्त्रराजमिदंस्मृतम् ॥६॥

प्रतिदिन "उोंवश्यमुखीराजमुखीस्वाहा" यह मन्त्र पढ़कर सातवार मुख धोने से उसके निकट सभी वशीभूत होते हैं ॥६॥

उोंचामुण्डेजयजयस्तम्भयस्तम्भयमोहयमोहय
सर्व्वसत्वान्नमः स्वाहा ॥

मन्त्रेणमन्त्रितंपुष्पं यस्मैकस्मैप्रदीयते ।
राजावाराजपुत्रोवा वशीभवतिनिश्चितम् ॥७॥

"ॐचामुण्डेजयजय" इत्यादि मन्त्र द्वारा पुष्प अभिमन्त्रित करके वह पुष्प जिसके हाथ में दियाजाय, वह व्यक्ति राजा अथवा राजपुत्र होनेपर भी वशीभूत होगा, सन्देह नहीं ॥७॥

ॐनमःकोदण्डशरविज्ञालिनीमालिनीसर्व्व-
लोकवशङ्करीस्वाहा ॥

अष्टोत्तरसहस्रन्तु जप्त्वामन्त्रंप्रसन्नधीः ।
अपामार्गस्यमूलंवै गोरोचनसमन्वितम् ॥८॥
संपिष्यतिलकंधृत्वा त्रिलोकंवशमानयेत् ॥९॥

ऊपर कहा हुवा "ॐनमःकोदण्ड" अष्टोत्तर सहस्र जप करके चिरचिटे की जड़ और गोरोचन एकत्र पीसकर उसका ललाट में तिलक लगाने से तीनोंलोक वश में करसक्ता है ॥

अष्टम्यामसितेपक्षे निराहारोजितेन्द्रियः ।
चतुर्द्दश्यांवलिंदत्वा दण्डोत्पलंसमाहरेत् ॥१०॥
संपिष्यताम्बुलेकृत्वा यस्मैकस्मैप्रदीयते ।
सहस्रंमन्त्रितंमन्त्रे वशीभवतिनिश्चितम् ॥११॥

मन्त्रो । यथा-ॐनमोभगवतिमातंगेश्वरिसर्व्व मुखरञ्जेसर्व्वेषांमहामायेमातंगेकुमारिके । लह लहजिह्वेसर्व्वलोकवशङ्करी स्वाहा ।

कृष्णपक्ष की अष्टमी वा चतुर्दशी (चौदस) तिथि में निराहार और जितेन्द्रिय होकर दण्डोत्पल की जड़ उखाड़े। फिर यह जड़ पीस ताम्बूल (पान) में रखकर जिसको भक्षण करने के लिये दियाजाय, वह व्यक्ति वशीभूत होता है। उक्त पिष्ट द्रव्य उपरोक्त "ॐनमः भगवति" इत्यादि मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करलेना होता है ॥१०॥११॥

दण्डोत्पलमूलंनीत्वा कटौबद्धाप्रयत्नतः ।
मन्त्रमुच्चार्य्यपूर्व्वोक्तं नारींगच्छतियोनरः ॥१२॥
सावश्यंवशगानित्यं दासीवत्नात्रसंशयः ।

दण्डोत्पल की जड़ उखाड़ यत्न सहित कमर में बांधकर पूर्वोक्त मन्त्र पाठ करता हुआ जो व्यक्ति स्त्री के समीप जाय वह नारी उसके निकट दासी की समान वशीभूत होती है, इसमें संशय नहीं है ॥१२॥

श्वेतापराजितामूलं ग्रहणोतुचन्द्रस्यच ।

वत् उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर भक्षणार्थ जिसको दि-याजाय, वही व्यक्ति वशीभूत होता है ॥१६॥

नासानेत्रमलंपाद -मलंगुवाकमिश्रितम् ।
मन्त्रितंदीयतेयस्मै वशीभवतिनिश्चितम् ।

अपनी नासिका का मैल, नेत्र का मैल, और पांव का मैल ग्रहण पूर्वक सुपारी के सङ्ग पीसकर मिश्रित करै। तिस पीछे "ॐपिङ्गलायैस्वाहा" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जिसको भक्षण करने के लिये दियाजाय, वह व्यक्ति निस्सन्देह वशीभूत होगा ॥१७॥

इन्दीवरमूलंपिष्ट्वा गोरोचनसमन्वितम् ।
सहस्रंमन्त्रितंतत्तु तेनाञ्जयेन्नेत्रयुग्मकम् ॥१८॥
सर्व्वेषांप्रियएवासौ त्रिलोकंवशमानयेत् ।
मन्त्रस्तुपूर्व्ववत् ।

कमल की जड़ और गोरोचन एकत्र पीसकर पूर्व्वोक्त "ॐपिङ्गलायैस्वाहा" इस मन्त्र से सहस्रवार अभिमन्त्रित करके उसके द्वारा दोनों नेत्रों में अञ्जन लगावे। तो वह व्यक्ति सब का प्रिय और त्रिभुवन उसके निकट वशीभूत होता है ॥१८॥ ॥१९॥

रोहिण्यांवटवृन्दाकं संग्रह्यधारयेत्करे ।
वश्यंकरोतिसकलं विश्वामित्रेणभाषितम् ॥२०॥

रोहिणी नक्षत्र में वट वृक्ष का वृन्दा (बन्दा) लेकर हाथ में रखने से सभी उसके वशीभूत होते हैं, विश्वामित्र इसको कहगये हैं ॥२०॥

इति सर्वजन वशीकरण समाप्त।

॥ अथ राज वशीकरणम् ॥

ॐह्रींसःअमुकंमेवशमानाय स्वाहा ।

पूर्व्वमेवसहस्रंजप्त्वाततोहनेनमन्त्रेणसप्ताभिमन्त्रितंकुंकुमचन्दनगोरोचनकर्पूरकृतंतिलकंकार्यम्।

यह मन्त्र प्रथम सहस्रवार जप करके फिर सातवार उसको पढ़कर रोली, चन्दन, गोरोचन और कपूर यह सब द्रव्य गाय के दूध में पीसकर कपाल में तिलक लगाने से उसके निकट राजा वशीभूत होगा ॥१॥

इति राज वशीकरण समाप्त।

वत् उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर भक्षणार्थ, जिसको दिया जाय, वही व्यक्ति वशीभूत होता है ॥१६॥

नासानेत्रमलंपाद -मलंगुवाकमिश्रितम् ।
मन्त्रितंदीयतेयस्मै वशीभवतिनिश्चितम् ॥१७॥

अपनी नासिका का मैल, नेत्र का मैल, और पांव का मैल ग्रहण पूर्वक सुपारी के सङ्ग पीसकर मिश्रित करै। तिस पीछे "ओंपिङ्गलायैस्वाहा" इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसको भक्षण करने के लिये दियाजाय, वह व्यक्ति निस्सन्देह वशीभूत होगा ॥१७॥

इन्दीवरमूलंपिष्ट्वा गोरोचनसमन्वितम् ।
सहस्रंमन्त्रितंतत्तु तेनाञ्जयेन्नेत्रयुग्मकम् ॥१८॥
सर्व्वेषांप्रियएवासौ त्रिलोकंवशमानयेत् ।
मन्त्रस्तुपूर्व्ववत् ।

कमल की जड़ और गोरोचन एकत्र पीसकर पूर्व्ववत् "ओंपिङ्गलायैस्वाहा" इस मन्त्र से सहस्रवार अभिमन्त्रित करके उसके द्वारा दोनों नेत्रों में अञ्जन लगावे। तो वह व्यक्ति सब का प्रिय और त्रिभुवन उसके निकट वशीभूत होता है ॥१८॥ ॥१९॥

रोहिण्यांवटवृन्दाकं संग्रह्यधारयेत्करे ।
वश्यंकरोतिसकलंविश्वामित्रेणभाषितम् ॥२०॥

रोहिणी नक्षत्र में वट वृक्ष का छन्दा (वन्दा) लेकर हाथ में रखने से सभी उसके वशीभूत होते हैं, विश्वामित्र इसको कहगये हैं ॥२०॥

इति सर्वजन वशीकरण समाप्त।

॥ अथ राज वशीकरणम् ॥

ॐह्रींसःअमुकंमेवशमानाय स्वाहा ।

पूर्व्वमेवसहस्रंजप्त्वाततोह्नेनमन्त्रेणसप्ताभिमन्त्रितंकुंकुमचन्दनगोरोचनकर्पूरकृतंतिलकंकार्य्यम्।

यह मन्त्र प्रथम सहस्रवार जप करके फिर सातवार उसको पढ़कर रोली, चन्दन, गोरोचन और कपूर यह सब द्रव्य गाय के दूध में पीसकर कपाल में तिलक लगाने से उसके निकट राजा वशीभूत होगा ॥१॥

इति राज वशीकरण समाप्त।

॥ अथ दुष्टा स्त्री वशीकरणम् ॥

काकजङ्घावचाकुष्ठं शुक्रश्रोणितमिश्रितम् ।
लब्धस्तेभोजनेबाला श्मशानेरोदतिसदा ॥२॥
ऊँनमोभगवतेरुद्राय ऊँचामुण्डेअमुकीं मेवश
मानय स्वाहा ।

भार्या दुष्ट होनेपर स्वामी यह मन्त्र पाठ पूर्वक वच व कूट ** और रुधिर में मिलाय कर दुष्टा स्त्री के हाथ में देने से वह नारी जीवन पर्यन्त पति के इस प्रकार वश में होगी कि स्वामी के मरजाने पर भी वह श्मशान में उसके लिये निरन्तर रुदन करती फिरैगी। उक्त द्रव्य अर्पण करने के समय "ऊँनमः" इत्यादि मन्त्र पाठ करलेना चाहिये ॥२॥

कृष्णधुस्तूरजंपुष्पं पुष्येसंग्रहायसतः ।
भरण्यांफलमानीय विशाखायांशाखान्तथा ॥३॥
हस्तायांपत्रमायह्य मूलायामलमेवच ।
समंगोरोचनंदत्त्वा समंकपूरकुंकुमौ ॥४॥
तिलकंतेलकृत्वातु कुलटांवशमानयेत् ॥५॥

पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे के पुष्प, भरणी नक्षत्र में फल विशाखा नक्षत्र में शाखा, हस्त नक्षत्र में पत्ते और मूल नक्षत्र में जड़ लाय सम परिमाण कपूर, रोली और गोरोचन सहित यह सब द्रव्य एकत्र मर्दन करके यदि ललाट में तिलक लगाया जाय, तो उसको स्त्री कुल्टा होनेपर भी अवश्य वशीभूत होती है ॥३॥ ॥४॥ ॥५॥

प्रातर्मुखन्तुप्रक्षाल्य सप्तवाराभिमन्त्रितम् ।
यस्यनाम्नापिवेत्तोयं सास्त्रीवश्याभवेद्ध्रुवम् ॥६॥

ऊँनमः क्षिप्रकर्म्मणि अमुकींमेवशमानय स्वाहा ।

प्रातःकाल उठकर मुख धोने के उपरान्त जो स्वामी अपनी कुल्टा भार्य्या का नाम उच्चारण कर उक्त मन्त्र से सात घूँट जल मन्त्रित कर पान करे, वह अपनी पत्नी को वशीभूत कर सकता है ॥६॥

कृष्णापराजितामूलं ताम्बूलेनसमायुतम् ।
अवश्यायेस्त्रियेदद्यात् वश्याभवतिनान्यथा ॥७॥

अं ह्वं स्वाहा ।

काली विष्णुकान्ता की जड़ ताम्बूल के सङ्ग मिलाकर

"ॐ हुं स्वाहा" इस मन्त्र से मन्त्रित करके दुष्टा स्त्री को भक्षण करादेने से वह निस्सन्देह पति के वश में होगी ॥७॥

स्वनाम्नासहितंपत्नी नाममुच्चार्य्ययत्नतः ।
सप्ताभिमन्त्रितंपुष्पं भार्य्यायैप्रददेद्यदि ॥८॥
वशीभवतिसाभार्य्या नात्रकार्य्याविचारणा ॥९॥
ऊँ हुं स्वाहा ।

अपने नाम सहित पत्नी का नाम उच्चारण करके एक पुष्प "ऊँ हुं स्वाहा" इस मन्त्र से सातवार मन्त्रित करके अपनी उस भार्य्या के हाथ में देने से वह निश्चय वशीभूत होगी ।

पानीयस्याञ्जलीनसप्त दत्वाविद्यामिमांजपेत् ।
सालङ्कारानरःकन्यां लभतेनात्रसंशयः ॥१०॥
ऊँविश्वावसुर्णामगन्धर्व्वःकन्यानामधिपतिःसुरूपांसालङ्कारांदेहिमेनमस्तस्मैविश्वावसवेस्वाहा ।

"ऊँविश्वावसुर्नाम" इत्यादि मन्त्र जप करके सात अँजुलि जल प्रदान करने से पुरुष विभूषिता कन्या लाभ करता है, इसमें संशय नहीं ॥१०॥

गोरोचनकुंकुमाभ्यां भूर्जेयस्यानामाभिलिख्य

का लिङ्ग स्पर्श करती है, वह अपने पति को दास की समान वशीभूत करने में समर्थ होती है ॥४॥

इति पति वशीकरण समाप्त ।

॥ अथ आकर्षण प्रकरणम् ॥

चतुर्थवर्णमाकृष्टा द्वितीयवर्गसंस्थितम् ।
कृत्वात्रिविधहाहान्तं तदन्तेहद्वितीयकम् ॥१॥
अङ्कारंशिरसंकृत्वा प्रत्यक्षरप्रजापनम् ।
सहस्रार्द्धस्यजापेन फलंभवतिशाश्वतम् ॥२॥

मन्त्रः । झां झां झां हां हां हां हें हें ।

मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावराजङ्गमाश्चैव आकृष्टास्तेवराङ्गने ॥३॥

"झां झां झां हां हां हां हें हें" इत्यादि का नामही आकर्षण मन्त्र है । मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, नाग, राक्षस, और स्थावर, जङ्गम सभी इस मन्त्र से आकर्षित होते हैं । पांच सत (५००) वार जप करने से सिद्ध होती है ॥१॥२॥३॥

"ॐ हुँ स्वाहा" इस मन्त्र से मन्त्रित करके दुष्टा स्त्री को भक्षण करादेने से वह निस्सन्देह पति के वश में होगी ॥७॥

स्वनाम्नासहितंपत्नी नामउच्चार्य्ययत्नतः ।
सप्ताभिमन्त्रितंपुष्पं भार्य्यायैप्रददेद्यदि ॥८॥
वशीभवतिसाभार्य्या नात्रकार्य्याविचारणा ॥९॥
ॐ हुं स्वाहा ।

अपने नाम सहित पत्नी का नाम उच्चारण करके एक पुष्प "ॐ हुँ स्वाहा" इस मन्त्र से सातवार मन्त्रित करके अपनी उस भार्य्या के हाथ में देने से वह निश्चय वशीभूत होगी ।

पानीयस्याञ्जलीनसप्त दत्वाविद्यामिमांजपेत् ।
सालङ्कारानरःकन्यां लभतेनात्रसंशयः ॥१०॥
ॐविश्वावसुर्नामगन्धर्वःकन्यानामधिपतिःसु-
रूपांसालङ्कारांदेहिमेनमस्तस्मैविश्ववसवेस्वाहा ।

"ॐविश्वावसुनाम" इत्यादि मन्त्र जप करके सात अँजुलि जल प्रदान करने से पुरुष विभूषिता कन्या लाभ करता है, इसमें सँशय नहीं ॥१०॥

गोरोचनकुंकुमाभ्यां भूर्जेयस्यानामाभिलिख्य

का लिङ्ग स्पर्श करती है, वह अपने पति को दास की समान वशीभूत करने में समर्थ होती है ॥४॥

इति पति वशीकरण समाप्त ।

॥ अथ आकर्षण प्रकरणम् ॥

चतुर्थवर्णमाकृष्टा द्वितीयवर्गसंस्थितम् ।
कृत्वात्रिविधहाहान्तं तदन्तेहेद्वितीयकम् ॥१॥
अङ्कारंशिरसंकृत्वा प्रत्यक्षरप्रजापनम् ।
सहस्त्रार्द्धस्यजापेन फलंभवतिशाश्वतम् ॥२॥

मन्त्रः । झां झां झां हां हां हां हें हें ।

मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावराजङ्गमाश्चैव आकृष्टास्तेवराङ्गने ॥३॥

"झां झां झां हां हां हां हें हें" इत्यादि का नामही आकर्षण मन्त्र है। मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, नाग, राक्षस, और स्थावर, जङ्गम सभी इस मन्त्र से आकर्षित होते हैं। पांच सत (५००) बार जप करने से सिद्ध होती है ।१।२।३।

दाड़िम की जड़, छाल, पत्ते, कई फल लेकर सफेद सरसों के सङ्ग मर्दन पूर्वक "ओंकाममालिनी" इत्यादि मन्त्र से सातबार अभिमन्त्रित कर स्त्री योनि में लेपन करने से पति को दास को समान वशीभूत करने में समर्थ होती है॥

गोरोचनानलदकुंकुमभावितायाः।
तस्याःसदैवकुरुते तिलकंवशित्वम् ॥२॥
वात्स्यायनेनबहुधा प्रमदाजनानां।
सौभाग्यकृत्यसमये प्रकटीकृतोऽसौ ॥३॥

वात्स्यायन नामक ऋषि ने कहा है कि गोरोचन, खस की जड़ और रोली यह कई वस्तु एकत्र मर्दन करके उसका तिलक लगाने से पति दास की समान वशीभूत होता है॥

सम्भोगशेषसमये निजकान्तमेढ्रं।
याकामिनीस्पृशतिबाम पदाम्बुजेन॥४॥
तस्याःपतिःसपदि विन्दतिदासभावं।
गोणीसुतेनकथितः किलयोगराजः॥५॥

जो नारी सम्भोग शेष होने के समय बांये चरण से पति

का लिङ्ग स्पर्श करती है, वह अपने पति को दास की समान वशीभूत करने में समर्थ होती है ॥४॥

इति पति वशीकरण समाप्त ।

॥ अथ आकर्षण प्रकरणम् ॥

चतुर्थवर्णमाकृष्टा द्वितीयवर्गसंस्थितम् ।
कृत्वात्रिविधहाहान्तं तदन्तेहे द्वितीयकम् ॥१॥
अङ्कारंशिरसंकृत्वा प्रत्यक्षरप्रजापनम् ।
सहस्त्रार्द्धस्यजापेन फलंभवतिशाश्वतम् ॥२॥

मन्त्रः । झां झां झां हां हां हां हें हें ।

मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावराजङ्गमाश्चैव आकृष्टास्तेवराङ्गने ॥३॥

"झां झां झां हां हां हां हें हें" इत्यादि का नामही आकर्षण मन्त्र है । मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, नाग, राक्षस, और स्थावर, जङ्गम सभी इस मन्त्र से आकर्षित होते हैं । पांच सत (५००) बार जप करने से सिद्ध होती है ।१।।२।।३।

गृहीत्वार्जुनवन्दाकम् श्लेषायांप्रयत्नतः ।
अजामूत्रेणसम्पिष्टा निक्षिपेत्यस्यमस्तके ॥४॥
नारीवापुरुषोवापि सुतोवापशुरेवच ।
आकृष्टःस्वयमायाति सत्यंसत्यंवदाम्यहं ॥५॥

अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष की जड़ लाकर बकरी के मूत्र में मर्दन करै। अनन्तर यह द्रव्य जिस नारी वा पुरुष अथवा जिस किसी पशु के मस्तक पर निक्षेप कियाजाय वह निस्सन्देह आकर्षित होगा ॥४॥ ॥५॥

सूर्यावर्त्तस्यमूलन्तु पञ्चम्यांग्राहयेद्बुधः ।
ताम्बूलेनसमंदद्यात् स्वयमायातिभक्षणात् ॥६॥

हुड़हुड़िया की जड़ पञ्चमी तिथि में ग्रहण कर पान के सङ्ग जिस नारी को भक्षण करा दीजाय, वह स्वयं आकर्षित होकर आगमन करेगी । इसमें सन्देह नहीं ॥६॥

इति आकर्षण प्रकरण समाप्त ।

॥ अथ सौभाग्य विधानम् ॥

पुष्योधृतंसितार्कस्य मूलंवामेतरेभुजे ।

लोध, नीम के पत्ते और हरीतकी (हर्र) यह सब द्रव्य पीसकर गात्र में लेप करने से शीघ्र दुर्गन्ध का नाश होता है ॥

इति स्वेद-रञ्जन-विधानम् ।

अथ मुख रंजन विधानम्

पिप्पलीचूर्णमादाय घृतमधुसमन्वितम् ।
प्रभातेभक्षणाच्चैव सुगन्धोजायतेमुखे ॥१२॥

पीपल का चूरा, घी और शहत एकत्र मिश्रित कर प्रतिदिन प्रातःकाल भक्षण करने से मुख में सुगन्ध उत्पन्न होती है ।

मधुमांसीवचाकुष्ठं नागकेशरमेवच ।
संचूर्ण्य रमणीयाच्च प्रातेवासन्ध्ययामपि ॥१३।
लिह्यात्तस्यामुखंशीघ्रं भवेत्कर्पूरवासितम् ।

वच, कूट और नागकेशर यह सब द्रव्य एकत्र चूर्ण करके वह द्रव्य जो नारी प्रतिदिन प्रातःकाल और सन्ध्या समय में चाटे, उसके मुख में कपूर की समान सुगन्ध उत्पन्न होती है ॥१३॥

आम्रास्थिपद्ममूलञ्च पिष्ट्वामधुसमन्वितम् ।

लोध, नीम के पत्ते और हरीतकी (हर्र) यह सब द्रव्य पीसकर गात्र में लेप करने से शीघ्र दुर्गन्ध का नाश होता है ॥

इति मेद-रञ्जन विधानम् ।

अथ मुख रंजन विधानम्

पिप्पलीचूर्णमादाय घृतमधुसमन्वितम् ।
प्रभातेभक्षणाच्चैव सुगन्धोजायतेमुखे ॥१२॥

पीपल का चूरा, घी और शहत एकत्र मिश्रित कर प्रति दिन प्रातःकाल भक्षण करने से मुख में सुगन्ध उत्पन्न होती है।

मुरामांसीवचाकुष्ठं नागकेशरमेवच ।
संचूर्ण्य रमणीयाच प्रातेवासन्ध्ययामपि ॥१३।
लिह्यात्तस्यामुखंशीघ्रं भवेत्कर्पूरवासितम् ।

वच, कूट और नागकेशर यह सब द्रव्य एकत्र चूर्ण करके यह द्रव्य जो नारी प्रतिदिन प्रातःकाल और सन्ध्या समय में चाटे, उसके मुख में कपूर के समान सुगन्ध उत्पन्न होती है ॥१३॥

आम्रास्थिपद्ममूलञ्च पिष्ट्वामधुसमन्वितम् ।

लोध, नीम के पत्ते और हरीतकी (हर्र) यह सब द्रव्य पीसकर गात्र में लेप करने से शीघ्र दुर्गन्ध का नाश होता है॥

इति देह रञ्जन विधानम् ।

अथ मुख रंजन विधानम्

पिप्पलीचूर्णमादाय घृतमधुसमन्वितम् ।
प्रभातेभक्षणाच्चैव सुगन्धोजायतेमुखे ॥१२॥

पीपल का चूरा, घी और शहत एकत्र मिश्रित कर प्रतिदिन प्रातःकाल भक्षण करने से मुख में सुगन्ध उत्पन्न होती है।

वचामांसीवचाकुष्ठं नागकेशरमेव च ।
संचूर्ण्य रमणीयाच प्रातेवासन्ध्ययामपि ।१३।
लिह्यात्तस्यामुखंशीघ्रं भवेत्कर्पूरवासितम् ।

वच, कूट और नागकेशर यह सब द्रव्य एकत्र चूर्ण करके वह द्रव्य जो नारी प्रतिदिन प्रातःकाल और सन्ध्या समय में चाटे, उसके मुख में कपूर की समान सुगन्ध उत्पन्न होती है ॥१३॥

आम्रास्थिपद्ममूलञ्च पिष्ठामधुसमन्वितम् ।

अथ केश कृष्णी करण विधानम्

स्रग्गन्धधूपाम्बर भूषणानां
नशोभतेशुक्ल शिरोरुहाणाम् ।
यस्मादतोमूर्द्धज रागसेवां
कुर्य्यादयथैवाञ्जन भूषणानाम् ॥१७॥

जिन सब मनुष्यों के मस्तक के बाल सफेद होगये हैं, उनको केश रञ्जन करना कर्त्तव्य है, नहीं तो भूषण अञ्जनादि अङ्गराग की कुछ भी शोभा नहीं होती है ॥१७॥

त्रिफलालोहचूर्णञ्च इक्षुभृङ्गरसस्तथा ।
कृष्णमृत्तिकयासार्द्धं भाण्डेमासंनिरोधयेत् १८
तल्लेपाद्रञ्जतेकेशान् चतुर्मासंस्थिरोभवेत् ।

त्रिफला, लोहचूर, ईख का रस, भृङ्गराज का रस, यह सब सम भाग (बराबर) और सब द्रव्यों से आधी कालोमट्टी एकत्र कर एक पात्र में एक महीने तक स्थापन करे। अनन्तर उसका केशों में लेप करने से चार महीने तक बाल काले रहते हैं।

लौहकिट्टंजवापुष्पं पिष्ट्वाधात्रीफलंसमम् ।

अथ केश-कृष्णी करण विधानम्

स्रग्गन्धधूपाम्बर भूषणानां
नशोभतेशुक्ल शिरोरुहाणाम्।
यस्मादतोमूर्द्धज रागसेवां
कुर्य्यादयथैवाञ्जन भूषणानाम् ॥१७॥

जिन सब मनुष्यों के मस्तक के बाल सफेद होगये हैं, उनको केश रञ्जन करना कर्त्तव्य है, नहीं तो भूषण अञ्जनादि अङ्गराग की कुछ भी शोभा नहीं होती है ॥१७॥

त्रिफलालोहचूर्णञ्च इक्षुभृङ्गरसस्तथा।
कृष्णमृत्तिकयासार्द्धं भाण्डेमासंनिरोधयेत् ॥१८
तल्लेपाद्रञ्जतेकेशान् चतुर्मासंस्थिरोभवेत्।

त्रिफला, लोहचूर, ईख का रस, भृङ्गराज का रस, यह सब सम भाग (बराबर) और सब द्रव्यों से आधी कालीमट्टी एकत्र कर एक पात्र में एक महीने तक स्थापन करे। अनन्तर उसका केशों में लेप करने से चार महीने तक बाल काले रहते हैं।

लौहकिट्टंजवापुष्पं पिष्ट्वाधात्रीफलंसमम्।

त्रिदिनंलेपयेत्शीर्षं त्रिमासंकेशरञ्जनम् ॥१९॥

लोह किट, जवा कुसुम, आंवला यह कई द्रव्य बराबर लेकर मर्दन पूर्वक तीन दिन केशों में लेप करने से तीन महीने तक केश काले रहते हैं, इसमें सन्देह नहीं है ॥१९॥

इति केश-रञ्जन विधानम्।

अथ यूक लिख्यादि विनाश विधानम्

विडङ्गगन्धोपल कल्कयोगात्
गोमूत्रसिद्धं कटुतैलमेतत्।
अभ्यङ्गयोगेन शिरोरुहाणां
यूकादिलिख्यंप्रचयंनिहन्ति ॥२०॥

वायविडङ्ग, गन्धक, गोमूत्र यह कई वस्तु कड़वे तेल में पाक करके यदि उसको केशो में मला जाय, तो जूँ लिख्यादि (लीखें) निस्सन्देह नाश को प्राप्त होती हैं ॥२०॥

इति यूक लिख्यादि विनाश विधानम्।

अथ इन्द्र लुप्त-निवारण विधिः

जवापुष्पंसमानीय कृष्णगोमूत्रसंयुतम।

दृढ़ाभवन्तिकेशाश्च तल्लेपान्नात्रसंशयः ॥२१॥

इन्द्रलुप्त अर्थात् उन्दरी रोग होने पर मस्तक की कुछभी शोभा नहीं रहती । इसलिये केश जिसमे सुदृढ़ रहैं, वह करना सब प्रकार से कर्त्तव्य है । जवा कुसुम और काली गाय का मूत्र एकत्र मिलाय मर्दन करके उसका मस्तक में लेप करने से केश दृढ़ होते हैं, इसमें संशय नहीं है ॥२१॥

कुंकुमंमरिचञ्चैव गृहीत्वातुतमंसमम् ।
कटुतैलेनपक्वन्तु विम्बपुष्परसान्वितम् ॥२२॥
तल्लेपादचिरेणैव इन्द्रलुप्तविनाशनम् ॥२३॥

रोली और मिर्च बराबर लेकर कड़वे तेल में पाक करे, फिर उसमें कन्दरी के फूल का रस मिलाकर मस्तक में लेप करे तो इन्द्रलुप्त रोग विनाश को प्राप्त होता है ॥२२॥ ॥२३॥

गुञ्जाफलन्तुसम्पिष्य कृत्वामधुसमन्वितम् ।
तल्लेपादचिरेणैव इन्द्रलुप्तंविनश्यति ॥२४॥

चौंटली और शहद एकत्र मर्दन कर मस्तक पर लेप करने से इन्द्रलुप्त का नाश होता है ॥२४॥

जातीपुष्पंतथामूलं पिप्पलीद्विगुणातथा ।

पिष्ट्वाकृष्णगोमूत्रेण दीयतेप्रलेपोयदि ॥२५॥
पक्षाद्वासप्ताहाद्वापि इन्द्रलुप्तंविनश्यति ॥२६॥

चँवेली के फूल और चँवेली की जड़ सम भाग और इन दोनों द्रव्यों से द्विगुण (दूनी) पीपल, यह सब द्रव्य एकत्रकर काली गाय के दूध में मर्दन पूर्वक यदि उसका सप्ताह वा एक पक्ष मस्तक पर लेप कियाजाय तो इन्द्रलुप्त का नाश होता है ॥

इति इन्द्रलुप्त निवारण विधिः ।

इतिश्री माणभद्र विरचित कामरत्न तन्त्र रुहेलखण्डान्तर्गत बरेली निवासी ब्रह्मकुलभूषण पं० बांकेलालात्मज श्रीयुत पं० श्यामसुन्दर शर्म्मा विरचित भाषाटीकायां प्रथम परिच्छेद समाप्तम् ।



॥ द्वितीय परिच्छेद ॥

॥ अथ स्तम्भनम् ॥

तत्र शत्रु मुख स्तम्भनम्

मेघनादस्यमूलन्तु मुखस्थंतारवेष्टितम् ।
परवादीभवेन्मूकोऽथवायातिदिगन्तरम् ॥१॥
श्वेतगुञ्जोत्थितंमूलं मुखस्थंपरतुण्डजित् ।
ऊँह्रींरक्षचामुण्डेतुरुतुरुअमुकमेवशमानयस्वाहा ।
अयंचामुण्डामन्त्रः ।अनेकउक्तयोग-सिद्धिः ॥२॥

मूल लिखित "चों ह्रीं रक्ष" इत्यादि चामुण्डा का मन्त्र प्रथम जप पूर्वक सिद्ध करके फिर ढाक की जड़ तार वेष्टित कर मुख में रखने से शत्रु का मुख स्तम्भन होता है। अथवा शत्रु दूसरे स्थान में चलाजाता है। सफेद चौंटली की जड़ लाकर मुख में रखने से शत्रु का वाक् बन्द होता है। यह भी चामुण्डा के मन्त्र से सिद्ध करके करे ॥१॥ ॥२॥

पुष्यार्कमधुवन्दाकं गृहीत्वाप्रक्षिपेद्बुधः ।

सभामध्येचसर्व्वेषां मुखस्तम्भःप्रजायते ॥३॥

पुष्य नक्षत्र में मुलेठी का वन्दा यदि सभा में डालदिया जाय, तो सम्पूर्ण सभासदों का मुख स्तम्भन होता है ॥३॥

अर्कपत्रे हरितालरसेन यस्यनामाभिलिख्य उद्यानमध्ये ईशानकोणेस्थापयेत् तस्यमुखवन्धन स्तम्भनंभवति ॥४॥

हरिताल के रस से आक के पत्ते पर जिसका नाम लिख कर किसी बाग के ईशानकोण में स्थापन किया जाय, उसी व्यक्ति का मुख स्तम्भन होता है ॥४॥

इति मुख स्तम्भन।

अथ नौका स्तम्भनम

भरण्यांक्षीरीकाष्ठस्य कीलीपञ्चांगुलंक्षिपेत्।
नौकामध्येतदानौका स्तम्भनंजायतेध्रुवम् ॥५॥

पञ्चांगुल प्रमाण क्षीरी काष्ठ लेकर जिस नौका में डाल दियाजाय, वह नौका निस्सन्देह स्तम्भित होती है ॥५॥*

इति नौका स्तम्भन समाप्त।

* वट, पीपल, गूलर, पिलखन, मौलसिरी इन पांच वृक्षों का नाम क्षीरी वृक्ष है।

अथ अग्नि स्तम्भनम्

जप्त्वाजटींनरोदेवीं तारींमहिषमर्दिनीम्।
खदिराङ्गारमध्येतु प्रविष्टोऽसौनदह्यति ॥६॥

मन्त्रो यथा। ओं ह्रीं महिषमर्दिनीलहलहहल हल कठ कठ स्तम्भय स्तम्भय अग्निं स्वाहा।

महिष मर्दिनी का मन्त्र दश हजार जपकर खैर के अँगारों में प्रवेश करने से अग्नि स्तम्भित होता है, अर्थात् देह नहीं जलता। मन्त्र मूल मात्र लिख रहा है ॥६॥

कुमारीरसकंपिष्ट्वा लिप्तहस्तोनरोभवेत्।
दीप्ताङ्गारैस्तप्तलोहै र्म्मंत्रयुक्तेनदह्यति ॥७॥

पूर्वोक्त महिष-मर्दिनी का मन्त्र पढ़कर घीगुआर के रस का हाथ में लेप करने से जलते हुए अङ्गारे अथवा तपे हुए लोहे का दण्डा रखने पर भी हाथ नहीं जलता ॥७॥

इति अग्नि स्तम्भन।



अथ शुक्र स्तम्भनम् *

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्येनग्नःसमुद्धरेत् ।
कुटत्रयैर्गवांक्षीरैः संपिष्टागोलकीकृतम् ॥८॥
छायाशुष्कंस्थितश्चास्ये वीर्य्यस्तम्भकरंपरम् ।

पुष्य नक्षत्र में इन्द्रायन की जड़ लाकर त्रिकुटु अर्थात् सोंठ, मिर्च, पीपल सहित गाय के दूध में पीसकर गोली बनाये । यह गोली छाया में सुखानी होती हैं । इस गोली को मुख में रखने से शुक्र स्तम्भन होता है ॥८॥

नीलीमूलंश्मशानस्थं कट्यांबद्धातुवीर्य्यधृक् ॥९॥

श्मशानस्थ नीली वृक्ष की जड़ कमर में बाँधने से शुक्र स्तम्भन होता है ॥९॥

रक्तापामार्गमूलन्तु सोमवारेनिमन्त्रयेत् ।
भौमेप्रातःसमुधृत्य कट्यांबद्धातुवीर्य्यधृक् ॥१०॥

सोमवार के दिन लाल चिरचिटे की जड़ निमंत्रित करके

* सामान्य उत्तेजना से वीर्य्यपात होना एक प्रकार रोग की गणना में है । इससे मनुष्य के देह की विशेष हानि होती है । इस कारण शुक्र स्तम्भन की औषधि लिखते हैं ॥

भोमवार के दिन प्रातःकाल लाकर कमर में बांधने से शुक्र स्तम्भन होता है ॥१०॥

इति शुक्र स्तम्भन समाप्त।

॥ अथ बलाधानम् ॥

॥ तत्र श्रीमन्मदनमोदकः ॥

त्रैलोक्यविजयापत्रं सबीजंघृतभर्जितम्।
त्रिकटुत्रिफलाकुष्ठंभृङ्गंसैन्धवधान्यकम् ॥११॥
शटीतालीशपत्रञ्च कट्फलंनागकेशरम्।
अजमोदांयमानीञ्च पष्ठीमधुकमेवच ॥१२॥
मेथीजीरकपत्रञ्च गृहीत्वासमभागतः।
यावन्त्येतानिचूर्णानि तावदेवतदौषधम् ॥१३॥
समेशिलातलेपिष्ट्वा चूर्णयेदितिचिक्कणम्।
तावदेवसितादेपा यावदायातिबन्धनम् ॥१४॥
घृतेनमधुनामिश्रं मोदकंपरिकल्पयेत्।
घृतभर्जिततिलचूर्णं मोदकोपरिविन्यसेत् ॥१५॥
त्रिसुगन्धिसमायुक्तं कर्पूरेणाधिवासितम्।

स्थापयेद्घृतभाण्डेतु श्रीमन्मदनमोदकम् १६
भक्षयेत्प्रातरुत्थाय वातश्लेष्मामयापहम् ।
प्रवृद्धमग्निंकुरुते मन्दमग्निश्चदीपयेत् ॥१७॥
कृशानामतिरुक्षाणां स्नेहनंस्थौल्यकारणम् ।
कासघ्नंसर्व्वशूलघ्नं आमवातनिवारणम् ॥१८॥
सर्व्वरोगहरंह्येतत् संग्रहग्रहणीहरं ।
एतस्यसततांभ्यासात् वृद्धोऽपितरुणायते ।१९।
ब्रह्मणःप्रमुखात्श्रुत्वा वासुदेवोजगत्पति ।
एषकासस्यवृध्यर्थं नारदेनप्रकाशितः ॥२०॥
येनलक्ष्मीभुवंस्त्रीणां रेमेसयदुनन्दनः ॥२१॥

भङ्ग के पत्ते और भङ्ग के बीज एकत्र घी में भूनकर उसमें त्रिकटु (सोंठ, पीपल, मिर्च), त्रिफला, कूट, भांगरा, सैंधानमक, धनियां, कचूर, तालीशपत्र, कायफल, नागकेशर, जीरा, अजवायन, मुलेठी, मेथी, तेजपात यह सब वस्तु वरावर मिलाकर शिल पर भली भांति पीसकर सूक्ष्म चूर्ण करे। फिर यह सब चूर्ण जितना इकट्ठा हो, उतनाही बूरा (चीनी) मिलावे और उसमें घी व मधु (शहत) इतना डाले कि जिस

से लड्डू बन सकें। अनन्तर इसके आठ मासे के प्रमाण से लड्डू बनाकर इन लड्डुओं को घी में भून तिल चूर्ण मिलाय दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, का चूर्ण करके कपूर से इन लड्डुओं को सुगन्धित करे। इनका ही नाम मदनमोदक है। इनको घी के बरतन में रखवे, प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर एक एक लड्डू जल के सङ्ग सेवन करे। इनका गुण असीम है। इससे वात, श्लेष्मा ध्वंस होता है, मन्दाग्नि नष्ट करके अग्नि की वृद्धि करता है, दुबले मनुष्य का अङ्ग पुष्ट होता है और रूक्ष मनुष्य का शरीर स्निग्ध होता है। यह कास, शूल, आमवात और ग्रहणी इत्यादि रोग दूर करता है। यह महौषधि नियमानुसार सेवन करने से बृद्ध मनुष्य भी तरुण की समान होजाता है। विश्वपति वासुदेव ने ब्रह्मा जी के मुख से यह महौषधि सुनकर देवर्षि नारद को इसके प्रचार करने को अनुमति दी, तब नारद जी ने इसका सर्वत्र प्रचार किया।११।।१२।।१३।।१४।।१५।।१६।।१७।।१८।।१९।।२०।।२१।

इति बलाधान समाप्त।

अथ कृष्ण केश शुक्ली करणम्

वज्रीक्षीरेणसप्ताहं तच्छेषंभावयेत्तिलम्।

तत्तैललिप्ताःकेशाश्च शुक्लाःस्युर्नात्रसंशयः ।२२।

थूहर के दूध में सात दिन भावना दे इन तिलों का तेल निकालकर बालों में लेप करने से काले बाल सफेद होते हैं इसमें संशय नहीं है ॥२२॥

अजाक्षीरेणसप्ताहं भावयेदभयाफलम् ।
तच्चूर्णसहतैलेन लेपात्शुक्लाभवन्तिहि ॥२३॥

एक सप्ताह तक हरीतकी फल को बकरी के दूध में भावना दे सुखाकर चूर्ण करे। वही चूर्ण तेल में मिलाकर केशों में लेप करने से काले वर्ण के केश सफेद होजाते हैं। इसमें सन्देह नहीं है ॥२३॥

कुष्ठामलकचूर्णन्तु वज्रीक्षीरेणसप्तधा ।
भावयेत्तस्यलेपेन शुक्लतांयान्तिमूर्द्धनाः ॥२४॥

कूठ और आंवला यह दोनों द्रव्य समान ग्रहण पूर्वक चूर्ण करके थूहर के दूध में सात बार भावना दे। इसके पीछे यह भावित द्रव्य केशों में लेप करने से काले केश उफेद होजाते हैं ॥२४॥

इति कृष्ण केश शुक्ली करण।

॥ अथ निद्रालुकरण विधिः ॥

गुवाकंखादित्वातस्यावशिष्टंविवरंकृत्वा संप्रोथयेत् तत्रप्रस्त्रावयेत् तस्यवाटिकायांयआयाति तस्यानेननिद्राभवति ॥२५॥

एक सुपारी का कुछेक अँश भक्षण करके शेष अँश किसी घर में गढ़ा खोद मट्टी में दाब वहां पिसाब कर देने से उस स्थान में जो कोई आवैगा, वही घोर निद्रा में मग्न होजायगा, इसमें सन्देह नहीं ॥२५॥

नीलोत्पलंसमरिचं नागकेशरमूलकम् ।
घृष्येत्तदञ्जयेच्चक्षु निंद्रामाप्नोत्यसंशयः ॥२६॥

नीलोत्पल, मिर्च और नागकेशर की जड़ यह कई द्रव्य एकत्र घिसकर अञ्जन लगाने से मनुष्य निद्रित होता है, इस में सन्देह नहीं ॥२६॥

काकजङ्घाजटानिद्रां जनयेत्शिरसिस्थिता ।
मूलंवाकाकमाच्याश्च कृष्णायास्तद्गुणंस्मृतम् २७

चौटलो के वृक्ष की जटा व जड़ मस्तक में धारण करने से शीघ्र निद्रा में अभिभूत होता है। मकोय के वृक्ष की जड़

और कालीविष्णुकान्ता की जड़ का भी यही गुण जानो। अर्थात् इसको भी मस्तक में धारण करने से शीघ्र निद्रा आजाती है ॥२७॥

इति निद्रालु करण विधि ।

॥ अथ जय प्रकरणम् ॥

आर्द्रायांवटवृन्दाकं हस्तेबद्धापराजितः ।
तद्वृक्षेचूतवृन्दाकं गृहीत्वाधारयेत्करे ॥२८॥
संग्रामेजयमाप्नोति जयांस्मृत्वाजयीतथा ॥२९॥

आर्द्रा नक्षत्र में बट के बृक्ष का बन्दा अथवा आमके बृक्ष का बन्दा लेकर हाथ में बांधने से अथवा धारण करने से सङ्ग्रामादि सब प्रकार के विवादस्थल में जय प्राप्त होती है ॥

कृत्तिकाचविशाखाच भौमवारेणसंयुता ।
तद्दिनेघटितंवस्त्रं संग्रामेजयदायकम् ॥३०॥

यदि मङ्गलवार के दिन कृतिका व विशाखा नक्षत्र का योग हो तो उसी मङ्गलवार को वस्त्र प्रस्तुत करके वह वस्त्र पहरकर युद्ध में गमन करने से निःसँदेह जय होगी ॥३०॥

करेसुदर्शनामूलं बद्धाराजकुलेजयी ।
जयामूलंराजकुले मुखस्थञ्चजयप्रदम् ॥३१॥

शुकदर्शन वृक्ष की जड़ हाथ में बांधने से राजकुल† में जय लाभ होती है। जयन्ती की जड़ भी मुख में रखने से यही फल प्राप्त होता है ॥३१॥

इति जय प्रकरण ।

अथ ईश्वरादीनांक्रोधोपशमन प्रकरणम्

कन्टकेनतालपत्रेयस्य नामाभिलिख्य कर्दमे-
स्थापयेत् कुपितःप्रसन्नोभवति ॥३२॥

ताल पत्र पर कण्टक योग में जिसका नाम लिखकर कीचड़ में स्थापन किया जाय, वह क्रुद्ध होने पर भी प्रसन्न हो जाता है ॥३२॥

गोरोचनयाभूर्जयस्यनामसमालिख्यपयोमध्ये
स्थापयेत् कुपितःप्रसन्नोभवति ॥३३॥

गोरोचन द्वारा भोजपत्र पर जिस व्यक्ति का नाम लिख

† राजकुल शब्द का अर्थ यहां मुकदमें का है।

कर दूध में रक्खा जाय, वह कुपित होने पर भी उसका क्रोध शान्त होता है ॥३३॥

ऊँशान्तेप्रशान्तेसर्व्वक्रुद्धोपशमनिस्वाहा ।
अनेनमन्त्रेणत्रिःसप्तवारजप्तेनमुखंमार्ज्जयेत् ३४

क्रोधोपशमन कार्य का अनुष्ठान करने के समय "ऊँ शान्ते" इत्यादि मन्त्र इक्कीसवार जप करके मुख धोने से कार्य सिद्ध होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥३४॥

इति क्रोधोपशमन प्रकरण ।

अथ लोम नाशनम् । *

एकःप्रदेयो हरिताल भागः
पञ्चप्रदेयाजलजस्यभागाः ।
ब्रह्मतरोर्भस्म सएव पञ्च
प्रोक्ताश्चभागाः कदलीजलार्द्राः ॥३५॥

* बहुधा देखागया है कि शरीर के किसी स्थान में फोड़ा आदि होनेपर, बिना चीरे फाड़े अच्छा नहीं होता। यदि फोड़े के ऊपर रोम होतो बड़ी कठिनाई पड़ती है। ऐसे स्थान में प्रथम लोमनाशन विधि के द्वारा लोम उखाड़कर चीर फाड़ करे ॥

समेत्यसप्ताहक भावयित्वा
कृत्वा * * *
रोमाणिसर्व्वाणि * *
पुनर्नरोहन्ति कदाचिदेव ॥३६॥

हरिताल का चूर्ण एक भाग, पांच भाग शङ्ख की भस्म, और पांच भाग पिलखन के काष्ठ की भस्म, एकत्र मिलाकर केले के रस में सिद्ध करे। फिर उसको सात दिन तक रखकर लोम (रोम) युक्त स्थल में लेप करने से सम्पूर्ण लोम उखड़ जाते हैं ॥३५॥ ॥३६॥

पलाशभस्मान्वित तालचूर्णे
रम्भम्बुमिश्रैः परिलिप्यभूयः ।
* * * *
रोमानिरोहन्ति कदापिनैव ॥३७॥

ढाक की लकड़ी की भस्म और हरिताल का चूर्ण यह दो द्रव्य एकत्र मिलाकर केले के रस में मर्दन पूर्वक लोम युक्त स्थल में वार वार लेप करने से सम्पूर्ण लोम जड़ सहित उखड़ जाते हैं ॥३७॥

रम्भाजलैःसप्तदिनंविभाव्य
भस्मानिकम्बोर्म्मंर्दनाणिपश्चात् ।
तालेनयुक्तानि विलेपनानि
लोमानिनिर्मूल यतिक्षणेन ॥३८॥

शङ्ख की भस्म को केले के रस में एक सप्ताह भावना देकर इसमें हरिताल मिलावे। फिर भली भांति मर्दन पूर्वक लोम युक्त स्थल में लेप करने से शीघ्र लोम गिरजाते हैं।३८।

तालकंशङ्खचूर्णश्च मञ्जिष्ठाभस्मकिंशुकम् ।
समभागंप्रलेपेन रोमखण्डनमुत्तमम् ॥३९॥

तुल्य परिमाण हरिताल चूर्ण, शङ्ख चूर्ण, मजीठ को भस्म, टेसू के काष्ठ की भस्म, लाकर जलके सङ्ग मिलाय लोम युक्त स्थल में लेप करने से लोम शीघ्र गिरजाते हैं ॥३९॥

शङ्खंतालंयवंगुञ्जं काञ्जिकैःपेषयेत्सदा ।
लेपात्पतन्तिलोमानि पक्वपत्रमिवद्रुमात् ।४०।
लेपनात्हन्तिकेशांश्च कटुतैलैर्मनःशिला ।

शङ्ख, हरिताल, यव और चौंटली इन सबको बराबर ले चूर्ण कर कांजी सहित मर्दन पूर्वक लोम युक्त स्थल में लेप

करने पर वृक्ष से पके हुए पत्ते गिरने की समान अङ्ग से रु-वें गिरजाते हैं ॥४०॥

तालकंशङ्खचूर्णन्तु पिष्ट्वाचक्षारतोयकैः ।
तेनलिप्ताःकचाचर्म्मे स्थितेगच्छतितत्क्षणात् ४१

खारी जल में हरिताल और शङ्ख चूर्ण पीसकर मस्तक में अथवा अङ्ग के लोम युक्त स्थल में लेप करने से शीघ्र केश और लोम गिरजाते हैं ॥४१॥

पूगवृक्षस्यपत्रोत्थ द्रवैपिष्ट्वाथगन्धकम् ।
तेनलिप्त्वास्थितेचर्म्मे रोमखण्डनमुत्तमम् ४२

सुपारी के पत्तों के रस में गन्धक पीसकर लोम स्थान में लेप करने से शीघ्र रुवें गिरजाते हैं ॥४२॥

इति लोम नाशन ।

अथ बन्धनमोचनं निगडादिभञ्जनंच

मार्गशीर्षस्यपूर्णिमायां शिखिमूलंसमुद्धरेत् ।
बन्धनान्मुच्यतेतेन शिखाबद्धोनसंशयः ॥४३॥

मन्त्र । ओंनमःकमलपिङ्गलेरुद्रहृदयाङ्के वेताल

तालअस्थिधारिणी तिष्ठतिष्ठसरसरसर्वांनमोहय मोहयभगवतिशिखाजेतिमिरेमहामायेस्वाहा। अष्टोत्तरशतंजप्त्वा शिखायांपूर्व्वोक्तमौषधं वन्धयेत्तेनसिद्धिः। लक्षंवर्णककारश्च लिखेद्बन्धन मोचनम्॥

अगहन मास को पूर्णमासी के दिन चित्रक की जड़ तोड़ कर "ॐनमः" इत्यादि मन्त्र से अष्टोत्तर शतवार (१०८) अभिमन्त्रित करके शिखा में बांधने से बन्धन मोचन होता है "कॅ" यह अक्षर लक्ष संख्यक लिख लेने से बन्धन मोचन होता है ॥४३॥

हस्तार्केसिन्धुवारस्य मूलंचोत्तरगंहरेत।
स्पर्शनंबन्धविच्छेदं कुरुतेशीघ्रमारुतः ॥४४॥

रविवार के दिन हस्तनक्षत्र आने पर उस दिन सम्हालू बृक्ष की उत्तर ओर वाली जड़ तोड़कर अङ्ग में स्पर्श करने से शीघ्र बँधन मोचन होता है ॥४४॥

ओं ह्रुं ओं आय आय चिं चिटि चिटी ह्रां लां वज्रनन्दिक कालिका स्वाहा।

सफेद सरसो और तीन स्वेत जवा कुसुम यह मन्त्र से अभिमन्त्रित कर प्रथम प्रवेश करने के द्वार पर डालने से और सब द्वार अपने आपही खुलकर टूट जाते हैं

मांसीरक्तोत्पलतुल्यं कृकलासेचभोजयेत् ।
तन्मलैर्गुटिकास्पर्शा त्तदावन्धभिनत्यलम् ४५

वालछड़ और रक्तोत्पल बराबर लेकर एक गिरगट को भोजन करावे फिर उसी गिरगट के विष्टा द्वारा गोली बनाय अङ्ग में स्पर्श करने से बन्धन मोचन होता है ॥४५॥

इति बन्धन मोचन और निगडादि भञ्जन।

अथ नष्ट पुष्प पुष्पी करणम्। ※

ज्योतिष्मती कोमलपत्रमश्नौ
भृष्टंजरायाःकुसुमञ्चपिष्टम् ।
गृहाम्बुनापीतमिदं युवत्याः
करोतिपुष्पंस्मरमन्दिरस्य ॥४६॥

※ नारि जाति में नष्ट पुष्प का होना अनेक रोगों का कारण है, इसही कारण से नागभट्ट ने ऐसी औषधि का प्रचार किया है कि जिससे नष्ट पुष्प पुष्पित हो।

प्रथम तो ज्योतिषमती (मालकँगुनी) के पत्ते अग्नि में झुलसाले। अनन्तर, जवा कुसुम के सङ्ग पीसकर बहुत दिनों तक बासी जल अथवा कांजी के सङ्ग मिलाकर सेवन करने से नष्ट पुष्पा नारी पुनर्वार ऋतु मती होती है ॥४६॥

दूर्वादलंतण्डुल तुल्यभागं
निष्पिष्यपिष्टं परिपाचितञ्च।
तद्भक्षयित्वा वनिताप्रणष्टं
पुष्पंलभेतस्व वलानुरूपम् ॥४७॥

दूर्वाघास और चावल बराबर ले एकत्र पीसकर पिट्ठी करे। फिर यह पिट्ठी अग्नि में भूनकर सेवन करने से नष्ट पुष्प आरोग्य होता है ॥४७॥

पारावतपुरीषञ्च मधुनासंपिवेत्ततः।
रजस्वलाभवेन्नारी मूलदेवेनभाषितम् ॥४८॥

कबूतर की बीट शहत के सङ्ग मिलाकर सेवन करने से नष्ट पुष्पा नारी पुनर्वार ऋतु मती होती है। यह मूलदेव ने कहा है ॥४८॥

क्वाथंगुडत्र्यषजं तिलभागीकृतंपिवेत्।

क्वाथंरक्तभवेगुल्मे नष्टपुष्पेचयोजयेत् ॥४९॥
त्रिकुट का क्वाथ, गुड़ और तिलचूर्ण यह तीन द्रव्य एकत्र कर सेवन करने से नष्ट पुष्पा नारी को फिर ऋतु होती है। उक्त क्वाथ रक्त गुल्म को भी उपकारी है ॥४९॥

इति नष्ट पुष्प पुनः पुष्पी करण।

॥ अथ अति रजो निवारणम् ॥

धात्रीश्चपथ्याश्च रसाञ्जनञ्च
कृत्वाविचूर्णं सजलंनिपीतं।
अत्यन्त रक्तोत्थित मुग्रवेगं
निवारयेत्सेतु मिवाम्बुपूरम् ॥५०॥

आंवला, हरीतकी, रसौत यह कई वस्तु अच्छी प्रकार चूर्ण कर जल के सङ्ग सेवन करने से पुल बँधने पर जल प्रवाह रुकने की समान भयङ्कर रक्तस्राव निवारण होता है।५०।

शेलुत्वचामिश्रित तण्डुलेन
विधायपिष्टं विनियोजनीयम्।
कन्दर्पगेहे मृगलोचनाया

रक्तंनिहन्त्याशुहटेनयोगः ॥५१॥

लिसोडे के वृक्ष की छाल चावलों के सङ्ग पीसकर स्त्री की योनि में लेप करने से रक्तस्राव निवारण होता है।५१।

अपामार्गस्यमूलन्तु वृद्धपूगेनभक्षयेत् ।
रक्तस्रावंनिहन्त्याशुसुखीभवतिसुन्दरी ॥५२॥

पकी सुपारी के सङ्ग चिरचिरे की जड़ भोजन करने से अति रजोस्राव प्रशान्त होता है, अतएव वह सुंदरी स्वास्थ्य अनुभव करती है ॥५२॥

चन्दनंक्षीरसंयुक्तं सघृतंपाययेद्भिषक् ।
शर्करामधुसंयुक्त मल्लकश्चात्रविनाशनम् ॥५३॥

चन्दन, क्षीर, घृत, शर्करा, शहत, यह सब वस्तु बराबर मिलाकर सेवन करने से रक्तस्राव शान्त होता है ॥५३॥

इति अति रजो निवारण।

अथ बन्ध्या या गर्भधारण प्रकरणम्

जन्मवन्ध्याकाकवन्ध्या मृतवत्साकचित्स्त्रियः ।
तासांपुत्रोदयार्थञ्च शम्भुनामूचितंपुरा ॥५४॥

वन्ध्या (बांझ) अनेक प्रकार की होती है, कोई जन्म वन्ध्या, कोई काक वन्ध्या, और कोई मृतवत्सा होती हैं। जिससे यह सब वन्ध्या पुत्र लाभ करै, महादेव जी ने पूर्वकाल में इसका सम्पूर्ण उपाय कहा है, वही नीचे लिखते हैं ॥९४॥

तत्र जन्म वन्ध्या चिकित्सा।

समूलपत्रांसर्पाक्षीं रविवारेसमुद्धरेत्।
एकवर्णगवीक्षीरैः कन्याहस्तेनपेषयेत् ॥५५॥
ऋतुकालेपिवेद्वन्ध्या पलार्द्धंतद्दिनेदिने।
क्षीरशाल्यन्नमुदगश्च लघ्वाहारंप्रदापयेत् ॥५६॥
एवंसप्तदिनंकृत्वा वन्ध्याभवतिपुत्रिणी।
तद्वेगंभयशोकञ्च व्यायामञ्चविसर्जयेत् ॥५७॥
अनङ्गंभयशोकञ्च दिवानिद्रांविवर्जयेत्।
नकर्म्मकारयेत्किञ्चि द्वर्ज्जयेच्छीतमातपम् ५८
नतयापरमांसेवां कारयेत्पूर्व्ववत्क्रियाम्।
पतिसङ्गादगर्भलाभो नात्रकार्य्याविचारणा ५९

रविवार के दिन जड़ और पत्ते सहित एक सर्पाक्षी वृक्ष

लाकर उसको एक अविवाहिता कन्या के हाथ से एकवर्णा गाय के दूध में मर्दन करावे। सात दिन तक यह औषधि प्रति दिन आधेपल प्रमाण सेवन करे। इन सात दिनों में दुग्ध, पसाई के चावलों का अन्न, मूँग इत्यादि लघु द्रव्य आहार करे। इस एक सप्ताह में उद्वेग, भय, शोक, कसरत, पतिसंसर्ग, दिन में सोना, श्रम जनक कार्य शीत और गरमी परित्याग करनी होती है। इस प्रकार के नियम से रहकर फिर पति के सङ्ग सहवास करने से वन्ध्या भी गर्भ धारण करती है, इसमें सन्देह नहीं ॥५५॥ ॥५६॥ ५७॥ ॥५८॥ ॥५९॥

एकमेवतुरुद्राक्षं सर्पाक्षीकर्षमात्रकम् ।
पूर्ववच्चगवांक्षीरैः ऋतुकालेप्रदापयेत् ॥६०॥
महागणेशमन्त्रेण रक्षांतस्याश्चकारयेत् ।
मन्त्रस्तु। ॐमदन्महागणपतेरक्षामृतंमतसुतंदेहि।

एक रुद्राक्ष और दो तोले सर्पाक्षी एकवर्णा-गाय के दूध में मर्दन पूर्वक ऋतु काल में सेवन करने से वन्ध्या नारी को गर्भ रहजाता है। इस कार्य का अनुष्ठान करने के समय मूल लिखित "ॐमदन" इत्यादि गणेश मन्त्र से उसकी रक्षा करै

पत्रमेकंपलाशस्य गर्भिणीपयसान्वितम् ।

पीत्वातुलभतेपुत्रं रूपवन्तंनसंशयः ॥६१॥
पथ्यमुक्तंयथापूर्व्वं तद्वत्सप्तदिनावधि ॥६२॥

गर्भवती नारी के स्तनो के दूध में एक ढाक का पत्ता पीसकर सेवन करने से वन्ध्या नारी भी स्वरूपवान पुत्र लाभ करती है, किन्तु सातदिन तक पूर्व लिखित पथ्यादिक सम्पूर्ण नियमों की रक्षा करनी उचित है ॥६१॥ ६२॥

देवदानीयमूलन्तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
निष्कत्रयंपिवेत्क्षीरैः पूर्व्ववत्क्रमयोगतः ।६३।
वन्ध्यापिलभतेपुत्रं देयंपथ्यंयथापुरा ।

पुष्प नक्षत्र युक्त रविवार के दिन बड़ी तोरई की जड़ तोड़कर उसको तीन मासे गाय के दूध में पीस कर सेवन करने से जन्मवन्ध्या को पुत्र की प्राप्ति होती है, परन्तु पूर्व लिखित विधानानुसार नियमादि की रक्षा करनी होती है ॥६३॥

तुरङ्गगन्धा घृतवारिसिद्ध
साज्यंपयः स्नानदिनेचपीत्वा ।
प्राप्नोतिगर्भं विपयंचरन्ति
वन्ध्यापिपुत्रं पुरुषप्रसङ्गात् ॥६४॥

॥ घृतन्तु शयनसमये पेयम् ॥

ऋतुस्नान के दिन घृत और जल के सङ्ग असगन्ध सिद्ध कर घृत और दूध के सङ्ग उसका सेवन करके पति के सङ्ग सहवास करने से पुत्र लाभ होता है, इसमें सन्देह नहीं परन्तु शयन करने के समय घृत पान करे ॥६४॥

कृष्णापराजितामूलं वस्तक्षीरेणसंपिबेत् ।
ऋतुस्नातात्रिधायातु वन्ध्यागर्भधराभवेत् ।६५।

ऋतुस्नान के उपरान्त बकरी के दूध में कालीविष्णुकान्ता की जड़ पीसकर सेवन करने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

सपिप्पलीकेशरशृङ्गवेरं
क्षुद्रायणंगव्यघृतेनपीतं ।
वन्ध्यापिपुत्रंलभतेहटेन्
योगोत्तमोऽयंमुनिभिःप्रदिष्ट ॥६६॥

पीपल, नागकेशर, अदरक, और छोटी गोल मिरच यह सब गाय के घी में पीसकर, भक्षण करने से वन्ध्या के पुत्र होता है। यह योग मुनिगण कर्तृक निर्दिष्ट हुआ है। यह अत्युत्तम औषधि है ॥६६॥

इति जन्मवन्ध्या चिकित्सा।

अथ काकवन्ध्या चिकित्सा

पूर्वंपुत्रवतीभूत्वा पश्चान्नोभूयतेयदि ।
काकवन्ध्याचसाज्ञेया चिकित्सास्याश्चकथ्यते,६७

केवल एकही पुत्र होने के उपरान्त फिर जिसको गर्भ नहीं रहता, उसका नाम काक वन्ध्या है, अब उसी स्त्री की चिकित्सा लिखो जाती है ॥६७॥

विष्णुकान्तांसमूलन्तु पिष्ट्वादुग्धैस्तुमाहिषे ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकालेचभक्षयेत् ॥६८॥
एवंसप्तदिनंकुर्य्यात् पथ्यमुक्तञ्चपूर्ववत् ।
गर्भंसालभतेनारी काकवन्ध्यासुशोभनं ॥६९॥

जड़ सहित एक विष्णुकान्ता का वृक्ष लाकर भैंस के दूध में पीस ऋतुकाल में भैंस के मक्खन के सङ्ग सेवन करने से काकवन्ध्या स्त्री पुनर्बार गर्भवती होती है । जन्मवन्ध्या के लिये प्रथम जिस प्रकार पथ्य और नियमादि लिखगये हैं अब भी वैसेही एक सप्ताह करना होगा ॥६८॥ ॥६९॥

अश्वगन्धीयमूलन्तु ग्राहयेत्पुष्पभास्करे ।
योजयेन्महिषीक्षीरैः पलार्द्धंभक्षयेत्सदा ।७०।

सप्ताहाल्लभतेगर्भं काकवन्ध्यानसंशयः ।

पुष्प नक्षत्र युक्त रविवार के दिन असगन्ध की जड़ ला-कर भैंस के दूध में मर्दन पूर्वक अर्द्धपल प्रमाण सेवन करें। सात दिन इसी प्रकार सेवन करने से काकवन्ध्या-स्त्री गर्भ वती होती है। इसमें संशय नहीं ॥७०॥

इति काकवन्ध्या चिकित्सा ।

अथ मृतवत्सा चिकित्सा

गर्भसञ्जातमात्रेण पक्षान्मासाच्चवत्सरात् ।
म्रियतेद्वित्रिवर्षा ह्यस्याःसामृतवत्सिका ।७१।

जिस स्त्री के गर्भ से केवल उत्पन्न होनेपर ही बालक की मृत्यु हो अथवा एक मास, एक वर्ष, तथा दो या तीन वर्ष में मृत्यु हो और इसी प्रकार वार वार होता हो, उसका नाम मृतवत्सा है। अब ऐसी नारी की चिकित्सा लिखीजाती है

याबीजपूरद्रुममूलमेकं
क्षीरेणसिद्धंहवियाविमिश्रं ।
ऋतौनिपीयस्वपतिंप्रयाति-

दीर्घायुषंसातनयंप्रसूते ॥७२॥

दाड़िम की जड़ दूध के सङ्ग सिद्ध करके उसमें घृत मिलावे। अनन्तर ऋतुकाल में यह औषधि सेवन पूर्वक ऋतु स्नान करने के उपरान्त पति का सहवास करने से मृतवत्सा नारी के सन्तान उत्पन्न होकर दीर्घ जीवी होती है। इसमें सन्देह नहीं ॥७२॥

इति मृतवत्सा चिकित्सा।

अथ गर्भ रक्षा विधिः

॥ तत्र प्रथम मासे ॥

अकस्मात्प्रथमेमासे गर्भेभवतिवेदना।
गोक्षीरैःपाययेतुल्यं पद्मकेशरचन्दनं ॥७३॥
पलमात्रंपिबेन्नारी त्र्यहंगर्भःस्थिरोभवेत् ॥७४॥

अब गर्भ रक्षा की विधि लिखी जाती है—प्रथम महीने में अकस्मात् गर्भ वेदना उपस्थित होकर गर्भस्राव की शङ्का होने पर पद्म केशर और चन्दन बराबर ले दूध के सङ्ग पीसकर चार तोला पीने से निःसन्देह गर्भ रक्षा होती है ७३।७४

॥ तत्र द्वितीय मासे ॥

नीलोत्पलंमृणालञ्च पष्टिककर्कटशृङ्गिका ।
गोक्षीरैस्तुद्वितीयेपि पीत्वाशाम्यतिवेदना ७५

नीलोत्पल, मुलैठी, और काकडाशिङ्गी, यह सब गाय के दूध में पीसकर पीने से दूसरे महीने की गर्भ वेदना शान्त होती है ॥७५॥

॥ तत्र तृतीय मासे ॥

श्रीखण्डञ्चवचाकुष्टं मृणालंपद्मकेशरम् ।
पिवेत्शीतोदकंपिष्टं तृतीयेवेदनावती ॥७६॥

चन्दन काष्ठ, कूड़, खस, और कमल केशर शीतल जल में पीसकर सेवन करने से तीसरे महीने की वेदना कम होती है ।

॥ तत्र चतुर्थ मासे ॥

नीलोत्पलंमृणालानि गोक्षुरंञ्चकशेरुकं ।
तुर्य्यमासेगवांक्षीरैः पिवेत्साचातिवेदना ७७

नीलोत्पल, खस, गोखरू, और कसेरू यह सब द्रव्य गाय के दूध में पीसकर सेवन करने से चौथे महीने की वेदना कम होती है ॥७७॥

॥ तत्र पञ्चम मासे ॥

पुनर्णवाञ्चकाकोलीं तगरंनीलमुत्पलं ।
गोक्षीरंपञ्चमेमासि गर्भक्लेशहरंपिबेत् ॥७८॥

खपरा, काकोली, तगर पुष्प नीलोत्पल, यह सब एकत्र पीसकर गाय के दूध सहित सेवन करने से पांचवें महीने की गर्भ वेदना शान्त होती है ॥७८॥

॥ तत्र षष्ठ मासे ॥

सिताकपित्थमज्जाच शीततोयेनपेषयेत् ।
षष्ठमासिगवांक्षीरैः पिबेतक्लेशनिवृत्तये ॥७९॥

शहत की बनीहुई चीनी और कैथा का गूदा शीतल जल में पीसकर धेनु दुग्ध के सङ्ग सेवन करने से छठे महीने की वेदना शान्त होती है ॥७९॥

॥ तत्र सप्तम मासे ॥

कशेरुपौष्करमूलं, शृङ्गाटंनीलमुत्पलं, ।
पिष्ट्वाचसप्तमेमासि क्षीरैःपीत्वाप्रशाम्यति ८०

कसेरू, पोहकरमूल, सिंहाड़े, नीलोत्पल यह सब द्रव्य

पीसकर धेनु दुग्ध के सङ्ग सेवन करने से सातवें महीने की गर्भ वेदना शान्त होती है ॥८०॥

॥ तत्र अष्टम मासे ॥

यष्टीपद्माख्यकंमुस्तं कशेरुंगजपिप्पलीं।
नीलोत्पलंगवांक्षीरे पिबेदष्टममासके ॥८१॥

मुलैठी, कमलगट्टा, मोथा, कसेरू, गजपीपल और नीलोत्पल यह सब एकत्र पीसकर गाय के दूध में सेवन करने से आठवें महीने की गर्भ वेदना दूर होती है ॥८१॥

॥ तत्र नवम मासे ॥

विशालाबीजकक्कोलं मधुनासहलेपयेत्।
वेदनानवमेमासि शान्तिमाप्नोतिनान्यथा ८२

विशाला बीज,(इन्द्रायन), और शीतलचीनी, यह दो द्रव्य एकत्र पीसकर शहद के सङ्ग सेवन करने से नौ महीने के गर्भ स्राव की वेदना कम होती है ॥८२॥

॥ तत्र दशम मासे ॥

शर्करागोस्तनीकाथैः सक्षौद्रंनीलमुत्पलं।
पाययेद्दशमेमासि गवांक्षीरैःप्रशान्तये ॥८३॥

अथवाशुण्ठीसंसिद्धं गोक्षीरेदशमेपिवेत् ।
अथवामधुकंदारु शुण्ठीक्षीरेणसम्पिवेत् ॥८४॥

चीनी, द्राक्षारस, शहत और नीलोत्पल यह सब द्रव्य पीसकर धेनु दुग्ध के संग सेवन करने से दशवें महीने की गर्भ वेदना कम होती है। अथवा गाय के दूध में सोंठ पकाकर सेवन करने से वेदना कम होती है। मुलेठी, देवदारु और सोंठ दूध में पकाकर उस दूध का सेवन करने से दसवें महीने की गर्भ वेदना दूर होती है ॥८३॥ ॥८४॥

धान्याञ्जनंसावरयष्टिकाख्यं
त्र्यहंनिपीतंप्रमदाहठेन ।
सप्ताहमात्रंविनियोज्यतासौ ।
स्तम्भातिगर्भंचलितंनचित्रं ॥८५॥

धनियाँ, रसौत, लोध, मुलेठी यह सब वस्तु मर्दन पूर्वक काढ़ा निकालकर तीन दिन वा एक सप्ताह सेवन करने से चलित गर्भ स्थिर होता है ॥८५॥

कुलालहस्तोद्भव कर्दमस्य
त्रस्तीपयःक्षौद्रयुतस्यमात्रं ।

गर्भच्युतिंशूलनयोनिवार्य्यं
करोतिगर्भंप्रकृतंहठेन ॥८६॥

कुम्हार जिस समय बरतन तैयार करे, तब उसके हाथ में स्थित हुई मट्टी में बकरी का दूध और कुछेक शहद एकत्र मिलाकर सेवन करने से निस्सन्देह विषम गर्भस्राव की वेदना कम होती है ॥८६॥

कशेरुशृङ्गाटक जीरकाणि
पयोघनैरण्ड शतावरीभिः ।
सिद्धंपयःशर्करयाविमिश्रं
संस्थापयेद्गर्भं मुदीत्यशूले ॥८७॥

कसेरू, सिंहाड़ा, जीरा, मोथा, एरण्ड और शतावर यह सब वस्तु दूध के सङ्ग पाक करके चीनी मिलाय सेवन करने से चलित गर्भ स्थिर होता है ॥८७॥

कुवलयकन्दंसतिलं पीत्वाक्षीरेणमधुनावनिता ।
मुक्तिगुरुतरदोषैश्चलितंगर्भंसंस्थापयेदाशु ८८

कमल का कन्द, काले तिलों सहित पीसकर उसमें शहत मिलाय दूध के सङ्ग सेवन करने से चलित गर्भ स्थिर होता है ॥८८॥

इति गर्भ रक्षा विधिः ।

॥ सुख प्रसव योगः ॥

श्वेतंपुनर्णवामूलं चूर्णयोनौप्रवेशयेत् ।
क्षणात्प्रसूयतेनारी गर्भेणातिप्रपीडिते ॥८९॥

सफेद पुनर्नवा की जड़ पीसकर योनि में लगाने से शीघ्र सुख पूर्वक प्रसव होता है ॥८९॥

उत्तराभिमुखंग्राह्यं श्वेतगुञ्जीयमूलकं ।
कट्यांबध्वाविमुक्तश्च गर्भपुत्रन्तुतत्क्षणात् ९०

गर्भवती स्त्री उत्तराभि मुख होकर सफेद चौंटली की उत्तर दिशा की ओर वाली जड़ तोड़कर कमर में बांधने से शीघ्र प्रसव होता है ॥९०॥

वासकस्यतुमूलन्तु चोत्तरस्थतसमुद्धरेत् ।
कट्यांबध्वासप्तसूत्रैः सुखंनारीप्रसूयते ॥९१॥

वासक वृक्ष की उत्तरदिकस्थ जड़ तोड़कर सात डोरों से गर्भवती स्त्री की कमर में बांधने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

उत्तरेऽवस्थमालोक्य श्वेतगुञ्जाफलीयकं ।
सुखंप्रसवमाप्नोति तत्क्षणान्नात्रसंशयः ॥९२॥

योनिंचालेपयेत्तेन सासुखेनप्रसूयते ।
सहदेव्याश्चमूलन्तु कटिस्थितप्रसवेत्सुखं ९३

सफेद चौटली के वृक्ष का उत्तर दिशा की ओर का फल गर्भवती नारी के केशों में बांधने से तिसी समय निःसन्देह सुख पूर्वक प्रसव होता है। अथवा यह फल मर्दन पूर्वक योनि में लेप करने से भी सुख सहित प्रसव होता है। इसके अतिरिक्त खरैटी की जड़ कमर में बांधने से भी सुख पूर्वक प्रसव होता है ॥९२॥ ॥९३॥

अपामार्गस्यमूलन्तु ग्राहयेच्चतुरंगुलं ।
नारीप्रवेशयेद्योनौ तत्क्षणात्साप्रसूयते ९४

चार अँगुल बराबर विष्णुकान्ता की जड़ लाकर गर्भवती नारी की योनि में प्रवेश करने से शीघ्र प्रसव होता है ॥९४॥

तोयेनलांगलीमूलं पिष्ट्वायोनौप्रवेशयेत् ।
नाभिश्चलेपयेत्तेन क्षणात्प्रसूयतेसुखं ॥९५॥

नारियल की जड़ जल में पीसकर कुछेक योनि में और कुछेक नाभि में लेप करने से शीघ्र सुख पूर्वक प्रसव होता है ।९८।

गुञ्जातरोम्मूलयुगंविधाना

दुत्पाट्यपुष्येचरवौनिबद्धं ।
कटीतटेमूर्द्धनिनीलसूत्रैः
शीघ्रंप्रसूतिंकुरुतेङ्गनायाः ॥९६॥

पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार को चौटली के वृक्ष की जड़ तोड़कर नीले डोरे से एक कमर में और एक शिर में बांधने से शीघ्र प्रसव होता है ॥९६॥

समातुलूङ्गं मधुकस्यचूर्णं
मधवाज्यमिश्रं प्रमदानिपीय ।
व्यथाविहीनं प्रसवेहठेन
प्राप्नोतिनैवात्र विकल्पबुद्धिः ॥९७॥
अत्रमातुलुङ्गस्यमूलंयोज्यं
नतुफलं । क्वाथयेद्वापेयं ॥९८॥

नींबू की जड़ और मुलेठी एकत्र चूर्ण कर घी और शहत मिलाकर सेवन करने से गर्भवती स्त्री सुख पूर्वक प्रसव करती है । मातुलुङ्गमूल के काढ़े को घी और शहत मिलाकर पीने से भी यही फल होता है ॥९७॥ ॥९८॥

दशमूलीशृतंतोयं घृतसैन्धवसंयुतम् ।

शूलातुरापिवेदाशु सुखंनारीप्रसूयते ॥९९॥

दशमूल का चूर्ण, घृत और सैन्धव (सेंधानमक) एकत्र मिलाकर पोने से गर्भवती शीघ्र सुख पूर्वक प्रसव करती है।९९।

ओंमन्मथवाहिनीलम्बोदरंमुञ्चमुञ्चस्वाहा।
अनेनमन्त्रेणजलंसुतप्तं
पातुंप्रदेयंशुचिनानरेण।
तोयाभियानात्खलुगर्भवत्या
प्रसूयतेशीघ्रतरंसुखेन ॥१००॥

गरम जल से मूल लिखित मन्त्र पढ़कर वह जल गर्भवती स्त्री को सेवन कराने से शीघ्र सुख पूर्वक प्रसव होता है।।१००।।

अं ओं ह्रां नमस्त्रिमूर्त्तये।
अनेनैवतुमन्त्रेण जप्तव्यंसूतिकागृहे।
सुखप्रसवमाप्नोति सापुत्रंलभतेध्रुवम् ॥१०१॥

मूल लिखित "अँओं" इत्यादि मन्त्र सूतिका गृह में बैठकर जप करने से गर्भवती स्त्री सुख पूर्वक पुत्र प्रसव करती है। इसमें सन्देह नहीं ॥१०१॥

॥ अथ भूत ग्रहादि निवारणम् ॥

बिल्वमूलंदेवदारु गोशृङ्गश्चप्रियंगुच ।
मार्जारयमलकुष्ठं वंशत्वग्गजमूत्रकैः ॥१०२॥
पिष्ट्वाधूपोनिहन्त्याशु ग्रहभूतज्वरादयः ।
शाकिनीराक्षसाःप्रेताः पिशाचाब्रह्मराक्षसाः॥
एकाहिकोद्वयाहिकश्च ज्वरोनश्यतितत्क्षणात् ।
ओं द्रावितं तापेठं ठः स्वाहा। अनेनधूपंदद्यात् ।

बेल की जड़, देवदारु, बबूर, फूलप्रियंगु, बिल्ली का मल, कूठ, बांस की छाल और हाथी का मूत्र यह सब द्रव्य एकत्र पीसकर इसके द्वारा सौवर में और बालक के शरीर में उक्त मन्त्र से धूप देने पर ग्रह दोष नष्ट होता है, भूतावेश प्रशान्त होता है, और ज्वरादिक कम होता है। शाकिनी राक्षस, प्रेत, पिशाच, और ब्रह्मराक्षस यह इस क्रिया से दूर भाग जाते हैं और एकाहिकादि ज्वर का शीघ्र नाश हो जाता है ॥१०२॥ ॥१०३॥

श्रीवासंसैन्धवंकुष्ठं वचातैलंघृतंवसा ।
धूपोबालगृहेदेयो ब्रह्मराक्षसशान्तये ॥१०४॥

चन्दन, सेंधा; कूठ, वच, तेल, घृत, मांसरोहिणी (चर्बि) इन सब वस्तुओं के द्वारा निरन्तर बालक के घर में धूप देने से ग्रह शान्ति होती है और राक्षसादि दूर भागजाते हैं।॥१०४॥

शिरीषनिम्बयोःपत्रं गोशृङ्गस्यत्वचात्वचा।
वंशत्वक्शिखिपुच्छञ्च कंगुनाचसमंघृतं ॥१०५॥
धूपोबालग्रहान्हन्ति एतन्मन्त्रेणमन्त्रितः।
ऊँ ह्रुतंमुञ्चठड्डामरेश्वर आज्ञापयतिस्वाहा
धूपत्रयाणामेषमन्त्रः।

सिरस, नीम के पत्ते, बबूर की छाल, वच, बांस, की छाल, मोर की पूँछ, कांगुनीधान, और घृत इन सब वस्तुओं के द्वारा उक्त मन्त्र पाठ करके धूप देने से बालक का ग्रह दोष निवारण होता है ॥१०५॥

पुनर्नवानिम्बपत्रसर्षप घृतैर्विरचितोधूपः।
गर्भिण्यांबालानांसततं रक्षाकरःकथितः १०६

पुनर्नवा, नीम के पत्ते, सरसों और घृत यह सब द्रव्य वस्त्र द्वारा धूप देने से गर्भवती और बालक को किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता। परन्तु निरन्तर रक्षा होती है ॥१०६॥

दाड़िमस्यचबन्दाकं ज्येष्ठाऋक्षेसमुद्धरेत्।
द्वारबन्धेचबालानां सर्व्वग्रहनिवारणं ॥१०७॥

जेष्ठा नक्षत्र में दाड़िम के वृक्ष का बन्दा लाकर बालक के गृह द्वार पर बांधने से बालक का सब प्रकार से गृह दोष शान्त होता है ॥१०७॥

पुष्यार्केश्वेतगुञ्जाया मूलमुघृत्यधारयेत्।
बालानांकण्ठदेशेतु डाकिनीभयनाशनं ॥१०८॥

सफेद चौंटली की जड़ रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में लाकर बालक के कण्ठ में बांधने से डाकिनी के भय का नाश होता है ॥१०८॥

श्वेतापराजितापत्रं जयापत्रंद्वयोरसं।
नस्यंकुर्य्यात्पलायन्ते डाकिनीदानवादयः १०९

सफेद पुष्पलता, और जयन्ती, इन दोनों वृक्षों के पत्तों का रस मिलाकर बालक को नस्य देने से डाकिनी दानवादिक भाग जाते हैं ॥१०९॥

नरसिंहस्यबीजन्तु सकृदुच्चरितंहरेत्।
डाकिनीप्रेतभूतानि तमःसूर्य्योदयेयथा ॥११०

ॐनमोनरसिंहायहिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनीकुलोन्मूलनायस्तम्भोदभवाय समस्तदोषान् हरहर विसरविसर पचपच हनहन कम्पय कम्पय मथमथ ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट्फट ठःठः एह्येहि रुद्र आज्ञा पयति स्वाहा । इति नरसिंहमन्त्रः । ॐ ॐ ह्रीं ह्रीं हुः हुः फट् स्वाहा । अनेन सर्षप मभिमन्त्रितंकृत्वारोगिणंप्रहारयेत्तदा सर्व्वे ग्रहा पलायन्ते ॥

कार्य्य कुशल व्यक्ति के एकाग्र चित्त से यह नरसिंह मन्त्र एकबार पढ़ने से सूर्योदय के समय अन्धकार नाश होने की समान सूतिका गृह और बालक के शरीर से डाकिनी, प्रेत, भूतादि, दूर भाग जाते हैं और सरसों "ॐ ॐ ह्रीं" इत्यादि मन्त्र से अभिमन्त्रित करके यह सरसों रोगी के मारने से सवप्रकार का ग्रह दोष दूर होता है ॥११०॥

इति भूत ग्रहादि निवारणं समाप्त ।

अथ दुर्भागा-करणम्

ज्येष्ठानक्षत्रे निम्बवन्दाकं यस्याअङ्गेदीयतेसा दुर्भागाभवति ॥१११॥

जेष्ठा नक्षत्र में नीम के वृक्ष का बन्दा लाकर जिस स्त्री के शरीर पर आक्षेप किया जाय, वही स्त्री दुर्भाग्य-शालिनी होती है ॥

अथ कलह-करणम्

विशाखायांनिम्बवृक्षस्योत्तरमूलं विवस्त्रोविमुखीभूयोत्पाट्य मुखेनयस्यचालेप्रक्षिपेत् तस्यप्रत्यहंकलहोभवति । दूरेकृतेतुतद्दक्षेभद्रंभवति ११२

वस्त्र रहित और विमुख होकर विशाखा नक्षत्र में नीम के वृक्ष की उत्तरस्थ जड़ मुख से तोड़कर जिसके गृह में फेंकदीजाय, उसके गृह में प्रतिदिन विवाद होता है और इसी जड़ को वहां से दूर फेंक देने पर कलह शान्त होती है ।११२।

ब्रह्मदण्डीसमूलाञ्च काकमाचीसमन्त्रितम् ।
जातीपुष्परसैःपिष्ट्वा सप्तरात्रंपुनःपुनः ॥११३॥

एषधूपःप्रदातव्यः शत्रुगोत्रस्यमध्यतः ।
यथागोत्रंसमाघ्राति पितापुत्रैःसमंकलिः ।११३।

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी का पेड़ और मकोय का वृक्ष यह दो द्रव्य एकत्र जाति पुष्प के रस में सातदिन बारम्बार मर्दन करके इसमे शत्रु के मध्य में धूप देने से जो २ मनुष्य इस धूप को सूँघेगा, उनके बीच में विवाद उपस्थित होगा। इस क्रिया से पिता-पुत्र में भी विवाद होता है ॥११३॥ ॥११४॥

अथ रक्षा विधिः ।

कादिहरिवसानश्च अक्षरंस्वरभूषितं ।
ईकारेणापिसंयोज्य अधोरेफत्रयान्वितं ।११५।
ओंकारंशिरसंकृत्वा जप्तव्यंसिद्धिमिच्छता ।
ओं क्रीं ह्रीं खीं । केचित्तु ओं क्रीं खीं क्ष्रीं ।
स्वसंयमनमन्त्रोऽयं शतार्द्धजापमात्रतः ।
अशेषारिष्टनाशः स्यादित्याऽपुरसूदनः ॥११६॥

"ओं क्रीं ह्रीं खीं अथवा ओं क्रीं खीं क्ष्रीं" यह सँयमन मन्त्र भक्ति सहित यथा विधान केवल पचासत बार जप क-

रने से अशेष अरिष्ट ध्वन्श होते हैं। महादेव जी ने स्वयँ इस योग को कीर्त्तन किया है ॥११५॥ ११६॥

कपरंचपरंचैव टपरंतपरस्तथा ।
पपरंवर्णमाकृष्य ईकारेणसुपूजितं ॥११॥
अधोरेफसमायुक्तं ओंकारशिरसंतथा ।
ओं ह्रीं खीं छ्रीं ट्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं ।
श्रद्धयातुमहामन्त्रं येजपन्तिसदाहृदि ॥११८॥
सर्व्वथात्तस्यपुन्सःस्यात् सर्व्वारिष्टविनाशनं ।
हस्तेनरक्तपुष्पेण ग्रथितयामालिकया ॥११९॥
अभिमन्त्र्यशतेनापि दद्याद्देव्यैसदानघे ।
यावज्जीवसुखंतस्य सर्व्वलाभोदिनेदिने १२०
नगृहेऽनिष्टपातःस्या ल्लिखित्वास्थापनेगृहे ।

जो व्यक्ति संयम होकर श्रद्धा सहित ओं ह्रीं खीं छ्रीं ट्रीं थ्रीं फ्रीं ह्रीं" इस महामन्त्र का निरन्तर हृदय में ध्यान करता है, उसके सब कल्याण के विधान होते हैं और सम्पूर्ण अरिष्ट ध्वन्श होते हैं। और जो व्यक्ति अपने हाथ से लाल फूलों की माला गूँथ कर, यह माला उक्त मन्त्र से शतवार अ-

भिमन्त्रित करके देवी को समर्पण करता है, वह जीवन पर्य न्त सुख भोगता है, सँपूर्ण कामना सफल होती है और जिस गृह में यह महामन्त्र लिखकर रक्खा जाता है, उस गृह में किसी प्रकार का अनिष्ट नहीं होसकता ॥११७॥ ॥१२०॥

अक्षराणामन्त्यवर्णं लिखित्वापञ्चधानघे ।
अधोरेफसमायुक्त मोङ्कारशिरसंतथा ॥१२१॥
ईंकारेणचसम्पूज्य अन्तेफडक्षरान्वितं ।
ॐ क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं क्ष्रीं फट् ।
मन्त्रोऽयंममरूपञ्च ध्यानंजापंतथैवच ॥१२२॥
सदास्यात्तदेगृहेक्षेम सहस्रार्द्धस्यजापनात् ।
त्रैलोक्येतत्समोनास्ति नित्यंफलमवाप्नुयात् ॥
नितंसस्यद्यतेत्रासः पत्न्यापुत्रेणवान्धवैः ।
ज्ञातिभिःसज्जनैश्चापि शत्रुभिश्चविवर्जितः१२४
अन्यजन्मसुखीप्राणी श्रृणुदेविमहाफलं ॥१२५॥

महादेव पार्वती जी से कहते हैं कि हे देवि ? ॐ क्ष्रीं क्ष्रीं" इत्यादि मन्त्र मेरा स्वरूप है, यही मेरा ध्यान और जप है। जो व्यक्ति पांचसत बार इसका जप करता है, उसके घर

में कल्याण होता है, त्रिभुवन में उसको समान कोई नहीं होसक्ता, और वह नित्यवांछित फल लाभ करता है। वह इस लोक में शत्रु हीन होकर पुत्र, कलत्र, बन्धु बांधव और आत्मीय कुटुम्ब मे परिवृत होकर जीविका प्राप्त करता है और परलोक में महासुखी होता है।१२१॥१२२॥१२३॥१२४॥१२५॥

श्वेतार्कमूलंपुष्यार्के समुद्धृत्यविधारयेत्।
वाहुभ्यांधारणात्तस्य तुनिष्टानिविशेषतः१२६
तद्दर्शनेननश्यन्ति डाकिनीप्रेतदानवाः।
तद्धूपेनपलायन्ते प्रेताद्यादूरतोध्रुवं॥१२७॥

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में सफेद आक की जड़ लाकर बाहु में बांधने से सब प्रकार का अरिष्ट शान्त होता है, उस व्यक्ति के दर्शन मात्र से ही डाकिनी, प्रेत, दानवादि, भाग जाते हैं और इसकी धूप देने से प्रेत प्रभृति दूर चले जाते हैं॥१२६॥ ॥१२७॥

पूर्वभाद्रपदेऋक्षे वन्दाकन्तुशिरीषजं।
संगृह्यशिरसिक्षिप्ते अभयंभवतिध्रुवं॥१२८॥

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में सिरस के वृक्ष का बन्दा लाकर जिस के मस्तक पर डालदिया जाय, वह अभय होता है॥१२८॥

अथ ग्रह क्लेश निवारणम

तक्रपिष्ठेनतालेन लेपयेतपुत्रिकाकृतीं ।
तामाघ्रायगृहाद्यातिमक्षिकानात्रसंशयः १२९

छाछ के सङ्ग हरिताल पीसकर यह हरिताल एक कल्पित पुतली के शरीर में लेप करके रक्खे। इसके देखने से घर की सब मक्खियें उस गन्ध से डरकर गृह से भागजाती हैं १२९

श्वेतार्कदुग्धकुल्मापं तिलचूर्णसमन्वितम् ।
अर्कपत्रेपुविन्यस्तं मूपिकान्तकरंगृहे ॥१३०॥

कांजी और तिल चूर्ण यह दो द्रव्य सफेद आक के दूध में मिलाकर उसको आक के पत्ते पर लेप करके घर में रखने से उस घर में चूहे नहीं रहते ॥१३०॥

तालकछागविन्मूत्रं पलाण्डुंसहपेपयेत् ।
आलिप्यमूपिकंतेन जीवितश्चविसर्ज्जयेत् १३१
तंदृष्ट्वाचगृहंत्यक्ता पलायन्तेहिमूपिकाः ।१३२।

हरिताल, अजामल, अजामूत्र, और प्याज यह सब द्रव्य एकत्र पीसकर एक चूहे के शरीर में लेप करने से उसकी मृत्यु होगी। इस पीछे इस मरे चूहे को चूहों के आने जाने

के मार्ग पर रख देने से और मूषिकगण इस मृत चूहे के देखने मात्र से ही घर त्याग कर भाग जांयगे ॥१३१॥ ॥१३२॥

गन्धकंहरितालञ्च ब्राह्मीत्रिकटुकंसमं।
छागलीमूत्रतःपिष्ट्वा लिप्तंमूषन्तपूर्ववत् १३३

गन्धक, हरिताल, ब्राह्मी, मरिच, पीपल, और सोंठ यह सब द्रव्य सम भाग बकरी के मूत्र में पीसकर पूर्ववत् एक चूहे की देह में लेप करदेने से सब चूहे घर से दूर भागजाते हैं॥

मघायांवन्धकंक्षेत्रे स्थापयेन्मधुकोद्भवं।
मक्षिकामूषिकाणाञ्च जायतेतुण्डबन्धनं १३४

मघा नक्षत्र में सफेद आक की जड़ लाकर मुलेठी के सङ्ग मिलाय खेत में रखने से शस्य नाशक मक्खी और मूषकगणों का मुख बन्द होजाता है ॥१३४॥

रोहिषतृणपुष्पन्तु वर्त्तिमध्येनिवेशयेत्।
तद्दीपदर्शनादेव क्षिप्रंनश्यन्तिमत्कुणाः १३५

बहेड़े के वृक्ष का तृण और फूल बत्ती में प्रवेशित करके उसके द्वारा दीप जलाने से उस दीपक के देखने मात्र से ही खटमलों का नाश होजाता है॥१३५॥

सोमराजस्यवृक्षस्य पल्लवाग्रेणवर्त्तिकां ।
कृत्वादीपंप्रकुर्व्वीत मत्कुणश्चविनश्यति १३६

सोमराज वृक्ष के पल्लव के अग्रभाग द्वारा बत्ती बनाकर उसका दीपक जलाने से खटमलों का नाश होता है ॥१३६॥

अर्कतूलमयींवर्त्तिं भावयेत्तावकेनच ।
दीपंततूकटुतैलेन निःशेषायान्तिमत्कुणाः १३७

आक के फल की तुला द्वारा बत्ती बनाकर इस बत्ती से आक का कड़वे तेल में दीपक जलाने से खटमलों का नाश होता है ॥१३७॥

अर्जुनस्यफलंपुष्पं लाक्षाश्रीवासगुग्गुलं ।
श्वेतापराजितामूलं भल्लातकविडङ्गकं ॥१३८॥
धूपंसर्जरसोपेतं प्रदेयंगृहमध्यतः ।
सर्पाश्चमत्कुणामूषा गन्धाद्यान्तिदिशोयश ॥

अर्जुन वृक्ष का फल और फूल, लाक्षा, चन्दन, और गूगल, सफेद पुपलता की जड़, भल्लातक, वायविडङ्ग, धूप, और सर्जरस इन सब वस्तुओं का चूर्ण कर एकत्र मिलाय

घर में धूप देने पर उसकी गन्ध से सर्प, खटमल, मूषक इत्यादि दूर स्थान में चले जाते हैं ॥१३८॥ १३९॥

गुडश्रीवास-भल्लात--विडङ्ग-त्रिफलायुतं ।
लाक्षारसोऽर्कपुष्पञ्च धूपोवृश्चिकसर्पहृत् १४०

गुड, चावल, भल्लातक, वायविडङ्ग, त्रिफला, महावर और आक के फूल इन सब वस्तुओं की धूप से बिच्छू और सर्प का विष नष्ट होता है ॥१४०॥

सर्जरसकल्कमेदोऽर्जुनमूलमरुवककेतकनखविद्ध
एतैर्धूपोरचितः कीटभुजगमशकमक्षिकादिहरः।

राल, मांसरोहिणी, अर्जुन वृक्ष की जड, मरुवा, केतकी मूल, नखी, इन सब द्रव्यों के द्वारा धूप देने से उस स्थान में कीट, सर्प, मच्छर, मक्खियें इत्यादि नहीं रह सकती ॥१४१॥

इतिश्री नागभट्ट विरचित कामरत्न तन्त्र रुहेलखण्डान्तर्गत बरेली निवासी ब्रह्मकुलभूषण पं० बांकेलालात्मज श्रीयुत पं० श्यामसुन्दर शर्म्मा विरचित भाषाटीकायां द्वितीय परिच्छेदः समाप्तम् ।

॥ तृतीय परिच्छेद ॥

अथ उच्चाटन विधिः।

मङ्गलवारेरात्रौश्मशानाङ्गारंकृष्णवस्त्रेणकृत्वा रक्तसूत्रेणसंवेष्ट्ययस्यगृहेपरिक्षिपेत् सप्ताहाभ्यन्तरेतस्योच्चाटनंभवति ॥१॥

मङ्गलवार के दिन रात्रिकाल में कालेवस्त्र द्वारा श्मशानाङ्गार ग्रहणकर उसको लाल डोरे में बांधकर जिसके घर में फेंक दियाजाय, तो एक सप्ताह में उसका उच्चाटन होता है

पञ्चांगुलंचित्रकस्य कीलंग्राह्यंपुनर्वसौ।
सप्ताभिमन्त्रितंगेहे खनेदुच्चाटनंभवेत् ॥२॥

मन्त्रस्तु। ॐलोहितमुखेस्वाहा। अस्याष्टोत्तर सहस्रजपेनपुरश्चरणं॥

पुनर्वसु नक्षत्र में पांच अँगुल प्रमाण अण्ड का वृक्ष लाकर उक्त मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित कर जिसके घरमें दाब कर रक्खा जाय, उसका ही उच्चाटन होता है। परन्तु अष्टो-

त्तर सहस्त्रवार इस मन्त्र के जप से पुरश्चरण कर फिर इस प्र-
कार करै ॥२॥

ख्यातमौडुम्बरंकीलं मन्त्रितंचतुरंगुलम् ।
तंयस्यनिखनेद्गृहे तस्योच्चाटनंभवेत् ॥३॥
मन्त्रस्तु । ऊों शिनिशिनी स्वाहा ।

चार अँगुल की बराबर गूलर की लकड़ी ले "ऊोंशिनि" इत्यादि मन्त्र से अभिमन्त्रित कर जिसके घर में दाबकर रक्खी जाय, उसका ही उच्चाटन होता है। इसमें सन्देह नहीं ।३।

भरण्यामंगुलैकन्तु उलूकस्यास्थिकीलकं ।
सप्ताभिमन्त्रितंयस्य निखन्योच्चाटनंभवेत् ॥४॥
मन्त्रस्तु । ऊों दह दह हल हल स्वाहा ।

एक अँगुलि प्रमाण उल्लू की अस्थि भरणी नक्षत्र में लाय उक्त मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित कर, वह जिसके घर में दाबकर रक्खी जाय, उसका ही उच्चान होता है ॥४॥

काकोलूकस्यपक्षांस्तु हुत्वाहमष्टाधिकंशतम्।
यन्नाम्नामन्त्रयोगेन समस्तोच्चाटनंभवेत् ॥५॥
मन्त्रस्तु। ऊोंनमोभगवतेरुद्रायहुंदंष्ट्रोकरालाय

अमुकंसपुत्रबान्धवैःसह हनहन दहदह पचपच शीघ्रं उच्चाटयउच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठःठः।

काक और उल्लू के पङ्खों द्वारा उपरोक्त मन्त्र से अष्टोत्तर शतवार जिसके नाम से होम किया जाय, उसी व्यक्ति का उच्चाटन होता है ॥५॥

लेपयेत्काकपित्तेन कीलमंगुलसम्भवम्।
निखनेद्यस्यभवनेतस्योच्चाटनंभवेत् ॥६॥

मन्त्रस्तु। ओंह्रीं दण्डिनदण्डिन् महादण्डिन् नमोऽस्तुते ठःठः।

एक अँगुलि प्रमाण एक कील पर काक के पित्त का लेप कर मूल लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके घर में यह कील दाबकर रक्खी जाय उसका उच्चाटन होता है ॥६॥

मृतकस्यपुरुषस्य निर्म्माल्यंचेलमेवच।
प्रेतालयेसमागृह्य यस्यगेहेनिधापयेत् ॥७॥
अष्टम्याश्चचतुर्दश्यां तथैवोच्चाटनंभवेत् ॥८॥
उधृतेन शान्तिः।

अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि में श्मशान से मृतक व्यक्ति

का जीर्ण वस्त्र और निर्माल्य लाकर जिसके गृह में दावकर रक्खा जाय, उसका उच्चाटन होगा। इन सब वस्तुओं के उखाड़ने से पुनः शान्ति होजाती है ॥७॥ ॥८॥

श्वेतलांगुलिकामूलं स्थापयेदयस्यवेश्मनि ।
निखन्यतुभवेत्तस्य सद्योच्चाटनंध्रुवम् ॥९॥

सफेद कलिहारी की जड़ लाकर जिसके घर में दावकर रक्खै, तो उसका शीघ्र उच्चाटन होता है। इसमें सन्देह नहीं।९।

इतिश्री नागभट्ट विरचित कामरत्न तन्त्र रुहेलखण्डान्तर्गत बरेली निवासी ब्रह्मकुलभूषण पं० बांकेलालात्मज श्रीयुत पं० श्यामसुन्दर शर्म्मा विरचित भाषाटीकायां तृतीयपरिच्छेदः समाप्तः।



॥ चतुर्थ परिच्छेद ॥

अथ विद्वेषण विधिः ।

एकहस्तेकाकपक्षमुलूकस्यतथापरे ।
मन्त्रयित्वामिलित्वाग्र कृष्णसूत्रेणबन्धयेत् ।१।
अञ्जलिश्चजलेनैव तर्पयेद्धस्तपक्षके ।
एवंसप्तदिनंकुर्य्यादष्टोत्तरशतंजपेत् ॥२॥
विद्वेषोजायतेतत्र महाकौतुकमद्भुतम् ॥३॥

एक हाथ में काक के पक्ष और दूसरे हाथ में उल्लू के पक्ष ग्रहण पूर्वक महाभैरव का मन्त्र पढ़ इन दोनों पक्षों का अग्रभाग एकत्र कर काले सूत्र से बन्धन करें । अनन्तर जिनमें विद्वेष उत्पन्न कराना हो उनका नाम पढ़कर इन दोनों पक्षों को हाथ में ले जल से तर्पण करे । सातदिन इस प्रकार कर महाभैरव मन्त्र का एकसौ आठ बार पाठ करने से उन दोनों मनुष्यों में महाविद्वेष होजाता और महा अद्भुत कौतुक होता है ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥

मार्ज्जारमूपिकाविष्टा साध्यपुत्तलिकाकृता ।

नीलवस्त्रेणसंवेष्ट्य मन्त्रयित्वाशतेनच ॥४॥
विद्वेषोजायतेतत्र भ्रातरौतातपुत्रकौ ।
मन्त्रस्तु। ऊँनमोमहाभैरवायश्मशानवासिन्ये
अमुकामुकयोर्विद्वेषंकुरुकुरु फट्।

बिल्ली और चूहे के मल से दो पुतले बनाकर उनको नीले वस्त्र से ढककर जिन दो जनों में महाविद्वेष उत्पन्न कराना हो उनका नाम पढ़कर महाभैरव मन्त्र से एकशत बार जप करै। इस प्रकार करने से उन दोनों में महाविद्वेष उत्पन्न होता है। इसके द्वारा दोनों भाइयों और पिता पुत्र में भी महा विद्वेष उत्पन्न होसकता है ॥४॥

एकहस्तेकाकपक्ष मुलूकस्यतथापरे ।
दर्भेणधारयेद्यत्नात् त्रिसप्ताहंजलाञ्जलिं॥५॥
रक्ताश्वमारपुष्पैक मन्त्रयुक्तंजलाञ्जलिम् ।
नित्यंनित्यंप्रदातव्य मष्टोत्तरसहस्रकम् ॥६॥
परस्परंभवेद्द्वेषः सिद्धयोगउदाहृतः ।
ऊँनमः कटीटनीप्रमोटनीकौगोरीअमुकस्य
अमुकेनसहकाकोलुकादिवत्कुरुकुरु स्वाहा ।

एक हाथ में काक पक्ष, और दूसरे हाथ में यव व द-र्भ सहित उल्लू का पक्ष लेकर जिसमें द्वेष उत्पन्न कराना हो उसका नाम उच्चारण कर उक्त मन्त्र पाठ पूर्वक एक एक लाल कनेर के फूल सहित अष्टोत्तर सहस्रवार जलाञ्जलि दे । इस प्रकार प्रतिदिन करने से उनमें निःसन्देह द्वेष उत्पन्न होता है।

इति विद्वेषण विधि ।

अथ व्याधिकरणं तन्निवारणंच

ऊँअमुकंहनहनस्वाहा । अनेनमन्त्रेणकटुतै-
लोक्तंत्रिकटुजुहुयात्तदाशत्रुर्व्वधिरोभवति ॥७॥

कड़वे तेल में, मिली हुई सोंठ, पीपल, और मरिच इन कई द्रव्यों को यदि शत्रु का नाम पढ़कर उक्त मन्त्र से आहुति दे, तो वही व्यक्ति बधिर होता है ॥७॥

भल्लातकरसेगुञ्जां कुर्य्यादतिसुचूर्णितम् ।
क्षिपेदगात्रेभवेत्कुष्ठं सिनाक्षीरैःपुनःसुखी ।८।

भिलावे के रस में चौंटली को भलीभांति पीसकर जिसके शरीर पर निक्षेप किया जाय, उसके ही कुष्ठ उत्पन्न होता है। किन्तु दूध के सङ्ग मधु, शर्करा अर्थात् शहत की ब-

नी चीनी मिलाकर रोगी के शरीर पर लगाने से पुनर्वार वह रोग शान्त होता है ॥८॥

वानरीफललोमानि विषंभल्लातचित्रकम् ।
गुञ्जायुतंक्षिपेदगात्रे स्याल्लुतोवेदनान्विता ।९।
ऊशीरचन्दनञ्चैव प्रियंगूरक्तचन्दनं ।
तगरंपेखयेत्तोये लेपाल्लूतादिनाशनं ॥१०॥

कौंछ के फल के रोम, विष, भिलावा, एरण्ड, यह सब वस्तु चौटलो के सङ्ग मिलाकर जिसके शरीर पर निक्षेप किया जाय, उसके शरीर में मकरी के विष की समान वेदना उत्पन्न होती है। किन्तु खस की जड़ घिसकर उसमें चन्दन फूल पियँगु लालचन्दन, तगर के फूल, यह समस्त जल में पीसकर गात्र में लेप करने से उक्त वेदना शान्ति होती है.९ १०

शूकरपयतैललेपेन पानेनश्वेतकुष्टहृत् ।
ताम्बूलेइन्द्रगोपञ्च दत्वास्येश्वेतकुष्ठकृत् ॥११॥

शुअर का दूध और तेल यह दो द्रव्य एकत्र कर गात्र में लेप करने अथवा पान करने से सफेद कुष्ट की शान्ति होती है। इन्द्रगोप नामक लालरङ्ग का छोटा कीड़ा पान के सङ्ग मुख में रखने से सफेद कुष्ठ उत्पन्न होता है ॥११॥

करवीरार्द्रकाष्ठेन तदादायसुचूर्णयेत् ।
खानेपानेऽर्पयेद्यस्य तस्यचक्षुःप्रणश्यति ॥१२॥

आर्द्र कनेर के काष्ट का चूर्ण करके जलके सङ्ग पान अथवा अन्य वस्तु के सङ्ग जिसको सेवन करा दियाजाय, वही व्यक्ति अन्धा होता है ॥१२॥

ॐचामुण्डे हनहन दहदह पचपच असुकं गृह्नगृह्न स्वाहा ।

अनेननिम्बपत्रंकुटुतैलेनमाध्यस्यनामगृहीत्वा जुहुयात्सचाशुकुज्वरेणगृह्यते। अनेनलवणाहुति मष्टसहस्रंजुहुयात् सशूलेनकुज्वरेणगृह्यते ॥१३॥

जिसका नाम उच्चारण कर कड़वे तेल में मिश्रित नीम के पत्तों द्वारा उक्त मन्त्र से होम किया जाय, उसी को शीघ्र दोष युक्त ज्वर रोग उत्पन्न होता है। और उक्त मन्त्र से आठ हजार वार लवण (नमक) द्वारा होम करने से शूल और दोष युक्त ज्वर रोग की उत्पत्ति होती है ॥१३॥

तालकंधूर्त्तबीजञ्च घनचूर्णन्तुभक्षणे ।
दत्तंमत्तोभवेच्छत्रुः सिताक्षीरैःपुनःसुखी ॥१४॥

हरिताल और धतूरे के बीज यह दो द्रव्य भलीभांति एकत्र पीसकर शत्रु को सेवन कराने से वह पागल होजाता है। परन्तु उसको मिश्री और दूध का सेवन कराने से उसकी उन्मत्तता का विनाश होजाता है ॥१४॥

गोघृतंसैन्धवंतूलं वराहस्यचपित्तकम् ।
अजाक्षीरेणतद्योज्यं पानेनोन्मत्तनाशनम् १५

गाय का घी, सेंधानमक, और शुअर का पित्त यह तीन द्रव्य बराबर लेकर उसको बकरी के दूध में मिलाकर सेवन करने से उन्मत्तता रोग कम होता है ॥१५॥

इतिश्री नागभट्ट विरचित कामरत्न तन्त्र रुहेलखण्डान्तर्गत बरेली निवासी ब्रह्मकुलभूषण पं० बांकेलालात्मज श्रीयुत पं० श्यामसुन्दर शर्म्मा विरचित भाषाटीकायां चतुर्थपरिच्छेदः समाप्तम् ।



॥ पञ्चमः परिच्छेदः ॥

अथ मारण विधिः

नरास्थिकीलकंपुष्ये गृह्नीयाच्चतुरंगुलम् ।
निखनेत्तुगृहेयाव त्तावत्तस्यकुलक्षयः ॥१॥
मन्त्रस्तु। ऊों ह्रीं फट् स्वाहा । सहस्रजपात्सिद्धिः

चार अँगुल प्रमाण मनुष्य की अस्थि की कील पुष्य नक्षत्र में लाकर जबतक किसी के घर में दाबकर रक्खी जाय तबतक उसका वंश क्षय होता है। परन्तु उक्त मन्त्र हजारबार जप कर कार्य्य आरम्भ करना उचित है ॥१॥

ऊों सुरेश्वण्यस्वाहा । अनेनमन्त्रेण ।
सर्पास्थ्यंगुलमात्रन्तु चाश्लेपायांरिपोर्गृहे ।
निखनेत्सप्तधाजप्तं मारयेद्रिपुसन्ततिम् ॥२॥

एक अँगुलि प्रमाण सर्प की अस्थि की कील आश्लेपा नक्षत्र में पूर्व मन्त्र से सातवार जपकर घर में दाबकर रखने से शत्रु की सन्तान (सन्तति) का नाश होता है ॥२॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम् ।

शत्रूगृहेनिहन्त्याशु कुटुम्बैवैरिणांकुले ॥३॥
मन्त्रस्तु। हुं हुं फट् स्वाहा। सप्ताभिमन्त्रितेनसिद्धिः

चार अँगुल प्रमाण अश्व-अस्थि की कील पूर्व मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित कर अश्विनी नक्षत्र में शत्रु के घर में दावकर रखने से कुटुम्ब और परिवार सहित वह शत्रु शीघ्र शमन भवन को गमन करता है ॥३॥

ॐ डंडांडिंडींडुंडूंडेंडैंडोंडौंडंडः अमुकं गृहन गृह्न हुं हुं ठः ठःअनेन नरास्थिकीलकं सहस्राभिमन्त्रितं चितामध्ये निखनेत्सज्वरेणनश्यति।४।

अनेनमन्त्रेणमनुष्यास्थिकीलकं सहस्राभिमन्त्रितंयस्यगृहेनिखनेद्यस्यनाम्ना श्मशानेवानिखनेत्तस्यनाशःस्यात् ॥५॥

उक्त मन्त्र से नरास्थि कील हजारवार अभिमन्त्रित कर के जिस व्यक्ति के नाम से चिता में दावकर रक्खो जाय, उसका ज्वर रोग द्वारा नाश होता है ॥४॥

किम्वा मनुष्यास्थि कील उक्त मन्त्र से हजारवार अभिमन्त्रित कर जिस व्यक्ति के घर में दावकर रक्खो जाय,

अथवा जिस व्यक्ति के नाम से श्मशान में दाबकर रक्खी जाय, उसका ही मरण होता है ॥५॥

आर्द्रायांनिम्ववन्दाकं शत्रोःशयनमन्दिरे ।
निखनेनम्रियतेशत्रु रुधृतेचपुनःसुखी ॥६॥
तथाशिरीषवन्दाकं पूर्व्वोक्तेनोडुनाहरेत् ।
शत्रोर्गेहेस्थापयित्वा रिपोर्नाशोभविष्यति ।७।

आर्द्रा नक्षत्र में नीम के वृक्ष का वन्दा लाकर शत्रु के शयन करने के स्थान में दाबकर रखने से शत्रु की मृत्यु होती है। किन्तु उक्त वस्तु उखाड कर स्थानान्तर में डालने से यह दोष शान्त होता है। सिरस के वृक्ष का वन्दा आर्द्रा नक्षत्र में लाकर शत्रु के घर में रखने से भी उसकी मृत्यु होती है ॥

कृष्णवृषभरक्तेन गङ्गामृत्तिकयासह ।
तिलकंभालदेशेच कृत्वासम्भावयेत्तुयम् ॥८॥
विद्धःस्यात्तत्क्षणादेव प्रोञ्छितेचशुभंभवेत् ।

काले बैल के खून में गङ्गाजी की मृत्तिका (रेणुका) मिलाकर ललाट में तिलक लगाकर जिसके सङ्ग प्रणय की जाय, वही शीघ्र विद्ध होता है। किन्तु तिलक छुटा डालने से फिर मङ्गल होता है ॥८॥

कृष्णच्छागाश्वपादस्य खुरस्थंरोमकंहरेत्।
कृष्णकुक्कुटकाकस्य ग्राह्यंपक्षचतुष्टयम् ॥९॥
सर्व्वंदग्ध्वातुभाण्डान्त स्तद्भस्मजलसंयुतम्।
ललाटतिलकंकृत्वा वामहस्तकनिष्ठया ॥१०॥
यंशिरोनम्यतेतस्य वेधोभवतिनिश्चितम् ॥११॥

काले वर्ण की बकरी और घोड़े के खुर स्थित रुवें और काले मुरगे और काक के चार पक्ष, यह सब वस्तु एकत्र अग्नि में भस्म करके उस भस्म में जल मिलाकर बायें हाथ की कन अँगुलि द्वारा इसका ललाट में तिलक लगा शिर झुका कर जिसको प्रणाम किया जाय, वही व्यक्ति विद्ध होता है।

वामदन्तंकुलीरस्य अधोभागस्यचाहरेत्।
शराग्रेफलकंकुर्य्याद्धनुश्चत्रितिजेन्धनैः ॥१२॥
गवांशिरांगुणंकृत्वा शत्रुंकुर्य्याच्चिमृणमयं।
तद्धजातेनबाणेन म्रियतेतत्क्षणाद्रिपुः ॥१३॥

केकड़े की बाईं डाढ़का नीचे का दांत लेकर उसमें तीर का फलका बनावे, चित्रक का धनुष बनावे धेनु की शिराका

इसमें डोरा डाले। फिर मिट्टी की मूर्त्ति शत्रु की बनावे, इस धनुष पर वही बाण चढ़ाय शत्रु को मूर्त्ति को बेधे, इसप्रकार करने से निश्चय तत्काल शत्रु का दमन होता है ॥१२॥ ॥१३॥

रिपुविष्ठांवृश्चिकञ्च खनित्वातुविनिक्षिपेत्।
आच्छाद्यावरणेनाथ तंपृष्ठमृत्तिकांक्षिपेत्॥१४॥
म्रियतेमलरोधेन उधृतेनपुनःसुखी।

शत्रु का मल और बिच्छू, यह दो द्रव्य एकत्र कर एक ढके बरतन में रखकर मट्टी में दाबकर रखने से शत्रु मल रोध रोग से मरजाता है। किन्तु उसको उखाड़ कर फेंकदेने से पुनर्वार शत्रु रोग से मुक्ति लाभ करता है ॥१४॥

॥ अथ अश्व मारणम् ॥

कृष्णजीरकचूर्णेन अञ्जिताश्वोनपश्यति।
तक्रेणक्षालयेच्चक्षुः सुस्थोभवतिघोटकः॥१५॥

काले जीरे के चूर्ण द्वारा घोड़े के नेत्र में अञ्जन लगाने से घोड़ा अन्धा होजाता है। परन्तु छाछ द्वारा नेत्र धो देने से फिर अच्छा होता है॥१५॥

घ्राणेछुच्छुन्दरीचूर्णं दत्तेपततिघोटकः।
सुस्थश्चन्दनपानेन नासायान्तुनसंशयः ॥१६॥

मरी छुछूँदरी सुखाय चूर्ण कर घोडे को सुगन्ध देने से घोडा शीघ्र गिरजाता है, और चन्दन जल के सङ्ग मिलाकर नासिका के छिद्रों द्वारा पान कराने से पुनर्वार आरोग्यता लाभ करता है ॥१६॥

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां कुर्य्यात्सप्तांगुलंपुनः।
निखनेदश्वशालायां मारयेत्येवघोटकान् ॥१७॥

मन्त्रस्तु। ॐपचपचस्वाहा। उपयुतजपेत्सिद्धिः।

अश्विनी नक्षत्र में, सात अंगुलि प्रमाण अश्वास्थि-कील लाकर अश्वशाला में दाबकर रखने से वहां के सब घोडे मरजाते हैं। किन्तु प्रक्रियामूल लिखित मन्त्र के दशहजार जप करने से होती है ॥१७॥

अथ रजकस्य वस्त्र नाश विधिः।

ग्राहयेत्पूर्व्वफाल्गुन्यां जातीकाष्ठस्यकीलकम्।
अष्टांगुलप्रमाणन्तु निखन्याद्राजकेगृहे ॥१८॥

शताभिमन्त्रितंतेन तस्यवस्त्राणिनाशयेत् ॥१९॥

ऊँ कुम्भं स्वाहा ।

पूर्वाफाल्गुणी नक्षत्र में अष्टांगुलि प्रमाण जातो काष्ट को कोल लाकर मूल लिखित मन्त्र से एक शतवार अभिमन्त्रित करके धोबी के घर में दावकर रखने से उसके वस्त्रों का नाश होजाता है ॥१८॥ ॥१९॥

अथ धीवरस्य मत्स्य नाश विधि।

संग्राह्यंपूर्व्वफाल्गुन्यां वदरीकाष्ठकीलकम् ।

अष्टांगुलश्चनिखने न्नाशयेद्धीवरेगृहे ॥२०॥

मन्त्रस्तु । ऊँ जले स्वाहा ।

पूर्व्वाफाल्गुणी नक्षत्र में अष्टांगुल प्रमाण वेरी के काष्ट की कोल लाकर उक्त मन्त्र पाठकर धीवर के घर में दावकर रखने से उसके-जलाशय (तालाव) की मछलियां का नाश होजाता है ॥२०॥

कृत्तिकायानर्ककाष्ठ कीलकंअंगुलंक्षिपेत् ।

शत्रोर्वापितडागादौ मत्स्यस्तत्रविनश्यति ।२१।

कृत्तिका नक्षत्र में एक अँगुल प्रमाण आक के काष्ट की कील लाकर शत्रु के तड़ाग अथवा पुष्करिणी में डालदेने से उस जलाशय की सम्पूर्ण मछलियों का नाश होजाता है ॥२१॥

अथ तैलिकस्त तैल नाश विधिः।

मधुकाष्ठकीलन्तु चित्रायांचतुरंगुलं ।
निखनेत्तैलशालायां तैलंतत्रविनश्यति ॥२२॥
ओं दहदह स्वाहा। अनेनमन्त्रेणसहस्त्रजपः ।

मूल लिखित "ओंदहदहस्वाहा" यह मन्त्र हजारवार जप कर चार अँगुल प्रमाण मुलेठी के वृक्ष की कील तेली के तेल गृह में दाबकर रखने से उसके समस्त तेल का विनाश होजाता है ॥२२॥

भल्लातकाष्ठंचित्रायां निखनेत्तैलिकेगृहे ।
अष्टांगुलंतदातत्र ग्राहकोनहिगच्छति ॥२३॥

चित्रा नक्षत्र में आठ अँगुलि प्रमाण भिलावे का काष्ट तेली के घर में दाबकर रखने से उसके घर तेल का ग्राहक नहीं आता ॥२३॥

अथ दुग्ध नाश विधिः ।

निक्षिपेदनुराधायां जम्बुकाष्ठस्यकीलकम् ।
अष्टांगुलंगोपगेहे गोदुग्धंपरिणश्यति ॥२४॥

अनुराधा नक्षत्र में आठ अंगुल प्रमाण के जामन की कील लाकर ग्वालिये के घर में डाल देने से उसकी गायों का सब दूध नष्ट होजाता है ॥२४॥

अथ शाक नाश विधि ।

गन्धकंचूर्णितंतत्र निक्षिपेज्जलमिश्रितम् ।
नश्यन्तिसर्व्वशाकानि शेषाण्यल्पफलानिच २५

जलके सङ्ग गन्धक का चूर्ण मिलाकर खेत में छिड़कने से वहां का सब शाक निस्तेज होकर क्रमसे ध्वन्श होजाता है २५

अथ ताम्बूल नाश विधि ।

नवांगुलंपूगकाष्ठ कीलकंनिक्षिपेद्गृहे ।
ताम्बूलिकस्यक्षेत्रेवा ऋक्षेशतभिषाऽव्हये ॥२६॥
तदातस्यचताम्बूलं नाशयत्याशुनिश्चितम् २७

शतभिषा नक्षत्र में नव अँगुलि प्रमाण सुपारी के काष्ट की कोल लाकर तँबोली के घर अथवा खेत में डाल देने से उसके ताम्बूलों का नाश होता है, इसमें सन्देह नहीं २६ २७

अथ मदिरा नाश विधिः।

षोड़शांगुलकंकीलं कृत्तिकायांसिताकंजम।
शौण्डिकस्यगृहेक्षिप्तं मदिरांनाशयत्पलम् २८

कृत्तिका नक्षत्र में सोलह अँगुलि प्रमाण सफेद आक की कोल लाकर, शौण्डिक (अर्थात् कलार) के घर में डालने से उसकी मदिरा का नाश होजाता है ॥२८॥

इति मारणँ।

अथ काम्य सिधिः।

पुष्यार्केतुसमाग्रह्य मूलंश्वेतार्कसम्भवं।
अंगुष्ठप्रतिमांतस्य प्रतिमांतुप्रपूजयेत् ॥२९॥
गणनाथस्वरूपान्तु भक्त्यारक्ताश्वमारजैः।
कुसुमैश्चापिगन्धाद्यैर्हविष्याशीजितेन्द्रियः ३०

पूजयेद्दाममन्त्रैश्च तद्वीजानिनमोऽन्तकैः ।
यान्यान्प्रार्थयतेकामान्मासैकेनतुतान्लभेत् ।
प्रत्येककाम्यसिध्यर्थं मासमेकंप्रपूजयेत् ।
गणेशवीजमाह। पश्चान्तकंऊँअन्तरीक्षायस्वाहा ॥
अनेनपूजयेत्। ऊँह्रींपूर्व्वंदयां ऊँह्रींफट्स्वाहा ॥
अनेनमन्त्रेणरक्ताश्वमारपुष्पाणि घृतक्षौरयुता-
निजुहुयात्। वाञ्छितंददाति। ऊँ ह्रींश्रीं मानसे
सिद्धिकरि ह्रीं नमः। अनेनमन्त्रेणरक्तकुंसुममेकं
जप्त्वानित्यंक्षिपेत् एवंलक्षंजपेत्। ततोभगवती
वरदाअष्टगुणानामेकगुणंददाति ।

पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार के दिन एक अँगुलि प्रमाण सफेद आक की जड़ लाकर उसके द्वारा अँगुष्ठ प्रमाण गणेशजी की मूर्त्ति बनावे । फिर जितेन्द्रिय और हविष्यान्न भोगी होकर भक्ति सहित लालकनेर के पुष्प और गन्ध द्रव्यादि उपहार द्वारा वीज मन्त्र से उसकी अर्चना करै । इस प्रकार करने से जिसकी जो वासना हो, एक मास में वह सफल होती है । किन्तु प्रत्येक वासना की सिद्धि के लिये प्रतिवार एक

महीने तक इस मूर्त्ति की अर्चना करै "ऊोंअन्तरीक्षायस्वाहा" इस मन्त्र से पूजा करनी कर्त्तव्य है। फिर "ऊोंह्रींपूर्व्वदयां फट्स्वाहा" इस मन्त्र से घृत और शहत मिलाकर लालकनेर के फूलों से होम में आहुति दे। इस प्रकार करने से ही देवता वांछा पूर्ण करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन "ऊोंह्रीं श्रींमानमेसिद्धिकरिह्रींनमः" एक लाल पुष्प यह मन्त्र पढ़कर उसको निक्षेप करे। इस प्रकार से इस मन्त्र का एकलाख जप करने से वरदाता भगवती प्रसन्न होकर सब प्रकार के मनोरथ पूर्ण कर देंगी ॥२९॥ ॥३०॥ ॥३१॥ ॥३२॥

अथ वाक् सिद्धिः।

कृत्तिकायांस्नुहीवृक्ष वन्दाञ्चधारयेत्करे।
वाक्यसिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्य्यमिदंस्मृतं ३३
अनेनग्राहयेत्स्वाती नक्षत्रेवदरीभवं।
वन्दाकंतत्करेधृत्वा यद्वस्तुप्रार्थ्यतेजनैः।३४।
तत्क्षणात्प्राप्यतेसर्व्वं मन्त्रमत्रेवकथ्यते।
ऊोंअन्तरीक्षाय स्वाहा। अनेनग्राहयेत् ॥३५

अब वाक्य सिद्धि कथन करते हैं ।—कृतिका नक्षत्र में मूल लिखित मन्त्र से जप करके थूहर के बृक्ष का बन्दा हाथ में धारण करने से वाक्य सिद्धि होती है । स्वांती नक्षत्र में उक्त मन्त्र से बेरी के बृक्ष का बन्दा लाकर हाथ में धारण करने से जिस जिस वस्तु की कामना की जाय, वही द्रव्य तत्क्षणात् प्राप्त होती है ॥३३॥ ॥३४॥ ॥३५॥

अथ धन धान्यादि नामक्षय प्रकरणम्

वन्दाकन्तुमघाऋक्षे वहुवारकवृक्षजम् ।
धान्यागारेप्रदातव्य मक्षयंभवतिध्रुवम् ॥३६॥

मघा नक्षत्र में बहुवारक बृक्ष का बन्दा लाकर धान्यागार में स्थापन करने से वहां का धान्य अक्षय होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥३६॥

शेफालिकायांवन्दाकं हस्तायाश्चसमुद्धरेत् ।
धान्यमध्येतुसंस्थाप्य तद्धान्यंमक्षयंभवेत् ३७

हस्त नक्षत्र में हारसिंहार का बन्दा लाकर धान्य में रखने से वह धान्य अक्षय होता है ॥३७॥

भरण्यांकुशवन्दाकं गृहीत्वास्थापयेद्बुधः ।
सम्पूर्णधनधान्यान्तः स्थःकरोत्यक्षयंध्रुवं ३८

बुद्धिमान व्यक्ति भरणी नक्षत्र में कुशा का वन्दा लाकर धन धान्य में रखने से वह धन धान्य अक्षय होता है, इस में सन्देह नहीं ॥३८॥

उडुम्बरस्यवन्दाकं रोहिण्यांग्राहयेद्बुधः ।
स्थापयेद्सञ्चितार्थान्तः सदाभवतिचाक्षयं ३९

ॐनमोधनदायस्वाहा । मन्त्रेणमन्त्रितंकृत्वामन्त्रं अत्रैवकथ्यते ।

बुद्धिमान व्यक्ति रोहिणी नक्षत्र में गूलर के बृक्ष का वन्दा लाकर मूल लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित कर यह मन्त्र पाठ पूर्वक सञ्चित धन में रखने से वह अक्षय होता है ॥३९॥

अथ किन्नरी करणम्

अर्थात्

किन्नरी की समान मधुर कण्ठ ध्वनि करने का प्रकर्ण

जातीपत्रंकणालाजा मातुलुङ्गदलंमधु ।
पलंलेह्यंभवेन्नादः किन्नराधिकएवच ॥४०॥

जाती वृक्ष के पत्ते, जीरा, खोलें, और बिजौरा नींबू के पत्ते और शहत एकत्र मर्दन पूर्वक आठ तोला चाटने से किन्नर की अपेक्षा से भी उत्तम स्वर होता है ॥४०॥

शुण्ठीचशर्कराचैव क्षौद्रेणसहसंयुता ।
कोकिलस्वरएवस्याद् गुटिकाभुक्तिमात्रतः ४१

चीनी और शहत के सङ्ग सोंठ का चूर्ण मिलाकर गुटिका करै। इस गुटिका का सेवन करने से ही कोकिला की समान कण्ठ का स्वर होता है ॥४१॥

निर्गुण्डीमूलचूर्णन्तु तिलतैलेनयोलिहेत् ।
कण्ठशुद्धीर्भवेत्तस्य किन्नरैःसहगीयते ॥४२॥

तिलों के तेल में निर्गुण्डी वृक्ष की जड़ का चूर्ण मिलाकर चाटने से वह किन्नर के सङ्ग गाने में समर्थ होता है ॥४२॥

त्रिभीतकंकणाशुण्ठी सैन्धवंत्वक्समंसमं।
गोमूत्रेणपिवेत्कर्षं किन्नरैःसहगीयते ॥४३॥

बहेड़ा, जीरा, सोंठ, सेंधा, और दालचीनी तुल्य परिमाण लेकर गोमूत्र के सङ्ग मिलाकर दो तोला सेवन करने से कण्ठ स्वर ऐसा मधुर होता है कि वह पुरुष किन्नर के सङ्ग गान करने में समर्थ होजाता है ॥४३॥

अथ चक्षुष्य प्रकरणम्

श्वेतपुनर्नवामूलं घृतपिष्टंसदाञ्जयेत् ।
जलस्रावंनिहन्त्याशु तन्मूलञ्चनिशायुतम् ४४
अञ्जनेनेत्ररोगाणि नभवन्तिकदाचन ।

सफेद विषखपरे की जड़ घी के सङ्ग पीसकर नेत्रों में अञ्जन लगाने पर आंखों से जल गिरने का रोग शान्त होता है। और यही जड़ दारुहल्दी के सङ्ग पीसकर जो व्यक्ति नेत्रों में अञ्जन लगाता है, उसको कभी नेत्र रोग नहीं होता

शम्बुकस्त्वावराटस्वा दग्धंशुष्कंविचूर्णितं ।
अंजयेन्नवनीतेन हन्तिपुष्पंचिरन्तनं ॥४५॥

घोंगा या कौड़ी की भस्म का चूर्ण मक्खन के सङ्ग मिलाकर नेत्र में अञ्जन लगाने से नेत्र का पुराना फूला नष्ट होजाता है ॥४५॥

वर्षाकालेकाकमाची समूलातैलपाचिता ।
खादेत्समासतश्चक्षु गृध्रदृष्टिर्भवेत्समं ॥४६॥

वर्षा ऋतु में काकमाची नामक एक प्रकार का छोटा वृक्ष उत्पन्न होता है, उसको जड़ समेत तेल के सङ्ग पाक करके

वह तेल एक महीने तक सेवन करने से गृद्ध की समान दृष्टि शक्ति उत्पन्न होती है ॥४६॥

अजस्यकृष्णमांसान्तः पिप्पलीमरिचंक्षिपेत् ।
कारयित्वाघृतेपाच्यं घटिकान्तेसमुद्धरेत् ४७
मध्वाज्यस्तन्यसंपिष्टं रात्र्यन्धहरमञ्जनं ॥४८॥

काली बकरी के मांस के बीच पीपल और मिर्च भरके एक घण्टा तक घी में पकावे । फिर इस पीपल और मिर्च को घी से निकालकर शहत, घी, और स्त्री के दूध के साथ मिलाकर घिसे । इसको आंख में लगाने से रतोंधा जाता रहता है ॥४७॥ ॥४८॥

जयन्तीचाभयावाथ पिष्ठास्तन्यैर्निशारुहृत् ।
शोणितंचर्म्मकोपञ्च मांसवृद्धिश्चनाशयेत् ।४९।

हरीतकी (हरड़) अथवा जयन्ती के बीज, स्तन के दूध में पीसकर आंखों में अञ्जन लगाने से रतोंधा, नेत्रों से जलस्राव, चर्म कोप, और मांस बृद्धि आदि रोग का नाश होता है ॥४९॥

हरीतकीवचाकुष्ठं पिप्पलीमरिचानिच ।

विभीतकस्यमज्जाच शङ्खनाभिर्म्मनःशिला ५०
सर्व्वमेतंसमंकृत्वा छागोक्षीरेणपेषयेत् ।
नाशयेत्तिमिरंकण्डुं पटलान्यर्व्वुदानिच ।५१।
अधिकानिचमांसानि यस्यरात्रौनपश्यति ।
अपिद्विवार्षिकंपुष्पं मासेमेकेननाशयेत् ॥५२॥
वर्त्तिश्चन्द्रोदयानाम नृणांदृष्टिप्रसादिनी ।
छायाशुष्कावटीकार्य्या नामचन्द्रोदयावटी ५३

हरीतकी, वच, कूठ पीपल, मिर्च, बहेडे की मज्जा, नाभिशङ्ख, मनशिला, यह सब द्रव्य एक भाग लेकर बकरी के दूध में मर्दन पूर्वक गोली बनाय छाया में सुखावे। इस गोली को चन्द्रोदया वर्त्ति कहते हैं। इसके द्वारा नेत्र में अञ्जन लगाने से चक्षुतिमिर रोग, खुजली, पलट अर्बुद, अधिकमांस वृद्धि, रात्रि में न दीखना, इन सब का नाश होजाता है यह महौषधि एक मास तक व्यवहार करने से दो वर्ष के फूले का नाश होता है, इस चन्द्रोदयावर्त्ति के द्वारा दृष्टि को मसन्नता होती है, ॥५०॥ ॥५१॥ ॥५२॥ ॥५३॥

यस्त्रैफल्वंचूर्णमपथ्यश्वर्जी सायंसमश्नातिहवि

मधुभ्यांसमुच्यतेनेत्रगतैर्विकारैर्भृत्यैर्यथाक्षीण धनोमनुष्यः ॥५४॥

जो मनुष्य कुपथ्य त्यागकर सन्ध्या के समय घृत और शहत मिश्रित त्रिफले का चूर्ण सेवन करता है, वह दरिद्रो के लिये भृत्य की समान सब प्रकार के नेत्र रोग से छूटजाता है ५४

बधिरतानाशनं कीटविनाशनं श्रुति शक्ति वृद्धि करणंच

दशमूलकषायेण तैलप्रस्थंविपाचयेत्।
एतत्कल्कंप्रदायैव बाधिर्य्यैपरमौषधं॥५५॥

दशमूल के काढे के साथ एक अन्श तेल डालकर अच्छी प्रकार पाक करे। पाक के समय पुनर्वार दशमूल डालकर सिद्ध करे। इस प्रकार जो औषधि होती है, उससे बधिरता का नाश होता है * ॥५५॥

मनःशिलापामार्गोऽथ मूलंचूर्णमधुप्लुतं।

* बेल, पलाश कम्भारी पारुल, गनियारी शाल्पाणि, पाकुल्या सेमर गोखरू, ध्याकुड, इमकाही नाम दशमूल हैं।

भक्षयेत्कर्षमात्रन्तु वधिरत्वप्रशान्तये ॥५६॥

मनशिल, चिरचिरे की जड़ का चूर्ण शहत में मिलाकर उसको दो तोला सेवन करने से बधिरता दूर होती है ॥५६॥

लशुनामलकंतालं पिष्ट्वातैलेचतुर्गुणे ।
तैलाच्चतुर्गुणंक्षीरं पाच्यंतैलावशेषितं ॥५७॥
तत्तैलंनिक्षिपेत्कर्णे बाधिर्य्यञ्चविनाशयेत् ५८

लहसुन, आमला, हरिताल, यह तीन वस्तु सम भाग लेकर सब द्रव्यों से चतुर्गुण तेल सङ्ग यह सब द्रव्य मर्दन करै अनन्तर तेल से चतुर्गुण दूध के सङ्ग यह सब द्रव्य पाक करै। जब दूध जलकर तेल मात्र बाकी रहै, तो यही तेल कान में डालने से बधिरता दूर होती है ॥५७॥ ॥५८॥

दन्तेनचर्व्वयेन्मूलं नन्द्यावर्त्तपलाशयोः ।
तन्नालीपूरितेकर्णे ध्रुवंगोमक्षिकाव्रजेत् ॥५९॥

तगर, और ढाक के बृक्ष की जड़ दांतों से चाबकर वह चर्व्वित वस्तु अथवा उसका रस कानों में डालने से गोमक्षिका नामक कीड़े का बिनाश होता है ॥५९॥

नीलीत्रभररसेतैलं सिद्धंकाञ्जिकसंयुतं ।

कटुश्चपूरणात्कर्णे निःशेषक्रमिनाशनः॥६०॥

नोली आक वृक्ष की जड़ कांजी के सङ्ग मिलाकर तेल में पाक करके गर्म रहते रहते कान में डालने से कोड़ा नष्ट होता है॥६०॥

वराहोत्थेनतैलेन लेपात्कर्णविवर्द्धयेत्।
चर्म्मचटकरक्तेन लेपात्कर्णविवर्द्धयेत्॥६१॥

शूकर का तेल अथवा चिड़े के रक्त द्वारा कान में लेप प्रदान करने से कानों की शक्ति बढ़ती है॥६१॥

अश्वगन्धावचाकुष्ठं गजपिप्पलिकासमं।
महिषीनवनीतेन लेपात्कर्णविवर्द्धते॥६२॥

असगन्ध, वच, कूठ, गज पीपल, यह सब द्रव्य बराबर लेकर चूर्ण करके भैंस के मक्खन में मिलाकर कानों में लेप करने से श्रुति शक्ति की वृद्धि होती है॥६२॥

सिद्धार्थंवृहतीचैव ह्यपामार्गसमंसमं।
छागीक्षीरैःप्रलोपोऽयं कर्णपालींविवर्द्धयेत्॥६३॥

सफेद सरसों, वृहती, और चिरचिरे को जड़ यह सब समभाग लेकर मर्दन पूर्वक बकरी के दूध में मिलाकर कानों में लेप करने से कर्णपाली की वृद्धि होती है॥६३॥

॥ दन्त दृढी करणम् ॥

ताम्रपात्रेक्षणंपाच्य मभयाचूर्णकंमधु ।
पिष्ट्वाचगुटिकाकार्य्या दन्तैर्धार्य्याक्रमिंहरेत् ६४

हरड़ का चूर्ण शहत के सङ्ग मिलाकर तांबे के बर्तन में थोड़ी देर पाक करे । अनन्तर भली प्रकार पीसकर गोली बनावे । यह गोली मुख में धारण करने से दांत के कीड़े का विनाश होजाता है ॥६४॥

दन्तैर्धार्य्यस्नुहीमूलं क्रमिनाशंकरोत्यलं ।
कासीसंघृतसम्पकं धार्य्यंदन्तेऽव्यथापहम् ।६५।

कसीस के वृक्ष की जड़ दांतों में स्थापन करने से दांत के कीड़े का नाश होता है । कसीस को घृत में भूँनकर जिस दांत में वेदना हुई है, उसी में धारण करने से दांतों की व्यथा दूर होती है ॥६५॥

जातीकोलकपत्रंवा चर्व्वयेत्प्रातरुत्थितः ।
स्थिराःस्युश्चलितादन्ता स्ततत्काष्ठैर्दन्तधारणात् ६६

जाती वृक्ष के पत्ते, वा मरिच के पत्ते, प्रातःकाल के समय चाबकर इन्हीं वृक्षों की शाखा द्वारा दतोन करने से चलित दन्त पुनर्वार बद्धमूल होते हैं ॥६६॥

उद्धृतदन्तस्थिरकरं कार्य्यंवकुलचव्वंणं ।
वकुलस्यचवीजन्तु पिष्ट्वाकोष्णेनवारिणा ।६७।
मुखेचधारयेद्धीमान् दन्तदार्ढ्यकरंपरं ।

जो दांत उखड़ने को होगया हो, मौलसिरी के फल चा-वने से वह मजबूत होजाता है। मौलसिरी के बीज कूट कर जल में पकावे, उसके पानी का कुल्ला करने से भी दांत दृढ़ होते हैं ॥६७॥

वकुलस्यत्वचःकाथ मुष्णंरक्तेणधारयेत् ।
दृढ़ाःस्युश्चलितादन्ताः सप्ताहान्नात्रसंशयः ६८

मौलसिरी के बृक्ष को छाल जल में पाक करके उस गरम काथ का सातदिन कुल्ला करने से चलित दन्त पुनर्बार बद्धमूल होते हैं ॥६८॥

॥ सर्प विद्या ॥

ब्राह्मणाःश्वेतवर्णास्तु क्षत्रियारक्तवर्णकाः ।
वैश्यास्तुपीतवर्णास्युः कृष्णवर्णास्तुशूद्रकाः ६९

सफेदवर्ण का सर्प ब्राह्मण-जाति, लालवर्ण का क्षत्रिय,

पीलेवर्ण का वैश्य, और कालेवर्ण का सर्प शूद्र जाति का कहा गया है ॥६९॥

अनन्तःकुलिकश्चैव वासुकिःशङ्खपालकः ।
तक्षकश्चमहापद्मः कर्कोटःपद्मएवच ॥७०॥
कुलनागाष्टकंह्येतत् तेषांचिह्नंशिवोदितम् ७१

नागकुल आठ प्रकार का हैः—अनन्त, कुलिक, वासुकि, शङ्खपालक, तक्षक, महापद्म, कर्कोट, और पद्म। शिव जी ने इन आठ प्रकार के नागों के जो समस्त पृथक चिन्ह कीर्त्तन किये हैं, वह नीचे लिखे जाते हैं ॥७०॥ ॥७१॥

श्वेतपद्ममनन्तस्य मूर्द्धनिपृष्ठेचदृश्यते ।
शङ्खशेषस्यशिरसि वासुकेःपृष्ठउत्पलम् ॥७२॥
त्रिनेत्राङ्कस्तुकर्कोट स्तक्षकःशशकाङ्कितः ।
ज्वलत्रिशूलचन्द्रार्द्ध शङ्खपालस्यमूर्द्धनि ।७३।
राजवत्तुसमोविन्दु र्म्महापद्मस्यपृष्ठतः ।
पद्मपृष्ठेचदृश्यन्ते सुरक्ताःपश्चविन्दवः ॥७४॥
एवंयोवेत्तिजात्यादीन् नामचिह्नंशिवोदितम् ।
तस्यमन्त्रौषधान्येव सिध्यन्तेनान्यथापुनः ७५

दूरतस्तस्यसर्पाद्याः पतन्तिगरुडेयथा ।
कालाख्यानामतच्चिन्ह शिवोनोक्तंयथापुरा ७६

मस्तक और पीठ पर श्वेत पद्म चिन्ह होने से अनन्त, मस्तक पर शङ्ख का चिन्ह होने से कुलिक, पीठपर कमल का चिन्ह होने से वासुकि, अङ्क में त्रिनेत्र का चिन्ह होने से कर्कोट, गात्र में शशकाकृति चिन्ह होने से तक्षक, शिर में त्रिशूल और अर्द्धचन्द्राकार चिन्ह होने से शङ्खपाल, राजवत् बिन्दु पीठ में होने से महापद्म, और पीठ में रक्तवर्ण पद्मबिन्दु चिन्ह होने से पद्मनाग कहते हैं। इस प्रकार चिन्ह देख कर जो व्यक्ति शिवोक्त सर्पगणो की जाति और नाम जानने में समर्थ होता है, उसके ही मन्त्र और औषधि सफल होती है और गरुड़ के समान उसके दर्शन मात्र से ही सर्पगण दूर प्रस्थान करते हैं।।७२।।७३।।७४।।७५।।७६।

ज्ञेयोदशविधोदंशो भुजाङ्गानांभिपग्वरैः ।
भीतोन्मत्तःक्षुधार्त्तश्च आक्रान्तोविपदर्पितः७७
आहारेच्छुःसरोपश्च स्वस्थानपरिरक्षणे ।
नवमोवैरिसन्धानो दशमःकालसंज्ञकः ॥७८॥

सर्पगणों के दांत दशप्रकार के हैं, यथा;—भीत, उन्मत्त, क्षुधार्त्त, आक्रान्त, विषदर्पित, आहारेच्छु, रोषयुक्त, अपने स्थान की रक्षा करने में चेष्टित, बैरी के ढूँढने में यत्नवान, और काल ॥७७॥ ॥७८॥

उद्यानेजीर्णकूपेच वटशृङ्गाटचत्वरे ।
शुष्कवृक्षेश्मशानेढ प्लक्षश्लेष्मातशिग्रुके ॥७९॥
देवतायतनागारे तथाचशाकवृक्षके ।
एषुस्थानेषुयेदष्टा स्तेनजीवन्तिमानवाः ॥८०॥

बाग में, पुराने कुए पर, वट बृक्ष पर, सूखे बृक्ष पर, श्मशान में, पाकड के बृक्ष पर, देवमन्दिर, और शाक बृक्ष पर इन सब स्थानों में काटने से मनुष्य की मृत्यु होती है ७९ ८०

भ्रूमध्येचाधरेमूर्द्धनि जंघेनेत्रेभ्रुवोस्तथा ।
ग्रीवाचिवुककण्ठेषु करमध्येचतालुके ॥८१॥
स्तनयोःस्कन्धयोःकुक्षौ लिङ्गवृषणनाभिषु ।
मर्म्मसन्धिषुसर्व्वत्र सर्पदष्टोनजीवति ॥८२॥

भ्रूमें, अधर, शिर, जङ्घा, चक्षु, दोनों भौंए, ग्रीवा, ठोड़ी, कण्ठ, हाथ, तालु, स्तन, कन्धा, कोख, लिङ्ग, अण्ड-

कोष, नाभि, मर्म, और संन्धि स्थान में यदि सर्प काटे, तो वह मनुष्य शयन भवन में गमन करता है ॥८१॥ ॥८२॥

रवौभोमेशनिर्व्वारे सर्पदष्टोनजीवति ।

अष्टमीपञ्चमीपूर्णा अमावस्याचतुर्द्दशो ॥८३॥

अशुभास्तिथयःप्रोक्ता सर्पदष्टविनाशिकाः ।

रवि, मङ्गल, और शनिवार के दिन सांप के काटने से निश्चय मृत्यु होती है। अष्टमी, पञ्चमी, पूर्णिमा, अमावश, चतुर्दशी तिथि को काटने से भी यही फल जानना चाहिये ८३

कृत्तिकाश्रवणामूला विशाखाभरणीतथा ।

पूर्व्वास्तिस्त्रस्तथाचित्रा श्लेषादष्टोनजीवति८४

कृत्तिका, श्रवण, मूला, विशाखा, भरणी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुणी, चित्रा और अश्लेषा, इन सब नक्षत्रों में काटने से उसके जीने की आशा नहीं है ॥८४॥

मध्याह्नेसन्ध्ययोश्चैव अर्द्धरात्रेनिशात्यये ।

कालवेलावारवेला सर्पदष्टोनजीवति ॥८५॥

मध्याह्न, दोनों सन्ध्या के समय, आधीरात, रात्रि के अन्त में कालवेला और वारवेला में जिसको सर्प काटता है, वह नहीं जीता है ॥८५॥

सर्पस्यतालुकामध्ये दन्तोयोऽकुशसन्निभः ।
विमुञ्चतिविषंघोरं तेनाथंकालसंज्ञकः ॥८६॥

विष के दांत सर्प के तालु में रहते हैं; उनके द्वारा सर्प कालकूट विष बाहर निकालता है। वही विष प्राणनाशक है, इसी कारण उसको कालस्वरूप कहा जाता है ॥८६॥

चक्राकृतिश्चवादंशः पक्कजम्बुफलाकृतिः ।
सुनीलःश्वेतरक्तोवा त्रिदशोऽपिनजीवति ८७

जिस स्थान में सर्प काटे, वह थल चक्राकृति, पाप की जामन की आकृति, वा नील, सफेद अथवा लालवर्ण होने से उस रोगी की रक्षा करने में देवता भी समर्थ नहीं हैं।८७।

वेदनादंशमूलेवा नष्टदंशोऽथवाभवेत् ।
तत्क्षणातीव्रदाहश्च सोऽपिकालेनभक्षितः ८८

जिस स्थान में दांत लगे, वह स्थल अत्यन्त वेदना युक्त होने से वा दांत के चिन्ह न दीखने से और काटने पर ही बदन में तीव्रदाह होने से वह मनुष्य मरजाता है ॥८८॥

सेचनादुदकेनाथ शीतलेनमुहुर्म्मुहुः ।
रोमाञ्चोनभवेद्यस्य तंविद्यात्कालभक्षितम्।८९।

बारम्बार शीतल जल का छींटा डालने से भी यदि सर्प के काटे रोगी की देह पुलकित न हो, उसको शमन गृह में गमन करना होता है ॥८९॥

स्रवेन्मूत्रंपुरीषंवा ह्रच्छूलंछर्दिंदाहकृत् ।
सानुनासिकयावाक्यं सन्धिभेदमथापिवा ९०
ताम्राभंनेत्रयुगलं अथवाकाकनीलकम् ।
वियोगोदेवदष्टाख्य स्तंविद्यात्कालपार्श्वगम् ९१

सर्प से काटे हुए मनुष्य के मृत्यु लक्षण, यथाः—मलमूत्र त्याग, हृदशूल, वमन, गात्रदाह, नाक के स्वरों से बात करना, सन्धिस्थल में वेदना, और दोनों नेत्र ताम्रवर्ण अथवा नीलवर्ण ॥९०॥ ॥९१॥

सोमंसूर्य्यंतथादीप्त नपश्यतिचतारकन् ।
दर्पणेसलिलेवाथ घृततैलेथवामुखम् ॥९२॥
नपश्येद्वीक्ष्यमाणोऽपि कालदष्टोनसंशयः ९३

सर्प के काटने पर रोगी के नेत्रों से यदि चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र न दीखें और दर्पन, पानी, घृत अथवा तेल में अपना मुख न दीखे, तो उसे काल के गाल में जाना होता है, इस में संशय नहीं ॥९२॥ ॥९३॥

ज्ञात्वाकालमकालञ्च पश्चाद्भेषजमाचरेत् ।
सर्पदंशेविषंनास्ति कालदष्टोनजीवति ॥९४॥
तस्यतत्रापिकर्त्तव्या चिकित्साजीवनावधि ।
रसदिव्यौषधीनाञ्च प्रभावात्कालजिद्भवेत् ९५

सर्प से काटे रोगी की अवस्था जानकर पीछे औषधि प्रयोग करै । काटने पर हो जो शरीर विषाक्त हो, यही नहीं, वरन काल दँशन से मृत्यु निश्चय होती है, परन्तु तो भी जीवनावधि चिकित्सा करनी उचित है, क्या रस और दिव्य औषधियों के प्रभाव से काल पराजित नहीं होसकता है ।

सर्प विषौषधि कथनम्

श्वेतापराजितामूलं देवदानीयमूलकम् ।
वारिणापेषितंनस्यं कालदष्टोऽपिजीवति ९६

जल के सङ्ग सफेद विष्णु कान्ता और बड़ी तोरई की जड़ पीसकर हुलास सूँघने से सर्प से काटा हुआ रोगी आरोग्यता लाभ करता है ॥९६॥

दधिमधुनवनीतं पिप्पलीशृङ्गवेरं

मरिचमपिचकुष्ठं चाष्टमंसैन्धवञ्च ।
यदिदशतिसरोषस्तक्षकोवासुकिर्व्वा
यमसदनगतःस्या दानयेत्तत्क्षणेन ।९७।

दही, शहत, मक्खन, पीपल, अर्द्रक, गोलमरिच, कूठ, और सेंधा यह आठवस्तु सेवन करने से क्रुद्ध तक्षक वा वासुकी कर्तृं दष्ट व्यक्ति भी तत्क्षणात् यमालय से लौट आता है।९७।

कटुकीमूपलीमूलं पीत्वातोयेऽविषापहः ।
वृश्चिकावीरणामूलं लेपात्सर्पविषापहम् ।९८।

जल के सङ्ग कुटकी और तालमूली चूर्ण मिलाकर सेवन करने से सर्प का विष ध्वन्श होता है । बीछू का भी खसकी जड़ पीसकर लेप करने से विष नाश होता है ॥९८॥

सोमराजीबीजचूर्णं सकृद्गोमूत्रभावितम् ।
चराचरविषघ्नन्तं मृतसञ्जीवनंपिवेत् ॥९९॥

गोमूत्र में सोमराजी के बीज के चूर्ण की भावना देकर लेने से वह मृत्यु सञ्जीवनी की समान होती है । इस औषधि का सेवन करने से स्थावर जङ्गम दोनों का विषध्वन्श होता है ॥९९॥

गोमूत्रैर्नरमूत्रैर्व्वा पुराणेनघृतेनवा ।
हरिद्रापानमात्रेण विषंहन्तिचराचरं ॥१००॥
दशवर्षात्परंसर्पिः पुराणमितिकथ्यते ।

गोमूत्र, नरमूत्र, अथवा पुराने घी में हलदी मिलाकर सेवन करने से सम्पूर्ण स्थावर जङ्गम का विष नष्ट होता है। दशवर्ष से अधिक दिन का घृत होने से ही उसको पुराना घी कहते हैं ॥१००॥

यदिसर्पविषार्त्तानां सर्व्वस्थानगतंविषं ।
गोक्षीरैरजनीकाथ्यं पिवेत्सर्पविषापहम् १०१

सर्प से काटे हुए व्यक्ति को सर्वदेह विषाच्छन्न होने पर गाय के दूध सहित हलदी का काढ़ा सेवन करने से आरोग्यता लाभ करता है ॥१०१॥

गोक्षीरैरजनीकुष्ठं काथ्यमानंविषापहम् ।
हरिद्राकुष्ठमध्वाज्यं भुक्तंसर्व्वविषापहम् १०२

हलदी और कूठ इन दोनों का काढ़ा गाय के दूध में मिलाकर सेवन करने से विषध्वन्स होता है। हलदी, कूठ, शहत, और घृत, यह सब द्रव्य एकत्र कर सेवन करने से सब प्रकार का विष नष्ट होता है ॥१०२॥

कटुकीजम्बुमूलम्वा तक्राम्लैर्वापिबेज्जलैः।
तत्क्षणाद्वमयेच्छीघ्रं विषयोगाद्विमुच्यते १०३

देह में विष के पहुँच जाने पर कुटकी फल अथवा जामन की जड़ खट्टे मट्ठे के सङ्ग पीसकर जलके सङ्ग सेवन करने से तत्काल वमन होकर देह स्वस्थ होती है ॥१०३॥

कुंकुमालक्तकंलोध्रं शिलाश्चैवाथरोचना।
गुटिकालेपनाद्धन्ति विषंस्थावरजङ्गमम् १०४

रोली, महावर, लोध, मनशिल, और गोरोचन, यह सब द्रव्य एकत्र पीसकर गोली बनावे। देह में विष पहुँचजाने पर इस गोली का लेप करने से स्थावर, जङ्गम दोनों का विषध्वन्श होता है ॥१०४॥

पिप्पलीमरिचंकुष्ठं गृहधूमंतमनःशिलाम्।
तालकंसर्षयाःश्वेता गवांक्षीरेणलाडयेत् १०५
गुटिकाञ्जननस्येन पानाभ्यञ्जनलेपनात्।
तक्षकेनापिदष्टस्य निर्विषीकुरुतेक्षणात् १०६

पीपल, मरिच, कुड, गृहधूम, मनशिल, हरताल और सफेद सरसों, यह सब वस्तु एकत्र कर गाय के दूध में अच्छी

प्रकार मर्दन करै। अनन्तर उसका अञ्जन, नस्य (हुलास) अभ्यङ्ग और शरीर पर लेप करने से तक्षक दृष्टरोगी शीघ्र आरोग्य होता है ॥१०५॥ ॥१०६॥

अपराजितामूलन्तु घृतेनत्वग्गतंविषम् ।
पयसारक्तगंहन्ति मांसगंकुष्ठचूर्णतः ॥१०७॥
अस्थिगंरजनीयुक्तं मेदोगंकाकलीयुतम् ।
मज्जागंपिप्पलीयुक्तं चण्डालीकन्दसंयुतम् १०८
शुक्रगंहन्तिलोहितं तस्मादेयापराजिता १०९

अपराजिता की जड़ घी में मिलाकर सेवन करने से चर्मगत विषध्वन्श होता है, अपराजिता की जड़ दूध के सङ्ग सेवन करने से रक्तगत-विष होता है। कुट के चूर्ण सहित उसका सेवन करने से मांसगत-विष, हलदी के सङ्ग सेवन करने से अस्थिगत-विष, काकली के सङ्ग सेवन करने से मेदोगत-विष, पीपल के सङ्ग सेवन करने से मज्जागत-विष, और चाण्डाली की जड़ के सङ्ग सेवन करने से शुक्रगत-विष दूर होजाता है। अतएव देह विष सँयुक्त होने पर ही अपराजिता की जड़ का प्रयोग करना कर्त्तव्य है।१०७। ।१०९।

अत्यन्तविषरोगार्त्तान् जलमध्येविनिक्षपेत् ११०

सर्पदष्ट रोगी को जल में डालने से भी विशेष फल दि-खाई देता है ॥११०॥

मसूरंनिम्बपत्राभ्यां खादेन्मेषगतेरवौ।
अब्दमेकंनभीतिःस्या द्विषार्त्तस्यनसंशयः॥१११

मेष की सँक्रान्ति के दिन, मसूर और नीम के पत्ते सेवन करने से एक वर्ष तक किसी प्रकार के विषोक्त जन्तु का भय नहीं रहता ॥१११॥

मसूरंनिम्बपत्राभ्यां योऽत्तिमेषगतेरवौ।
अतिरोषान्वितस्तस्य तक्षकः किंकरिष्यति ११२

बैशाख के महीने में मसूर और नीम के पत्ते सेवन करने से अत्यन्त क्रुद्ध तक्षक भी उसका कुछ अनिष्ट नहीं करसक्ता।

इति सर्प विष निवारण विधिः।

अथ वृश्चिक विष नाशन

शिरोषबीजंगोमेदं दाडिमस्यचमूलकम्।
अर्कक्षीरयुतंहन्ति यूपोवृश्चिकजंविषम् ॥११३॥

सिरस के बीज, गोमेद, और दाडिम की जड़ आक के

दूध में मिलाकर धूप देने से बीछू का विष दूर होता है ॥११३॥

हिंगुत्रजललेपेन वृश्चिकोत्थंविषंहरेत् ॥११४॥

जल में हींग पीसकर दष्ट स्थान में लेप करने से विष नष्ट होता है ॥११४॥

कार्पासमूलंचर्वित्वा विषजित्कर्णफूत्कृते ११५

कपास की जड़ दांत से चाबकर वृश्चिक दष्ट रोगी के कान में फूँक मारने से विष दूर होता है ॥११५॥

सिक्थकसप्तधाभाव्य स्नुह्यर्कपयसातपे।

उत्तप्तवह्निनास्पृष्टं दंशस्थाने विषंहरेत् ॥११६॥

किञ्चित् सिक्थ अर्थात् मोम लेकर थूहर और आक के दूध में सातबार भावना दे। अनन्तर उसको अग्नि में तप्त करके दष्ट स्थान में लगाने से वृश्चिक का विष दूर होता है ११६

पुत्रजीवफलान्मज्जा पलाशोत्थंकरञ्जजाम्।

मज्जांतोयैःप्रलेपोयं हन्तिवृश्चिकजंविषम् ११७

जीवपुत्रिका, पलाश, और करञ्ज, इन समस्त फलों के बीजों की मज्जा जलमें मर्दन कर वृश्चिकदष्ट स्थान में लेप करने से विषनाश होता है ॥११७॥

वकुलस्त्वचबीजंवा निष्पीडादंशनस्थले ।
प्रलेपाद्वृश्चिकविष नाशनश्चाभिमन्त्रितं ११८
ओं भ्रं क्रुं यं अं ऊं वं व ल क्ष ए ऐ ओ औ हं हः ।

मौलसिरी के बीजों का गूदा मर्दन पूर्वक वृश्चिक के दष्ट स्थान में लेप करने से निःसन्देह विष दूर होता है । इस मन्त्र से औषधि अभिमन्त्रित करके प्रयोग करना कर्तव्य है ११८

हां हीं म च ओ इति मन्त्रेणओलघृन्तमभि ।
मन्त्र्यतेनमार्जनाद्वृश्चिकविषनाशोभवति ११९
शिवेनभाषितोयोगो नावहेलनीयोह्ययम् १२०

पूर्व लिखित "हांहीं" इत्यादि मन्त्र से जिमीकन्द के डन्ठल को अभिमन्त्रित कर उसके द्वारा दष्ट स्थान में मार्जन करने से विष दूर होता है । स्वयं भगवान् भूतनाथ भवानीपति भोलानाथ ने यह कहा है, अतएव विलम्ब न करें ।११९। ।१२०।

इति वृश्चिक विष नाशनं ।

अथ कुक्कुर विष निवारण विधिः ।

गुडंतैलार्कदुग्धञ्च लेपाच्छुनोविषंहरेत् १२१

गुड़, तेल, आक का दूध यह सब एकत्र मिलाकर कुत्ते के दष्ट स्थान में लेप करने से विष दूर होता है ॥१२१॥

उन्मत्तशुनोदष्टानां कुमारीदलसैन्धवं ।
सुखोष्णं बन्धयेत्पिष्टं त्रिदिनान्ते सुखावहम् १२२

उन्मत्त अर्थात् पागल कुत्ते के काटने पर घृतकुमारी के पत्ते, सैंधानमक में पीसकर अग्नि में गरम करके तीन दिन बांधकर रखने से यह विष दूर होता है ॥१२२॥

अथ विविध जान्तव विष निवारणं

शङ्गिमत्स्यविषस्वेदात्किञ्चिद्घृतसमन्वितात् १२३

यदि मछली सींग का आघात करे, तब उस स्थान में किंचित घृत मर्दनकर अग्निका ताप देनेसे यन्त्रणा नष्ट होती है।

निशादारुनिशाचैव मञ्जिष्ठानागकेशरम् ।
एषांलेपोनिहन्त्याशु विषंलूतादिसम्भवम् १२४

हलदी, दारुहलदी, मजीठ और नागकेसर यह सब द्रव्य एकत्र पीसकर दष्ट स्थान में लेप करने से मकरी का विष ध्वस्त होता है ॥१२४॥

करञ्जवीजसिद्धार्थ तिलैर्लेपोविषापहः ।
एरण्डतैललेपोवा सर्व्वकीटविषापहः ॥१२५॥

करञ्ज के बीज और सरसों तिलों के संङ्ग पीसकर लेप करने से सम्पूर्ण कीट दन्शन का विष दूर होता है ॥१२५॥

॥ इति विषप्रकरणम् ॥

इतिश्री नागभट्ट विरचित कामरत्न तन्त्र रुहेलखण्डान्तर्गत बरेली निवासी ब्रह्मकुलभूषण पं० बांकेलालात्मज श्रीयुत पं० श्यामसुन्दर शर्म्मा विरचित भाषाटीकायां पञ्चमपरिच्छेद समाप्तम् ।



॥ षष्ठः परिच्छेदः ॥

॥ अथ यक्षिणी साधनं ॥

साधारण विधिः ।

सर्व्वासांयक्षिणीनान्तु ध्यानंकुर्य्यात्समाहितः।
भगिनीमातृपुत्रस्त्री रूपतुल्यंयथेप्सितं ॥१॥
भोज्यंनिरामिषं चान्नंवर्ज्यंताम्बूलभक्षणम् ।
उपविश्याजिनादौच प्रातःस्नात्वानकंस्पृशेत् ।२।
नित्यकृत्यञ्चकृत्वातु स्थानेनिर्ज्जनकेजपेत् ।
यावत्प्रत्यक्षतांयान्ति यक्षिण्योवाञ्छितप्रदाः ३

जो कोई यक्षिणी क्यों न हो, अपनी इच्छानुसार किसी को भगिनी, किसी को जननी और किसी को पुत्र वधू की प्रकार से सम्बोधन देकर समाहित मन से ध्यान करे। इस साधना में निरामिष अन्न आहार और ताम्बूल का सेवन परित्याग करना होता है, और प्रातःकाल स्नान कर किसी का भी स्पर्श न करके विशुद्ध भाव से निर्जन स्थान में मृगछाला आदि शुद्ध चर्मासन पर बैठ अपना नित्य कृत्य कर एकाग्र मन

से यक्षिणी मन्त्र का जप करे। जब तक यक्षिणी प्रसन्न होकर अभिलाषित वर देने के अर्थ आविर्भूत न हो, तब तक जप करना चाहिये। इस प्रकार करने से यक्षिणी निःसन्देह प्रत्यक्ष होती है ॥१॥ ॥२॥ ॥३॥

विभ्रमा यक्षिणी साधनं

जपेल्लक्षद्वयंमन्त्रं श्मशाने निर्भयोमुनिः।
दशांशंगुग्गुलुसाज्यं हुत्वातुष्यतिविभ्रमा ॥४॥
ओं ह्रीं विभ्रम रूपे विभ्रमं कुरु कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा।

अब विभ्रमानाम्नी यक्षिणी साधन वर्णन किया जाता है। — निर्भय हृदय से अकेला श्मशान में बैठकर एकाग्र मन से "ओं ह्रीं" इत्यादि मूल लिखित मन्त्र दोलक्ष जप करे। जप के समाप्त होने पर घृत और गुग्गुल द्वारा पचासहजार बार आहुति देनी होती है। इस प्रकार करने से विभ्रमा यक्षिणी निस्सन्देह प्रसन्न होती है ॥४॥

॥ रतिप्रिया साधन ॥

शङ्खलिप्तपटेदेवीं गौरवर्णाधृतोत्पला ।
सर्व्वालङ्कारिणींदिव्यां समालिख्याच्चयेत्ततः ५
जातीपुष्पैःसोपचारैः सहस्रैकंततोजपेत् ।
त्रिसन्ध्यंसप्तरात्रन्तु ततोरात्रिंपुनर्जपेत् ॥६॥
अर्द्धरात्रगतेदेवी समागत्यप्रयच्छति ।
पञ्चविंशतिदीनारान् प्रत्यहंतोपितासती ॥७॥

ॐ ह्रीं रतिप्रिया स्वाहा ।

इस समय रतिप्रिया नाम्नी यक्षिणी का साधन लिखा जाता है ।-प्रथम शङ्खलिप्त पटपर दिव्य रूपिणी सर्वाङ्ग सुन्दरी विभूषिता उत्पल धारिणी गौरवर्णा देवी की मूर्ति खैंच कर अनेक प्रकार के उपचार और जाती पुष्प द्वारा उस देवी की मूर्ति की अर्चना करै । पूजा के शेष में इस मूर्ति का ध्यान कर "ॐ ह्रीं" इत्यादि मन्त्र से एकहजार वार जप करे । एक सप्ताह तक प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में एवं सप्त रात्रि में इस मन्त्र का एकहजार जप करे । इस प्रकार करने से देवी प्रसन्न होकर आधीरात के उपरान्त साधक के समीप प्रगट होंगी

और उसको पञ्चविंशति सुवर्ण मुद्रा दान करैंगी और इसी प्रकार प्रतिदिन अर्पण करती रहैंगी ॥५॥ ॥६॥ ॥७॥

वट यक्षिणी साधनम्

त्रिपथेतुवटस्थाने रात्रौमन्त्रंजपेच्छुचि ।
लक्षत्रयंततःसिद्धा देवीचवटयक्षिणी ॥८॥
वस्त्रालङ्कारकंदिव्यं रससव्वरसायनं ।
दिव्याञ्जनञ्चसातुष्टा साधकायप्रयच्छति ॥९॥

ऊँह्रीं वटवासिनी यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणी एह्येहि स्वाहा ।

रात्रिकाल के समय अकेला त्रिपथ में वट वृक्ष के नीचे जाकर विशुद्ध भाव से "ऊँह्रीं" इत्यादि मन्त्र तीनलाख जपै। ऐसा करने से देवी वट यक्षिणी सिद्धि होती है और वह प्रसन्न होकर साधक को दिव्य वस्त्र विभूषण सम्पूर्ण रसायन, भोज्यद्रव्य और दिव्य अञ्जन प्रदान करती हैं ॥८॥ ॥९॥

वटवृक्षंसमारुह्य लक्षमेकंजपेन्मनुं ।

ततःसप्ताभिमन्त्रेण काञ्जिकैःक्षालयेन्मुखं ।।१०।
मासत्रयंजपेद्रात्रौ वरंयच्छतियक्षिणी ।
रसंरसायनंदिव्यं क्षुद्रकर्म्मंह्यनेकधा ॥११॥
सिद्धानिसर्व्वकार्य्याणिनान्यथाशङ्करोब्रवीत्१२
ॐनमश्चन्द्रायाधावा कर्णकारथस्वाहा । अथवा
ॐ नमोभगवतेरुद्राय चण्डवेगिनेस्वाहा । मन्त्र
द्वयस्यैकएवसिद्धिहेतुः ।

रात्रिकाल में वट वृक्ष के नीचे जाकर मूल लिखित दो अथवा एक मन्त्र का लक्ष जप करे । जप के शेष में सप्ताभिमन्त्रित काँजि से मुख धोवे । इस प्रकार तीन मास करने से यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को वर देती है एवं अनेक प्रकार के रस रसायन, इत्यादि भोज्यद्रव्य प्रदान करती है और साधक के सब कार्य्य सिद्ध और मनोकामना पूर्ण करती है । शिवजी का वचन मिथ्या नहीं होसकता ॥१०॥ ॥११॥ ॥१२॥

शुक्लपक्षेजपेत्तावद् यावद्दृश्येतचन्द्रमाः ।
प्रतिपत्पूर्व्वपूर्णान्तं नवलक्षमिदंजपेत् ॥१३॥
अमृतंचन्द्रिकादत्तं पीत्वाजीवोऽमरोभवेत् १४

उॐ ह्रीं चन्द्रिकेहंसः क्रीं क्लीं स्वाहा।

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि में मूल लिखित मन्त्र का जप आरम्भ करे। जबतक आकाश में चन्द्रमा दिखाई दे, तबतक जप में रत होना चाहिये। इस प्रकार प्रतिदिन करके पूर्णिमा तक नव लाख जप करना होता है। इस साधना से चन्द्रिका देवी प्रसन्न होकर साधक को अमृत देती है, उस अमृत के पीने से साधक अमर होसकता है ॥१३॥ ॥१४॥

नरास्थिनिर्म्मितामाला गलेपाणौचकर्णयोः।
धारयेज्जपमालाञ्च तादृशीञ्चश्मशानतः ॥१५॥
लक्षमेकंजपेन्मन्त्रं साधकोनिर्भयःशुचिः।
ततोमहाभयायक्षी दद्यादेवरसायनं ॥१६॥
तस्यभक्षणमात्रेण सर्व्वरत्नानिचालयेत्।
वलीपलितनिर्म्मुक्त श्चिरजीवीभवेन्नरः ॥१७॥

उॐ क्रीं महाभये क्लीं स्वाहा।

साधक नरास्थि द्वारा माला बनाकर गले अथवा कान में पहरकर पवित्र होकर निर्भय हृदय से अकेला श्मशान में वास करे। अनन्तर नरास्थि माला हाथ में धारण कर अ-

भया-यक्षिणी का उक्त मन्त्र एक लक्ष जप करे । इस प्रकार करने से महाभया-यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को रसायन देती है । इस रसायन का सेवन करने से साधक इच्छानुसार सब प्रकार के रत्नों को यथा स्थान से चलायमान करने में समर्थ होसकता है, इसके अतिरिक्त बुढ़ापा और जरा शून्य होकर चिरजीवी होसकता है ॥१५॥ ॥१६॥ ॥१७॥

इतिश्री नागभट्ट विरचित कामरत्न तन्त्र रुहेलखण्डान्तर्गत बरेली निवासी ब्रह्मकुलभूषण पं० बांकेलालात्मज श्रीयुत पं० श्यामसुन्दर शर्म्मा विरचित भाषाटीकायां समाप्ति मगमत् ।

शुभम्भूयात् ।



॥ अथ वशीकरण तन्त्रम् ॥

अपामार्गस्यकीलन्तु मूलमुत्साच्यंग्यंगुलं।
सप्ताभिमन्त्रितंयस्य गृहेक्षिप्त्वावशीभवेत् ॥१॥
ॐ मदनकामदेवाय फट् स्वाहा ।
शतमष्टोत्तरंजप्त्वा पूर्व्वमेवाभवन्नरः ।
सिद्धोभवतितत्सूत्यं तिलककुरुतेवशं ॥२॥

चिरचिरे की जड़ लाकर उसको तीन अँगुल की बरा बर कील सातबार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में डाल दीजाय, वही व्यक्ति वश में होता है "ॐमदनकामदेवाय फट्स्वाहा" यह मन्त्र अष्टोत्तर शतवार जपकर सिद्ध होनेपर यह कार्य करे। और चिरचिरे की जड़ द्वारा कपाल में तिलक लगाने से वशीकरण होता है॥१॥॥२॥

स्वयम्भकुसुमवस्त्रे गृहीत्वात्रिपथेदहेत् ।
शनिभौमस्यवारेवा तद्भस्मतिलकंकृतं ॥३॥
वशन्नयतिराजानं मन्यलोकेषुकाकथा ।
ॐनमोभैरवीतरेआज्ञाकालेकमलमुखे ॥४॥

राजमोहनेप्रजावशीकरणे स्त्रीपुरुषरञ्जनि लोक वश्यमोहनिमेसोहंओंगुरुप्रसादेन ॥५॥

मदनवन का फूल वस्त्र में ग्रहण कर त्रिपथ के बीच स्थान में शनि अथवा मङ्गलवार के दिन दग्ध करे। इसके उपरान्त इस वस्त्र को जलीहुई भस्म का कपाल में तिलक लगाने से राजा भी वशीभूत होता है, दूसरे की तो बातही क्या है? "ओंनमो भैरवो" इत्यादि मन्त्र से उक्त कार्य करे ।३। ।४। ।५।

रात्रौकृष्णचतुर्दश्यां लाङ्गलीमूलमुद्धरेत् ।
श्वेतच्छागलिकागर्भे शय्यायांनरतैलकं ॥६॥
क्षौद्रतालकसंयुक्तं तिलकंसर्ववश्यकृत् ॥७॥

कृष्णपक्ष की चौदस की रात्रि में लाङ्गली वृक्ष की जड़, नरतेल, शहत और हरताल इन सब द्रव्यों को एकत्र कर कपाल में तिलक लगाने से सर्व्व लोक को वशीभूत किया जा सकता है ॥६॥ ॥७॥

अजमोदस्यमूलेन तुरगीगर्भशय्यया ।
हरितालश्चसम्पिष्य गुटिकामुखमध्यगा ॥८॥
यद्यस्माद्याचतेत्रस्तु तत्तदेवददात्यसौ ।

ऊँअस्सकर्णेश्वरिहुर्व्वलेआइकेशिकअटाकलापे।
ठकारफेत्कारिणी स्वाहा।

अजमायन के वृक्ष की जड़ और हरताल एकत्र पीसकर गुटिका बनावे। यह गुटिका मुख में रखकर जिसके निकट जिस जिस द्रव्य की याचना करे, वही वही द्रव्य तिसी समय वह उस व्यक्ति का प्रदान करता है। ऊँ अस्सकर्णेश्वरि इत्यादि मन्त्र से उक्त कार्य करे ॥८॥

वटपत्रंमयूरशिखयातुल्यं तिलकंलोक्यवश्यकृत्।
विष्णुक्रान्ताभृङ्गराजं रोचनंसहदेविका ॥९॥
श्वेतापराजितामूलं कन्याहस्तेप्रलेपयेत्।
धारिणातिलकंकुर्य्यात् सर्व्वलोकवशङ्करं ॥१०॥

बड़ के पत्ते, और मोर शिखा बराबर लेकर तिलक करने से सर्वलोक वशीभूत होता है और विष्णुकान्ता, भृङ्गराज की जड़, गोरोचन, सहदेई, और सफेद अपराजिता की जड़, यह सब द्रव्य एकत्र पीसकर अविवाहिता कन्या के हाथ में लेप करे। इसके उपरान्त यह लेप की हुई वस्तु जल में घिसकर तिलक लगाने से सर्वलोक वशीभूत होता है ॥९॥ १०

रक्ताश्वमारपुष्पञ्च कुष्ठञ्च श्वेतसर्षपं ।
श्वेतार्कमूलं तगरं श्वेतगुञ्जा च वारुणी ॥११॥
कृष्णाष्टम्यां पुष्ययुक्ते चतुर्द्दश्यां तथाविधं ।
पेषयेत्कन्यकाहस्ते तिलकं वश्यकारकं ॥१२॥

लालकनेर का फूल, कूठ, सफेद सरसों, सफेद आक की जड़, तगर, सफेद घुंघची, वारुणी की जड़, यह सब द्रव्य पुष्य नक्षत्र युक्त कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि के दिन एकत्र पीसले। अनन्तर इस पिसे हुए द्रव्य द्वारा तिलक लगावे, इससे सर्वलोक वशीभूत होता है ॥११॥ ॥१२॥

अपामार्गस्य मूलन्तु पेषयेद्रोचनेन च ।
ललाटे तिलकं कृत्वा वशीकुर्य्याज्जगत्त्रयं ॥१३॥
ओंनमो वरजालिनी सर्व्वलोकवशङ्करी स्वाहा।
अयंमन्त्र उक्तयोगानां। अष्टोत्तरसहस्रजपात्सिद्धिः।

चिरचिरे की जड़ और गोरोचन एकत्र पीसकर कपाल में तिलक लगाने से त्रिजगत वशीभूत किया जासकता है। ओंनमो वरजालिनी इत्यादि मन्त्र से पूर्वोक्त सब कार्य करना चाहिये ॥१३॥ ॥१४॥

उलूकचक्षुरादाय गोरोचनसमन्वितं ।
वारिणासहदातव्यं पानाद्वश्यकरंपरं ॥१५॥

उल्लू के नेत्र लाकर उसमें गोरोचना मिलाकर जिसको जल के सङ्ग पान करा दिया जाय, वही व्यक्ति वशीभूत होता है ॥१५॥

उलूकस्यतुकर्णौद्वौ चटकस्यविलोचनं ।
तच्चूर्णंतिलकेपाने भक्षणेगन्धपुष्पयोः ॥१६॥
क्षिपेद्वामस्तकेयस्य सवश्योजायतेचिरात् ॥१७॥

उल्लू के दोनों कान और खुटचढे पक्षी के नेत्र इन दोनों द्रव्यों का एकत्र चूर्ण करे। इस चूर्ण का कपाल में तिलक लगाने से जगत को वशीभूत कर सकता है। और यही चूर्ण किसी व्यक्ति को भक्ष्यद्रव्य (खाने का पदार्थ) और जल के सङ्ग प्रदान करने से अथवा गन्धद्रव्य और फूल के सङ्ग सुँघा देने से वा किसी व्यक्ति के मस्तक पर डालने से वही व्यक्ति वशीभूत होता है ॥१६॥ ॥१७॥

मांसंग्राह्यमुलूकस्य- कुंकुमागुरुचन्दनं ।
गोरोचनसमंपिष्टं भक्षेपानेजगद्वशं ॥१८॥
स्त्रियोवापुरुषोनापि सहस्त्रजपनाद्भवेत् ॥१९॥

ऊँ ह्रीं ह्रीं हः हः फट् नमः ।

उल्लू का मांस, रोली, अगर, लालचन्दन, और गोरोचन, यह सब द्रव्य सम परिमाण एकत्र पीसकर भोजन वा पानी के सङ्ग देने से त्रिजगत वशीभूत होता है। "ऊँ ह्रीं ह्रीं" इत्यादि मन्त्र हजारबार जपकर यह कार्य करे। स्त्री अथवा पुरुष कोई हो सभी वशीभूत होते हैं ॥१८॥ ॥१९॥

कृतोपवासोग्रहनीयात् समूलेश्चैन्द्रवारुणीं ।
उत्तराभिमुखेनैव कुट्टयेत्तदुदूखले ॥२०॥
तत्कल्कं त्रिकटुंतुल्यं मजामूत्रेणपेषयेत् ।
छायाशुष्कंवटींकुर्य्यात् सवटीरक्तचन्दनं ॥२१॥
घृष्ट्वोधस्वांगुलींलिप्त्वा तयास्पृष्टेजगद्वशं ॥२२॥

पहले दिन व्रत रहकर वारुणी की जड़ ग्रहण करे। फिर उत्तर की ओर को मुख करके ओखली में इस जड़ को कूटले। अनन्तर यह पिष्टद्रव्य और त्रिकटु अर्थात् (मरिच, पीपल, और सोंठ) समान लेकर बकरी के मूत्र में पीसकर छाया में सुखाय गोली बनावे। इसके उपरान्त यह गोली और लालचन्दन एकत्र घिसकर अपनी अँगुली में लेप करके इस

अँगुली से जिसको स्पर्श किया जाय, वही व्यक्ति वशीभूत होता है। इस वशीकार्य में त्रिजगत वश्य होता है २०।२१ २२

सावटीदेवदारुश्च तुल्यश्चसितचन्दनं।
जलेघृष्ट्वाविलेपाय दत्तंयस्यभवेद्वशः ॥२३॥

पूर्वोक्त गोली, देवदारु और सफेद चन्दन समान लेकर एकत्र जल में घिसकर जिसके अङ्ग में लेप करने के लिये दिया जाय, वही व्यक्ति वशीभूत होता है ॥२३॥

सावटीरोचनंतुल्यं कृत्वातोयेनपेषयेत्।
अनेनतिलकंकृत्वा सर्व्वत्रविजयीभवेत् ॥२४॥
ओंनमः शची, इन्द्राणी सर्व्ववशङ्करीसर्व्वार्थ साधिनीस्वाहा। अस्यसहस्त्रेजस्तेपूर्व्वयोगसिद्धिः।

पूर्वकृत गोली और गोरोचन यह दो द्रव्य बराबर लेकर जलके सङ्ग पीस कपाल में तिलक लगाने से वह व्यक्ति सर्वत्र जय लाभ कर सकता है। "ओंनमःशचीइन्द्राणी" इत्यादि मन्त्र सहस्र जपकर पूर्वोक्त योगसब करने से सिद्धि होता है।

कृष्णपक्षचतुर्दश्यामष्टम्यांवाउपोषितः।
वलिंदत्वासमुद्धृत्य सहदेवींसुचूर्णयेत् ॥२६॥

ताम्बूलेनतुतच्चूर्णं योज्यंवश्यकरंपरं ॥२७॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी तिथि में उपवासी रहकर, देवता को बलि देकर सहदेई की जड़ लाकर चूर्ण करे। यह चूर्ण जिसको ताम्बूल के सङ्ग भक्षण कराया जाय, वही व्यक्ति वशीभूत होता है ॥२६॥ ॥२७॥

रोचनासहदेवीभ्यां तिलकोवश्यकारकः ।
मनःशिलाचतन्मूलं मञ्जयेत्सर्व्ववश्यकृत् २८

गोरोचन और सहदेवी एकत्र पीसकर तिलक करने से सम्पूर्ण लोक वशीभूत कर सकता है। अथवा मनशिल और सहदेवी की जड़ एकत्र पीसकर अञ्जन लगाने से सर्व्वलोक वश्य होता है ॥२८॥

सप्ताहंताम्बूलस्यान्तः सहदेवींप्रयोजयेत् ।
राजावश्यमवाप्नोति सर्व्वलोकेषुकाकथा ।२९।

सहदेई की जड़ एक सप्ताह तक ताम्बूल के सङ्ग प्रयोग करने से राजा भी वशीभूत होता है, और मनुष्यों की तो बात ही क्या है। ॥२९॥

काकजङ्घावचाकुष्ठं विल्वपत्रञ्चकुंकुमं ।

स्वरक्तसंयुतंभाले तिलकंदारवश्यकृत् ॥३०॥

गुञ्जा, वच, कूठ, वेलपत्र, रोली, स्वीयरक्त, एकत्र करके कपाल में तिलक लगाने से स्त्री वश होती है ॥३०॥

काकजङ्घावचाकुष्ठं शुक्रशोणितसंयुतं ।
दत्तेसाभोजनेबाला श्मशानेरुदतेसदा ॥३१॥

गुञ्जा, वच, कुठ, शुक्र, और शोणित यह सब एकत्र करके जिस स्त्री को भक्षण करावे, वह स्त्री इस प्रकार वशीभूत होती है कि पुरुष के मरजाने पर भी वह श्मशान में जाकर रुदन करती है ॥३१॥

कलविङ्कशिरस्तुल्यं श्वेतार्कस्यचमूलकं ।
मञ्जिष्ठाखदिरंपाने दत्तेकान्तांवशंनयेत् ।३२।

खुटखुटवढई पक्षी का मस्तक, सफेद आक की जड, मजीठ, और खैर यह सब जिसको पान करावे, वही स्त्री वशीभूत होती है ॥३२॥

सर्पत्वग्बीजपूरञ्च तैलमेरण्डजंसमं ।
योषितांमोहकृद्धूपो रतिकालेप्रपूजयेत् ॥३३॥

साँप की कैंचली, दाडिम्ब, काठ और एरण्ड का तेल यह सब बराबर लेकर धूप देने से स्त्री वशीभूत होती है ॥३३॥

अश्विन्यांग्राहयेद्धीमान् पलाशस्यचवन्ध्रकं।
करेवद्धाभजेद्यान्तु नायिकावशगाभवेत् ॥३४॥

अश्विनी नक्षत्र में ढाक की जड़ ग्रहण करके हाथ में बांधने से नायिका वशीभूत होती है ॥३४॥

उडुम्बरस्यवध्रन्तु मृगशीर्षेसमाहरेत्।
हस्तेवद्धास्पृशेत्कन्यां सावश्याभवतिक्षणात् ३५

गूलर की जड़ मृगशिर नक्षत्र में लाकर हाथ में बांध जिसके अङ्ग में स्पर्श करायो जाय, वही कामिनी तत्क्षण वशीभूत होती है ॥३५॥

शिरीषस्यधनिष्ठायां अभ्रमादयेवन्धयेत्।
करेवाधातकीअभ्रं स्वातौरामांवशंनयेत् ॥३६॥

धनिष्ठा नक्षत्र में सिरस की जड़ ग्रहण करके और स्वाति नक्षत्र में धाय वृक्ष की जड़ लाकर हाथमें रखने से नारी गण वशीभूत होती हैं ॥३६॥

अश्विन्यांग्राहयेद्धीमान् पलाशस्यचवन्ध्रकं।
करेवद्धास्पृशेद्यान्तु नायिकासावशीभवेत् ३७

अश्विनी नक्षत्र में ढाक की जड़ ग्रहण करके अपने हाथ

में धारण पूर्वक जिस स्त्री को स्पर्श करावे, वही स्त्री की नायिका वशीभूत होती है ॥३७॥

रेवत्यांवटशुङ्गश्च हस्तेवद्धावशंनयेत् ।
मूलेवाबदरीवध्नं भोजनेस्त्रीवशीभवेत् ॥३८॥

रेवती नक्षत्र में वटांकुर ग्रहण करके हाथ में बांधने से सबको वशीभूत कर सकता है और मूल नक्षत्र में बेरी की जड़ लाकर जिस स्त्री को भक्षण करादीजाय, वही स्त्री वशीभूत होती है ॥३८॥

स्वर्णेतारपुष्पमूलं घृष्ट्वास्पष्टेस्त्रियोवशाः ।
एतान्सर्वप्रयोगांश्च चण्डमन्त्रेणयोजयेत् ।३९।
शतमष्टोत्तरंजप्त्वा ततःसिद्धोभवत्यलं ॥४०॥

सुवर्ण के पात्र में कुन्दे की वृक्ष की जड़ घिसकर जिस स्त्री की पीठपर लगा दीजाय, वह स्त्री निश्चय वशीभूत होती है। इसके पहले जो सब प्रक्रिया कही गई है उसमें चण्ड मन्त्र प्रयोग करे अर्थात् प्रक्रिया करने के पहले चण्ड मन्त्र अष्टोत्तर शतजप करके सिद्ध होनेपर कार्य करें ॥३९॥ ॥४०॥

मार्गशीर्षेतुपूर्णायां शिखीमूलंसमुद्धरेत् ।

मन्त्रेणदापयेत्स्त्रीणां भोजनेस्त्रीवशङ्करं ॥२१॥

मन्त्रेण चण्ड मन्त्रेण ।

अगहन मास की पूर्णिमा तिथि में चिरचिरे की जड़ लाकर जिस स्त्री को भक्षण कराई जाय, वही स्त्री वशीभूत होती है। इस कार्य में भी चण्ड मन्त्र का प्रयोग करे ॥४१॥

श्वेतगुञ्जाभरंमन्त्रे मूलंपञ्चमलान्वितं ।

भक्षेपानेचदातव्यं वश्येवामावशङ्करं ॥४२॥

सफेद चौटली की जड और पञ्चमल अर्थात् (जिभ्या का मल, दन्तमल, चक्षुमल, कर्णमल, और नासिकामल) यह सब एकत्र करके चण्ड मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री को भक्षण कराया जाय, वही स्त्री वशीभूत होती है ॥४२॥

प्रातःस्वदन्तंप्राक्षाल्य सप्तवाराभिमन्त्रितं ।

यस्यनाम्नापिबेत्तोयं सावामावशगाभवेत् ।४३।

ऊँनमः क्षिप्रंकामिनीअमुकींमेवशमानय हुं फट् स्वाहा ।

प्रातःकाल के समय दतौन करके जिस स्त्री का नाम लेकर "ऊँनमःक्षिप्रं" आदि मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित कर सात घूंट जल पान करे, वही स्त्री वशीभूत होती है ॥४३॥

अन्योनमेंलयेछिङ्गं यानारीवीक्षतेचिरं।
इकारान्तंजपेत्तावत् सानारीवशगाभवेत् ४४
नागपुष्पंप्रयंगुञ्च तगरंपद्मकेशरं।
वचामांसींसमानीय चूर्णयेन्मन्त्रवित्तमः॥४५॥
स्वागन्तुधूपयेत्तेन भजन्तेकामवत्स्त्रियः।
ऊँमूलिमूलिमहामूलि रक्षरक्षसर्व्वसात्क्षेत्र
येभ्योपरेभ्यः स्वाहा॥४६॥

नागकेशर के पुष्प, प्रियँगु तगर काष्ठ, कमल, केशर, वच, बालछड़, इन सब द्रव्यों का एकत्र चूर्ण करके जो व्यक्ति "ऊँमूलिमूलि" मन्त्र पढ़कर उक्त चूर्ण द्वारा अपने शरीर में धूपदे, उस व्यक्ति को कामदेव की समान जानकर स्त्रीगण उसके वशीभूत होती हैं॥४४॥॥४५॥ ॥४६॥

जिह्वामलंदन्तमलं नासाकर्णमलंतथा।
सुरापानेप्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतं॥४७॥
ऊँनमः सर्वायैनमः सर्वान्यैच असुकींमेवश
मानय स्वाहा।

अपनी जीभ का मैल, दांत का मैल, नासिका और कान का मैल, यह सब एकत्र कर "ऊँनमःसवार्थे" इत्यादि मन्त्र पाठ पूर्वक मदिरा के सङ्ग जिस स्त्री को भक्षण कराया जाय, वह स्त्री निःसन्देह वशीभूत होती है ॥४७॥

वाव्यालकस्यमन्त्रेणपुष्पंसप्ताभिमन्त्रितं ।
फलंवादीयतेवैश्ये सम्यग्वश्यकरंपरं ॥४८॥
ऊँनमोवाचाटपथपथहिटिद्रावहि स्वाहा ।

ऊँनमोवाचाट इत्यादि मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित कर बहेडे की जड़ अथवा फल लेजाकर जिस स्त्री को दिया जाय, वह स्त्री सम्यग् प्रकार वशीभूत होती है ॥४८॥

अपामार्गस्यमध्येतु चतुरंगुलकीलकं ।
सप्ताभिमन्त्रितंयाहां क्षिपेद्वेश्यागृहेवशा ।४९।
ओंद्राविणीस्वाहा ऊँहमिलेस्वाहा ।

चिरचिरे के वृक्ष के मध्यभाग का चार अँगुल की बराबर काष्ठ "ऊँद्राविणीस्वाहा" इत्यादि मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित कर वेश्या के घर निक्षेप करने से वह वेश्या वशीभूत होती है ॥४९॥

उलूकनेत्रमासञ्च चन्दनंचैवरोचनं ।
कुंकुमंमत्स्यतैलञ्च देहाभ्यङ्गाद्वशाःस्त्रियः ५०
ओं ह्रीं ह्रीं ह्रुं ह्रुं फट् नमः ।

उल्लू की आंखें और मांस, लालचन्दन, गोरोचन, रोली और मछली का तेल, यह सब वस्तु एकत्र कर "ओंह्रीं-ह्रीं" इत्यादि मन्त्र से अपने शरीर में अभ्यङ्ग करने से स्त्रीगण को वशीभूत कर सकता है ॥५०॥

विधिनाकृकलासस्य पादंसंग्रह्यदक्षिणं ।
वेष्टनेरतिकालेतु मुखस्थंनायिकावशाः ॥५१॥
तस्यैववामनेत्रेण मधुतैलेनचाञ्जयेत् ।
यापश्यतिनरोमत्तां वामासातत्क्षणाद्वशा ५२
ओंआनन्दब्रह्म स्वाहा ओं ह्रीं क्रीं ह्रां कालि कपालि स्वाहा ।

एक गिरगट का दक्षिण पैर लाकर मुख में धारण करके जिस स्त्री के सङ्ग रतिक्रिया करे, वही स्त्री वशीभूत होती है। और गिरगट का वाम नेत्र, शहत एवँ तेल, यह सब एकत्रकर नेत्रों में अञ्जन लगाकर जिस स्त्री पर दृष्टिपात करे, वही स्त्री

वशीभूत होती है। इस प्रक्रिया में "ओंआनन्दब्रह्मस्वाहा" इत्यादि मन्त्र से कार्य करना चाहिये ॥५१॥ ॥५२॥

तस्यैवदक्षनेत्रञ्च सौवीरंमधुनासह ।
अञ्जिताक्षस्यसावश्या यास्त्रीरूपातिगर्व्विता ५३

ओंपूजिताय स्वाहा ।

गिरगिट की दाहिनी आंख, कांजी, और शहद यह सब एकत्र कर नेत्रों में अञ्जन लगा जिस स्त्री पर दृष्टिपात करे, वही स्त्री वशीभूत होती है। इस प्रक्रिया में "ओंपूजितायस्वाहा" इस मन्त्र से कार्य करे ॥५३॥

त्रिसन्ध्यन्तुजपेन्मन्त्रं मन्मथस्यशतंशतं ।
सन्मन्त्रंकामिनीमासान्मोहयत्यैवदर्शनात् ५४

ओंनमःकामदेवाय सहकल सहदश सहयम सहालिमे वन्हेधूननूजनंसमदर्शनं उत्कण्ठितं कुरुकुरुदक्षदण्डधरकुसुमं वाणेनहनहनस्वाहा ।

ओंनमः कामदेवाय इत्यादि मन्त्र तीनों सन्ध्याओं में एक शतजप करे। इस प्रकार एक सप्ताह जप करने से जो स्त्री उसका दर्शन करे, वही नारी वशीभूत होती है ॥५४॥

कामाक्रान्तेनचित्तेन नाम्नांमन्त्रंजपेन्निशि ।
अवश्यंकुरुतेवश्यं प्रसन्नोविश्वचेटकः ॥५५॥

ऊँसहवल्लींवल्लींकरवल्लीं कामपिशाच अमुकीं कामंग्राहयस्वप्नेन ममरूपेणनखैर्विदारयद्रावय स्वेदेनबन्धन श्रींफट् ।

रात्रि के समय कामाक्रान्त चित्त से जिसका नाम लेकर "ऊँवल्लीं" इत्यादि मन्त्र जप किया जाय, वह स्त्री अवश्य वशीभूत होती है ॥५५॥

चण्डमन्त्रेणहोमानि वश्यार्थेकारयेत्सुधीः ।
पूर्वमेवायुतेजप्ते सिद्धिःस्याद्वश्यकारकः ॥५६॥

वशीकरण कार्य्य में चण्ड मन्त्र से कार्य करना होता है पहले दसहजार जप कर पश्चात् वशीकरण कार्य्य करे । इस प्रकार कार्य करने से निश्चय सिद्धी होती है ॥५६॥

लवणंतिलसंयुक्तं क्षीरमधवाज्यसंयुतं ।
सप्ताहाद्रूपहीनोपि वशीकुर्य्यात्तिलोत्तमाः ५७

लवण, तिल, दूध, शहत, और घृत, यह द्रव्य एकत्रकर

एक सप्ताह होम करने से रूप हीन व्यक्ति भी तिलोत्तमा को वशीभूत कर सकता है ॥५७॥

राजिकालवणंक्षीर मध्वाज्यैर्मिश्रितंहुतं ।
सप्ताहेनवशंयाति रामारूपगर्व्विता ॥५८॥

सरसों, नमक, दूध, घृत, यह सब एकत्र कर सप्ताह पर्यन्त होम करने से रूपगर्विता नारी को भी वशीभूत कर सकता है ॥५८॥

अष्टोत्तरशतंकाष्ठ मैरण्डंचतुरंगुलम् ।
लवणंकटुतैलञ्च त्रिभिरेकत्रहोमयेत् ॥५९॥

चार अँगुलि की बराबर एरण्ड के काष्ट द्वारा मन्त्र पढ़कर कटुतैल और लवण के संङ्ग अष्टोत्तर शत होम करे। होम के समय मन्त्र से जिसका नाम लिखा रहेगा, वही व्यक्ति वशीभूत होगा ॥५९॥

महानिम्बस्यपुष्पाणि घृतेनसहहोमयेत् ।
सप्तरात्रेवशंयाति यदिरामामनोरमा ॥६०॥

ओं ह्रीं रक्त चामुण्डे तुरु तुरु अमुकीं मेवश मानय स्वाहा ।

महानींम के पुष्प में घृत मिलाकर प्रतिदिन अष्टोत्तर शत होम करे। इस प्रकार एक सप्ताह होम करने से मनोरमा नारी वशीभूत होती है। पहले जो सब होम का विधान लिखागया है, उसमें ॐह्रींरक्तचामुण्डे इत्यादि मन्त्र से कार्य करे ॥६०॥

* * * त्रितयेचुल्लीं कृत्वापश्चान्नृमुण्डके ।
पात्रेशालिन्तुतल्लाजां चूर्णयेत्तद्बहिर्गतान् ६१
पात्रस्थन्तुपृथक्चूर्णं मूर्द्ध्निक्षिप्तेवशाःस्त्रियः ।
अन्तर्गतेनचूर्णेन क्षिप्तंवश्यंनिवर्त्तते ॥६२॥
सिद्धियोगोह्यसंख्यातो विनामन्त्रेणसिद्धिदः ६३

तीन * * * लाकर उनके द्वारा चूल्हा बनाकर उसपर मनुष्य की खोपडी में धान डालकर खीलें भूनें जो खीलें खोपडी से बाहर निकलें, उनका चूर्ण कर एक स्थान में रक्खे और खोपड़ी में स्थित खीलों का चूर्ण अन्य एक स्थान में स्थापन करे। इसके उपरान्त खीलों का चूर्ण जिस स्त्री के मस्तक पर डालदे, वही स्त्री वशीभूत होजाय और मध्यगत खीलों के चूर्ण द्वारा वशीकरण निवृत होता है। इस योग में विना मन्त्र से कार्य्य सिद्धि होता है ॥६१॥ ॥६२॥ ॥६३॥

गर्दभस्यशिरोमज्जा पूरयेन्नरपात्रके ।
भृङ्गराजरसैर्भाव्या वर्त्तिःकार्पाससम्भवा ६४
सप्तवारन्तुसाशुष्का मज्जापात्रप्रदीयते ।
कज्जलंनरपात्रेतु शनिवारेसमुद्धरेत् ॥६५॥
तेनाञ्जयेद्दृशीकुर्य्यात् कामिनीनन्तुविलोकनात् ६६

मनुष्य के मस्तक का मध्यभाग गधे के मस्तक में रख मज्जा द्वारा पूर्ण कर उसमें भँगरे के रस की एक सप्ताह तक भावना देने पर शुष्क करे। अनन्तर कपास की बत्ती बनाकर मज्जा के पात्र पर जलावे शनिवार को इस प्रदीप शिखा से मनुष्य के कपाल पर काजल पार कर उस काजल द्वारा नेत्र अञ्जित कर जिस स्त्री को देखे, वही बशीभूत होजावे।६४ ६६।

शिलातालंस्ववीर्य्यञ्च अङ्कोलतैलमिश्रितम् ।
गजगण्डमेदोन्मिश्रं तिलकंस्त्रीवशङ्करं ॥६७॥

मनसिल, हरिताल, अपना बीर्य, अङ्कोल के फल का तेल, और हाथी की गण्ड का मल, यह सब एकत्र मिलाकर कपाल में तिलक लगाने स्त्री बशीभूत होती है ॥६७॥

मनःशिलाप्रियंगुञ्च नागकेशररोचनं ।

अञ्जिताक्षोनरोरामां वशीकुर्य्यान्मनोरमां ६८

मनशिल, प्रियँगु नागकेशर के फूल, और गोरोचन इन सब को एकत्र कर चक्षु में अञ्जन लगाने से मनोरमा स्त्री को वशीभूत किया जासकता है ॥६८॥

प्रियंगुश्चवचापत्रं रोचनाञ्जनचन्दनं ।
अञ्जिताक्षोनरोरामां दृष्ट्वामोहयतिध्रुवं ॥६९॥

प्रियँगु, वच, तेजपत्र, गोरोचन, रसाञ्जन, और लाल-चन्दन, इन सब द्रव्यों को एकत्र कर नेत्रों में अञ्जन लगा जिसके प्रति दृष्टि डाले, वही स्त्री वशीभूत होजावे ॥६९॥

सोमराजीरवेर्म्मूलं मूलंवाचक्रमर्द्दनं ।
कटिस्थंनरनार्य्योर्व्वा परस्परवशङ्करं ॥७०॥

सोमराजी, आक की जड, अथवा चकवड़ की जड़ कमर में धारण करने से स्त्री और पुरुष वशीभूत होते हैं ॥७०॥

कृष्णाष्टमीचतुर्द्दश्यां पीतधुस्तुरमूलकं ।
हेमतारपुटीकुष्ठं देवदारुसमंसमं ॥७१॥
चूर्णंस्त्रीणांशिरःछित पुन्सोवाथवशङ्करं ॥७२॥

कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि में पीले धतूरे

की जड़ उखाड़ कर कूठ और देवदारु यह सब द्रव्य सम परिमाण लेकर चूर्ण करे। यह चूर्ण स्त्री अथवा पुरुष के मस्तक पर निक्षेप करने से वशीकरण होता है ॥७१॥ ॥७२॥

जलेनसहघृष्ट्वातु सौधामलकमञ्जयेत् ।
तिलकेवाकृतेवश्यं कुर्यात्स्त्रीमण्डलंक्षणात् ७२

जल के सङ्ग आमले के वृक्ष की जड़ घिसकर नेत्रों में अञ्जन अथवा कपाल में तिलक लगाने से तत्काल स्त्री वा पुरुष को वशीभूत कर सकता है ॥७३॥

इन्द्रवारुणिकामूलं पुष्येनग्नःसमुद्धरेत् ।
कटुत्रयैर्गवांक्षीरैः पिष्ट्वातद्वटकीकृतं ॥७४॥
चन्दनेनसमायुक्तं तिलकंस्त्रीवशङ्करं ॥७५॥

इन्द्रायन की जड़ पुष्य नक्षत्र में नग्न होकर उखाड़े। फिर इस जड़ के सङ्ग मरिच, पीपल, और सोंठ यह सब द्रव्य गाय के दूध में एकत्र पीसकर गोली बनावे। इस गोली को लालचन्दन के साथ कपाल में तिलक लगाने से स्त्रीगण को वशीभूत कर सकता है ॥७४॥ ॥७५॥

वटवृंटमभकंस्वात्यां वदर्य्यास्त्वनुराधया ।

ग्रभंवांधारयेद्धस्ते पृथक्स्त्रीवश्यकारकौ ॥७६॥

स्वाती नक्षत्र में बर्बुट वृक्ष की जड़ और अनुराधा नक्षत्र में बेरी की जड़ उखाड़ कर हाथ में धारण करने से स्त्रीगण को बशीभूत किया जासकता है ॥७६॥

उर्द्धपुष्पीअधःपुष्पी लज्जालुगिरिकर्णिका ।
सप्ताहंभावयेच्छुक्रे पश्चाङ्गमलसंयुते ॥७७॥
खानेपानेप्रदातव्यं नारीवश्यकरंपरं ॥७८॥

उर्द्धपुष्पी अधःपुष्पी (स्वनाम प्रसिद्ध देश विशेषोत्पन्न औषधि विशेष) लज्जावती और अपराजिता, इन सब वृक्षों के पुष्प लाकर सप्ताह पर्यन्त अपने वीर्य की भावनादे, फिर उसके सङ्ग नेत्रमल, जिह्वामल, दन्तमल, कर्णमल, और नासिकामल यह सब द्रव्य एकत्र कर जिस स्त्री को भक्ष्य द्रव्य अथवा पानी में भक्षण करावे, तो उसी नारी को बशीभूत कर सकता है ॥७७॥ ॥७८॥

श्वेतार्कलाङ्गलीवचा लज्जालीविषमुष्टिका ।
तुल्यंतुल्यंप्रचूर्णायाथ रुक्षःस्नानपयःस्तुतं ७९
धुस्तूरफलमध्यस्थ मेकीकृत्यप्रयोजयेत् ।

कामवाणमिदंस्यात् भोजनेस्त्रीवशङ्करं ॥८०॥
उक्तानांसर्व्वयोगानां चण्डमन्त्रेणमन्त्रयेत्।
सिध्यन्तिनात्रसन्देहः पूर्व्वमेवायुतेकिल ।८१।

सफेद आक, नारियल, बच, लज्जावती की जड़, यह सब द्रव्य बराबर ग्रहण पूर्वक चूर्ण कर स्वान के दूध के साथ मिश्रित करे, फिर यह औषधि धतूरे के फल में रक्खे, यह औषधि कामवाण स्वरूप है। जिस स्त्री को इस औषधि का भक्षण करावे, वही स्त्री वशीभूत होजाय। पूर्वोक्त सब योग में चण्ड मन्त्र का प्रयोग करे। प्रथम दशहजार चण्ड मन्त्र जप कर फिर कार्य करने से निश्चय सिद्धी होती है ७९ ८० ८१

कुंकुमंचन्दनञ्चैव रोचनंशशिमिश्रितं।
गवांक्षीरेणतिलकं राजवश्यकरंपरं ॥८२॥
ओं ह्रीं सः अमुकंमेवश्यं कुरुकुरु स्वाहा।
पूर्व्वमेवसहस्रंजप्त्वा ततोऽनेनमन्त्रेणसप्ताभि मन्त्रितंपूर्व्वतिलकंकुर्य्यात् ॥८३॥

रोली, लालचन्दन, गोरोचन, और कपूर यह सब द्रव्य सम परिमाण लेकर गाय के दूध में मिलाकर कपाल में ति-

लक लगावे। इसमें राज वशीकरण होता है। इस प्रक्रिया के पहले 'ओंक्लींसः' इत्यादि मन्त्र हजार जप करे। फिर तिलक का द्रव्य उक्त मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित करके तिलक लगाना चाहिये ॥८२॥ ॥८३॥

चक्रमर्दस्यमूलन्तु हस्तक्षेतुसमुद्धरेत्।
राजद्वारेभवेत्पूज्यो हस्तेवद्धाचवादजित् ८४
ओं सुदर्शनाय हुं फट् स्वाहा। पूर्व्वमेवसहस्र जपेत्सिद्धिः।

हस्त नक्षत्र में चकवड की जड़ उखाड़ कर हाथ में धारण करने से वह व्यक्ति राजद्वार में पूजनीय होता है और बिवाद में जय लाभ करता है। इस प्रक्रिया के पहले "ओं सुदर्शनायहुँफट्स्वाहा" यह मन्त्र सहस्र जपकर सिद्ध होनपर कार्य्य करे ॥८४॥

पूर्व्वमेवायुतंजप्त्वा चण्डमन्त्रस्यसिद्धये।
ततोह्योपधयोगाय कुरुसप्ताभिमन्त्रितं ॥८५॥
सिध्यन्तिसर्व्वकर्म्माणि पूर्व्वमेवप्रभावतः ८६
ओंह्रीं रक्तचामुण्डे कुरुकुरुअमुकंमेवशमानय स्वाहा। अयंचण्डमन्त्रः सर्व्वसिद्धोभवति ॥

जिस स्थल में चण्ड मन्त्र द्वारा कार्य करना होता है, उस स्थल में मन्त्र सिद्धि के लिये प्रथम "ऊँह्रींरक्तचामुण्डे" इत्यादि मन्त्र हजारबार जप करे। फिर औषधादि ग्रहण और प्रयोग काल में भी उक्त मन्त्र से सातबार अभिमन्त्रित कर कार्य करना चाहिये इस प्रकार करने से सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होता है ॥८५॥ ॥८६॥

मञ्जिष्ठाकुंकुमंचैव अजमोदाकुमारिका।
चितिभस्मस्वरक्तञ्च स्वरेतेनचमारयेत् ॥८७॥
पुष्येचवटिकांकृत्वा भक्ष्येपानेचदापयेत्।
स्पृष्टेवाराजवश्यः स्याच्चण्डमन्त्रप्रभावतः ८८

मजीठ, रोली, अजवायन, चीते की भस्म, और अपने शरीर का रक्त, यह सब द्रव्य एकत्र कर अपने वीर्य की भावना देकर पुष्य नक्षत्र में गोली बनावे। यह गोली जिसको भक्ष्य द्रव्य अथवा पीने के जल के सङ्ग भक्षण करावे। वह व्यक्ति निश्चय वशीभूत होता है, और गोली राजा को स्पर्श करावेने से चण्ड मन्त्र के प्रभाव से राजा भी वशीभूत होताहै।

श्वेतापराजितामूलं चन्द्रग्रहणउद्धृतं।

प्रभुणांभोजनेदेय चण्डमन्त्रादशङ्करं ॥८९॥

चन्द्रग्रहण के समय अपराजिता की जड़ उखाड़कर अपने प्रभु को भोजन कराने से चण्ड मन्त्र के प्रसाद से वह प्रभु तत्काल वशीभूत होजाता है ॥८९॥

उत्तरायांसमादाय प्रातरश्वत्थव्रध्नकं ।
करेवद्धातुसर्व्वत्र राजद्वारेजयावहम् ॥९०॥

उत्तराफाल्गुणी, उत्तराषाढ अथवा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में पीपल के वृक्ष की जड़ उखाड़ कर हाथ में बांधने से राजद्वार और अन्यान्य सब स्थानों में जयलाभ प्राप्त होतीहै ९०

धात्रीव्रध्नंभरण्यान्तु विशाखामाम्रव्रध्नकं ।
पूर्व्वाफाल्गुणीनक्षत्रे ग्राह्यंदाडिम्बव्रध्नकं ९१
करेवद्धाभवेद्वश्यो यदिराजापुरन्दरः ॥९२॥

भरणी नक्षत्र में आमले के वृक्ष की जड़, विशाखा नक्षत्र में आम की जड़ और पूर्वाफाल्गुणी नक्षत्र में दाड़िम्ब के वृक्ष की जड़ ग्रहण करके हाथ में धारण करने से देवराज इन्द्र भी उसके निकट वशीभूत होजाते हैं ॥९१॥ ॥९२॥

अश्लेषायांगृहीत्वातु नागकेशरव्रध्नकं ।

करेबद्धाभवेद्वश्यो योराजापृथिवीपतिः ॥९३॥

अश्लेषा नक्षत्र में नागकेशर की जड़ ग्रहण करके हाथ में बांधने से पृथिवी का अधिपतिराजा भी वशीभूत होजाता है

निघृष्याङ्कोलतैलेन रक्तमण्डलमूलकं ।
सप्ताभिमन्त्रितंकृत्वा तिलकंराजवश्यकृत् ९४
उक्तयोगानांचण्डमन्त्रेण सिद्धिः ।

रक्तोत्पल की जड़ अङ्कोल-फल के तेल में घिसकर पूर्वोक्त चण्ड मन्त्र से सातवार अभिमन्त्रित कर कपाल में तिलक लगाने से राजा वशीभूत होता है। पहले जो सम्पूर्ण प्रक्रिया लिखी गई है, वह सब पूर्व लिखित चण्ड मन्त्र द्वारा करनी होती है ॥९४॥

होमयेत्कटुतैलेन रक्तचन्दनराजिका ।
सहस्राहुतिमात्रेण राजानंवशमानयेत् ।९५।

लालचन्दन, और सफेद सरसों कडवे तेल में मिलाकर हजार आहुति होम में देने से तत्काल राजा को भी वश में कर सकता है ॥९५॥

॥ आकर्षणम् ॥

आङ्कारेमन्त्रयेत्पाशं क्रोङ्कारेचांकुशंतथा ।
त्रिगुणंवामगंपाशं दक्षिणेज्वलितांकुशं ॥९६॥
सन्धायेत्स्वकरोमन्त्री ततोमन्त्रमिमंजपेत् ९७
ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डे तुरुतुरु अमुकीं आकर्षय आकर्षय ह्रीं स्वाहा । अस्यमन्त्रस्यपूर्व्वमेवायुतजपेत्सिद्धिः ।

अब आकर्षण प्रकर्ण लिखते हैं—आं इस मन्त्र से पाश और क्रों इस मन्त्र से अँकुश अभिमन्त्रित करे। इसके उपरांत बांयें हाथ में त्रिगुणीत पाश और दहिने हाथ में ज्वलित अँकुश धारण कर 'ॐह्रींरक्तचामुण्डे' इत्यादि मन्त्र का जप करे। आकर्षण प्रक्रिया[पहले उक्त मन्त्र दशहजार जपकर पश्चात् सिद्धि होनेपर कार्य्य करे ॥९६॥ ॥९७॥

अथवानिजमन्त्रन्तु गुरुवक्तात्समागतं ।
पूर्व्वमेवायुतंजप्त्वा तेनैवाकर्षणंभवेत् ।९८।
ध्यात्वासाध्यश्चमलिन मात्मानंदेवतानिभं ।

ध्यायेत्साध्यगलेपाशं शिरोज्वलितमंकुशं ९९
त्रिसन्ध्यन्तुजपादेव दिनानामेकविंशति ।
ध्यानेमन्त्रेतथायन्त्रे त्रैलोक्याकर्षणंभवेत् १००

अथवा गुरु का दिया हुवा अपना इस मन्त्र प्रथम दशह-जार जप कर आकर्षण कार्य में प्रवृत्त होना चाहिये । आकर्षणीय व्यक्ति को चिन्ता करके आत्मा में देवता के रूप की चिन्ता करे, इसके उपरान्त आकर्षणीय व्यक्ति गले में पाश और मस्तक पर ज्वलित अँकुश धारण कर तीनों सन्ध्याओं में मन्त्र का जप करे। इस प्रकार इकीस दिन तक ध्यान और मन्त्र का जप करने से त्रिभुवन को आकर्षण कर सकता है।

रक्तवस्त्रेलिखेद्यन्त्रं लाक्षयारक्तचन्दनैः ।
पूज्यंतद्भिततोम्मूले लिखनेद्धरणीतले ॥१॥
त्रिसप्ताहंसदासिंचेत् प्रातस्तत्तुण्डुलोदकैः ।
दूरादाकर्षयेन्नारीं यदिसानिगड़ान्विता ॥२॥

लालवस्त्र में लाख का रस और लालचन्दन द्वारा मन्त्र लिखकर उस यँत्र के ऊपर देवता की पूजा करे। अनन्तर यह यन्त्र वृक्ष की जड़ की मट्टी में दाबकर प्रतिदिन तीनों सन्ध्या-

ओं में चावलों के जल द्वारा सींचे । इस प्रकार तीन सप्ताह पर्यन्त सींचन करने से दूर से बेडियों से बँधीहुई स्त्री भी आकृष्ट होकर आसकती है ॥१॥ ॥२॥

पूर्व्वोक्तैरौषधैर्यन्त्रं रक्तवस्त्रेलिखेत्सदा ।
वेष्टयेद्रक्तसूत्रेण जपेद्ध्यायेच्चपूर्व्ववत् ॥३॥
तद्यन्त्रंपूजयेन्मन्त्री निगलेस्वान्तरेततः ।
वद्धमाकर्षयेद्यन्तु निगड़ैप्रतिपीड़ितं ॥४॥

--लाक्षारस और रक्तचन्दन द्वारा लालवस्त्र पर यन्त्र लिख कर यह वस्त्र लालडोरे से बांधे । इसके उपरान्त पूर्ववत् ध्यान पूजा और मन्त्र का जप करता रहे । इस प्रकार करने से निगड़ (बेडियां) बद्ध (बँधा) व्यक्ति भी शीघ्र आकृष्ट होकर आ सकता है ॥३॥ ॥४॥

पूर्व्वोक्तैरौषधैर्यन्त्रं पूजयित्वातथाक्षिपेत् ।
नागवल्लीदलेयला जपेध्यायेच्चपूर्व्ववत् ॥५॥
त्रिसप्ताहेदिनेप्राप्ते सम्यगाकर्षणंभवेत् ॥६॥

लाक्षारस और लालचन्दन से ताम्बूल पत्र पर यन्त्र खेंचकर पूर्ववत् ध्यान, पूजा और जप करे । इस प्रकार तीन सप्ताह तक ध्यान पूजादि करने से शीघ्र आकर्षण होजाता है ॥५-६॥

पूर्व्वोक्तैरौषधैर्यन्त्रं पूजयेन्मन्त्रसंयुतं ।
वेष्टयेत्पद्मसूत्रैश्च निक्षिपेत्कलसान्तरे ॥७॥
तत्रैवपूजयेन्नित्यं समादाकर्षणंभवेत् ।
पूर्व्ववद्ध्यानमन्त्रेण शम्भुदेवेनभाषितं ॥८॥

पूर्वोक्त औषधि द्वारा ताम्बूल पर यन्त्र खैंचकर उसको पद्मसूत्र से वेष्टन कर कलश में निक्षेप करे। इसके उपरान्त कलश पर पूर्ववत् पूजा करे। इस प्रकार एक मास पर्यन्त पूजादि करने से आकर्षण होजाता है। इस स्थल में जो पूजादि लिखी गई है, उसमें चामुण्डा यन्त्र और रक्त चामुण्डा की पूजा जानना चाहिये॥७॥ ॥८॥

अश्लेषायांसमादाय अर्ज्जुनस्याथवल्कलं ।
अजामूत्रेणसम्पिष्य स्त्रीणांशिरसिनिक्षिपेत् ९
पुरुषस्यपशूनाञ्च क्षिपेदाकर्षणंभवेत् ॥१०॥

अश्लेषा नक्षत्र में अर्जुन वृक्ष की जड लाकर बकरी के दूध में पीसले। यह औषधि किसी स्त्री के मस्तक पर निक्षेप करने से उस स्त्री पर आकर्षण होजाता है। इसी प्रकार किसी पुरुष वा पशु के मस्तक पर डालने से वही पुरुष और वही पशु आकृष्ट होता है॥९॥ ॥१०॥

जलौकानीलसर्पञ्च शोषयित्वाहरत्क्षितौ ।
जम्बीरकाष्ठैस्तच्चूर्ण धूपादाकर्षणंभवेत् ॥११॥

जोंक और कालासांप मारकर उसको सुखाकर चूर्ण करे। फिर नींबू की लकडी की अग्नि में इस चूर्ण की धूप देने से आकर्षण होजाता है ॥११॥

साध्यायावामपादस्थां मृत्तिकामाहरेत्क्षितौ ।
कृकलासस्यरक्तेन प्रतिमांकारयेत्सुधीः ॥१२॥
साध्यानामाक्षरतस्या स्तद्रक्तैर्व्विलिखेद्धृदि ।
मूत्रस्थानेचनिखनेत् सदातत्रैवमूत्रयेत् ॥१३॥
आकर्षयेत्तुतांनारीं शतयोजनसंस्थितां ।
चतुर्लक्षमितेजसे घुंघुंतोनामचेटकः ॥१४॥
यत्रपुष्पफलादीनां करोत्याकर्षणंध्रुवं ॥१५॥
ऊँघुंघुंताआकृष्टिकर्त्तास्टष्टिपुरीअमुकींवरोह्लींह्रीं ।

जिसको आकर्षण करना हो, उसके बायें पैर में स्थित मट्टी लाकर यह मट्टी और १ कृकलास, का रक्त यह दोनों द्रव्य मिलाकर एक प्रति मूर्त्ति बनाकर उसके वृक्ष स्थल में कृकलास के रक्त से आकर्षणीय व्यक्ति का नाम लिखना हो-

ता है। अनन्तर यह प्रति मूर्त्ति मूत्र स्थान में दाबकर उसके ऊपर पेशाब करे। इस प्रकार करने से शतयोजन दूर वाली स्त्री भी आकृष्ट होकर साधक के निकट उपस्थित होजाती है ॥१२॥ ॥१३॥ ॥१४॥ ॥१५॥

इतिकामौरतौग्राह्यौ भ्रमरौयत्नतोवुधैः ।
भिन्नोकृत्वादहेत्तौतु चित्तिकाष्ठैस्तयोःपुनः ॥१६॥
वस्त्रेणवेष्टयेद्भस्म पृथक्तत्पोटलीद्वयं ।
तयोरेकमजाशृङ्गे दृढंवद्धापरिक्षिपेत् ॥१७॥
यदायातितुसामेषी तत्पृथग्बन्धयेद्वुधः ।
तद्भस्मशिरसिन्यस्तं क्षणादाकर्षयेत्स्त्रियं ॥१८॥
अपरंरक्षयेद्धस्ते यदिनायातिकामिनी ॥१९॥
ऊँकृष्णवर्त्तायस्वाहा । इमंमन्त्रंपूर्वमेवायुतं
जंप्त्वाउक्तयोगेनामतिमन्त्रेणसिद्धिः ।

रति कार्य में निरत दो भ्रमर लाकर पृथक पृथक चीते के काष्ट की अग्नि में दग्ध करके उसकी भस्म ग्रहण करे, फिर यह भस्म वस्त्र द्वारा ढक कर पृथक दो पोटली करे, इसके उपरान्त उसमें से एक पोटली बकरी के सींग में मजबूत बां-

धकर बकरी को छोंड़दे। दूसरी पोटली अपने हाथ में बांधे, यह बकरी जिसके निकट जायगी, वही व्यक्ति आकृष्ट होकर आवेगा। यदि एकबार में कार्य सिद्धि न हो, तो हस्तगत पोटली पुनर्वार बकरी के सींग में बांधकर छोडदे। अथवा इस पोटली की भस्म अभिलाषित स्त्री के मस्तक पर डालदे। इससे निश्चय आकर्षण होता है। इस प्रक्रिया के पहले "ओं कृष्णवर्त्ताय स्वाहा" यह मन्त्र दशहजार जप करना होता है, और इसी मन्त्र से भस्म अभिमन्त्रित करलेनी चाहिये १६ १९

इति श्री नागभट्ट विरचित वशीकरण तन्त्रे रुहेलखण्डान्तर्गत बरेली निवासी ब्रह्मकुलभूषण प० बांकेलालात्मज श्रीयुत प० श्यामसुन्दर शर्म्मा विरचित भाषाटीकायां श्री शिवार्पणमस्तु।

इति।



॥ जागती कला ॥

क्या खूब ! वाहवा ! यह किताब है कि अमूल्य रत्न इसके गुणो का कहां तक कथन करें बस इतना तो अवश्यही कहेंगे कि बस जैसा नाम वैसाही गुण है मिथ्या जालो और इन्द्रजालिक भ्रमो से छुडाने को कुञ्जी और जन्म मरण तथा आवागमन वेदनाओ स निर्मुक्त करने की नसैनी है बहुत दूर मत जाओ बडे झगडो मेँ मत पड़ो इसमें, ग्रन्थकार ने अपनी आयु भर के एकत्र किये हुए सच्चे २ विषय रक्खे हैं और पुस्तक को चार भागो मेँ विभाग किया है जिनका हम सूक्ष्म कथन करते हैं ज़रा देखिये तो सही ।

प्रथमभाग—इसमें आत्मा अर्थात् मरेहुए मनुष्यो की रूह (आत्मा) को बुलाना और उनसे बात चीत करना और गुप्त भेद जानना बस यदि आपको अपने मरेहुए मित्रो से बात चीत करना अपनी मृतक पत्नी से कथन करना है अपनी सन्तान का हाल जानना है अपने मृतक मा बाप से उस गडे हुए धन आदि का हाल जानना है जिसको वह मरते समय वे बताये छोडगये हैं तो मारे २ क्यो फिरते हो दीवारो से शिर क्यो मारते हो इस किताब ला जवाब को लेकर मनो कामना पूर्ण कीजिये यह कोई आश्चर्य का विषय नहीं है यह वही विद्या है जिसके द्वारा नारद मुनि जी ने महाभारत में मरेहुए वीर पुरुषो की आत्माओ को उनकी प्रिया स्त्रियों के कह

ने मे बुलाया था जिसका कथन महाभारत में बिस्तार पूर्वक है

दूसराभाग—इसमें मेसमेरिजम-शायद बहुत से हमारे पाठकगण यह जानतेही न हों कि मेसमेरिजम कौनसा जानवर है हम बहुतही अल्प विख्यात करते हैं यह वह विद्या है कि जिसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्त्तमान तीनों काल का हाल जानना औरों को बताना देश देशान्तरों के समाचार लेना असाध्य रोगों की चिकित्सा करना योगाभ्यास करना बस फिर अब क्या आमिल हैं तो आप हैं और कामिल हैं तो आप की सबी २ दशा होजाती है।

तीसराभाग—इसमें छाया पुरुष का बुलाना और उससे गुप्त भेद जानना औरों के मन का हाल जानना आदि सभी हैं।

चौथाभाग—इसमें वह यंत्र, मंत्र, तंत्र हैं जो बन्दूक की गोली से अधिक गुण रखते हैं जिनका कथन करना मिथ्या कागज रंगना है हाथ कङ्कन को आरसी क्या?

बस यह सब तो अतिही सूक्ष्मता से कथन किये गये हैं ग्रन्थकार ने यह अतिही देशहितैषिता का काम जो आजकल के भारतवासियों के सर्व भांति विरुद्ध है कर दिखाया, अर्थात् अपना इतना बड़ा कमाया हुआ धन दोनों हाथों लुटादिया जो महाशय इस अमूल्य रत्न को न लूटेंगे वह हाथ मल मल कर पछितावेंगे।

ऐ प्रिय भाइयो! आप लोग हजारों रुपये खर्च करते हैं

और नानाप्रकार की सामग्री एकत्र करते हैं तहां इस अनुपम पुस्तक को अवश्य लीजिये और एकबार पढ़कर तो देख जाइये फिर बस आमिल हैं तो आप हैं और कामिल हैं तो आप योगी हैं तो आप हैं और तेजस्वी हैं तो आप-मूल्य डांकव्यय सहित १≡) आना है।

नित्यतंत्र भाषा टीका सहित

दीक्षा, गुरुकरण, सन्ध्या, गायत्री, जप, होम, पूजा, कुण्डादि का बनाना, शान्ति, सर्व प्रकार की सिद्धियों का प्राप्त होना अर्थात् मन्त्र और साधना के बल से भूत, प्रेत, अप्सरा पिशाच, शव, योगिनी, सुन्दरी आदि साधना द्वारा मनोकामना का सिद्ध होना, अनेक प्रकार का ध्यान, देह तत्व, गुप्तसाधन, भूत भविष्यत् का ज्ञान होजाना, अनाहार रहना, नींद का आना, द्रव्य गुण से अनेक प्रकार के वशीकरण, विद्वेषण, मोहन, स्तम्भन, उच्चाटन, मृत्यु, सञ्जीवन आदि विद्याओं की सिद्धि इस तन्त्र के अनुसार साधना करने से निश्चय प्राप्त होजाती है। रघुनन्दन की स्मृति, कृष्णानन्द के तन्त्र सार, महा निर्वाण तन्त्र और प्राणतोषिक आदि तन्त्रों का सार भाग यह तन्त्र है। आकाशचर, जलचर और थलचर आदि प्राणियों के ऊपर भी इस तन्त्र के कार्य का प्रभाव पहुँच सक्ता है। जो काम सहस्र २ मुद्रा खर्च करने पर नहीं होसक्ता, जो कार्य हृदय का रुधिर दान करने से भी नहीं

होसक्ता है वह काम इस तन्त्र के अनुसार व्यवहार करने से अवश्य होजाता है।

जिन लोगों को सदा अपने स्नेहियों की याद बेचैन करती है, जो लोग रुपये पैसे से सदा तङ्ग रहते हैं, जिन लोगों को अपने धर्म से प्रेम है, जिनको देवी देवताओं पर भी अपना प्रभाव पहुँचाना है, वह अवश्य एकबार इस तन्त्र को मँगाकर पढ़ें छापा उत्तम कागज़ बढ़िया दाम ॥।) डांकव्यय ⌐)

महा निर्वाण तन्त्रम्

यह ग्रन्थ वेद प्रतिपाद्य है, संसार की समस्त क्रिया, मनुष्य के दश संस्कार, देव देवी पूजा पद्धति, कलियुग के जीवों की अवस्था, साधना की रीति, अधिकारी भेद से पृथक् पृथक् उपासना पद्धति, मन्त्रादि के द्वारा अभिषेक की रीति, मुक्ति का सीधा रास्ता, सँन्यासी के सिद्ध होने की रीति सर्व प्रकार की सिद्धियों का हस्तगत होना, राज्य प्राप्त करना दरिद्र को भी महा सम्पत्ति प्राप्त करना, व्यवहाराध्याय किसको पिता का धन मिलसक्ता है किसको नहीं, कैसे अपराध पर अपराधी को कैसा दण्ड मिलना उचित है, वर्णसङ्करादि की उत्पत्ति और ब्रह्मोपलब्धि आदि विषय इस प्रकार सरल भाषा टीका सहित लिखे गये हैं कि बालक तक सरलता से इसकी भाषा समझ जायँगे. यह वही तन्त्रशास्त्र है कि जिसको कलियुग में जीवों की सामर्थ्य को हीन हुआ

देखकर पार्वती जी ने शिवजी से पूँछा और महादेव जी ने कहा अनाचारी का अधिकार इस ग्रन्थ के पठन पाठन में नहीं है. मूल सहित बम्बई टाइप में उत्तम कागज़ व उत्तम टाइप में छापा है. सर्व साधारण के पास यह ग्रन्थ पहुँच जाय इस कारण इस बड़े ग्रन्थ का मूल्य २) रु० डाकव्यय ।) आना है वी. पी. में लेने से २।≈) लगेगा ।

॥ गोपीचन्द नाटक ॥

हिन्दी भाषा में आजकल जिन नाटकों का अभिनय होता है उन नाटकों में से यह भी एक उत्तम नाटक है । इसकी भाषा शुद्ध और रसिक है । बङ्गाल देश के राजा गोपीचन्द की माता का जालन्दर गुरु से उपदेश पाना, गोपीचन्द का बारह सौ रानियों को और राजपाट को छोड़कर योगी होना, रानियों का महा विलाप कलाप, वनमें जाकर मच्छेन्द्रनाथ के शिष्य और गोरखनाथ के समागम होने से कामरूदेश में जाने के लिये तैयार होना, मच्छेन्द्रनाथ का त्रियाराज्य के मध्य कामकला के फन्दे में फँस जाना, गोपीचन्द के बहनोई कुन्दनसेन का भी सारिका के यहां कैद हो जाना, गोपीचन्द, कानीफ, गोरक्षनाथादि का नाटक करने के बहाने मच्छेन्द्रनाथ को छुटाने जाना, वहां इन्द्रसभा का रूपक दिखाना, उस रूपक को देखकर मच्छेन्द्रनाथ को अपनी पिछली अवस्था का याद आना, मच्छेन्द्रनाथ का मूर्छि-

त होना, गोरक्षनाथादि का कामकला से इनाम में मच्छेन्द्रनाथ तथा कुँदनसेन को मांग लेना। मच्छेन्द्रनाथ के गर्व को दूर होना, और शिष्य गोरक्षनाथ से यह कहना। कि शङ्कर जी सच्चे हैं माया अजीत है। और गुरू से चेला बड़ा है। वहां से बहन चम्पावती के पास गोपीचन्द का आना, योग और गृहस्थ धर्मपर वादानुवाद फिर अपने नगर में आना, मैनावती का शरीर त्यागना, शोक की मूर्त्ति, गोपीचन्द का दुबारा राज्यपर बैठना। अनेक देशों के गवैयों का आना, अपनी अपनी भाषा में ईश्वर के गुणानुवादों का गाना। नाटक का समाप्त होना॥ इन सब बातों का ऐसा वर्णन किया है कि पढ़ते २ कभी २ हँसी आती है कभी शोकसागर उछल उठता है कभी अद्भुत रसकी लहरैं भिगोती हैं। गोपीचन्द की रानियों का विलाप एक क्षण के लिये नहीं बिसरेगा। ऐसे उत्तम नाटक का मूल्य डांकव्यय सहित पांच आना है। वी० पी० में लेने से सात आना लगेगा॥

चन्द्रकान्ता उपन्यास

इस उपन्यास के पढ़ने से साफ मालूम होगा कि पुराने जमाने में राजदरबार में ऐयार लोग रहा करते थे। जो हरफनमौला होते थे, उन ऐयारों की चालाकी का मजा आप को इस किताब में मिलेगा सिवाय इसके पुरानी इमारतों तथा पहाडी रजवाडों के साथ साथ पहाड़ी और जङ्गल सीनरी (छ्टा) का

आनन्द विशेष मिलेगा, केवल इतना ही नही वल्कि तिलस्म की अद्भुत कारीगरी तथा कौतुहल वर्धक बातें पढ़कर आप बहुतही प्रसन्न होंगे विशेषता यह है कि इस पुस्तक का पढ़ने वाला धूर्तों और दगाबाजों के धोखे में कदापि न फसेगा। लोगों ने इस उपन्यास को बहुतही पसन्द किया और थोड़ेही दिन में इसको दूसरी दफे छपने की नौवत आई इस पुस्तक का आकार पांच सौ पृष्ठ से ज्यादे है मूल्य २) डांक महसूल ≡) इस पुस्तक की नायिका चन्द्रकान्ता और नायक बीरेन्द्रसिंह का हाल पढ़कर पाठक इतने प्रसन्न हुये कि इसी ढँगपर चन्द्रकान्ता के लड़कों का हाल अर्थात् चन्द्रकान्ता सन्तति चन्द्रकान्ता से भी तिगुना उपन्यास लिखने की नौवत आई अब वह भी छप कर तैयार है जिसका हाल आगे चलकर उपन्यासलहरी के विज्ञापन से आपको माळूम होगा।

॥ पुराणप्रतिपादन ॥

इस पुस्तक में आर्य्य समाज उपदेशक फारसी के पण्डित लेखराम जी की बनी हुई "पुराण किसने बनाये" पुस्तक का खण्डन और अनेक प्रमाणों से पुराणों का मण्डन और प्राचीनता सिद्ध कर मिथ्या आक्षेपों से बचाया है मूल्य ।॥ आ० धर्म्मार्थ बांटने वाले धर्म्मावलम्बियों को २॥) सैकड़े में दीजायगी

॥ रुद्राष्टाध्यायी भाषाटीका सहित ॥

इस ग्रन्थ की महिमा को सब छोटे बडे जानते हैं। यह

ग्रन्थ बडेही काम का है। ऊपर मूल श्लोक नीचे भाषा टीका है मूल्य ।≈) आना। डांकव्यय -) आना।

॥ रुद्राक्षधारणविधि ॥

इस पुस्तक के पढ़ने से अखण्ड पुण्य होता है, शिव पूजन करने वालों को इसको एक प्रति अवश्य लेनी चाहिये। ऊपर मूलश्लोक और नीचे भाषाटीका है। मूल्य डांकव्यय सहित केवल ≡) आना॥

॥ हनुमानज्योतिष ॥

यदि घर बैठे सहस्रों रुपये लेना चाहते हो, नाज की मँहगी, मन्दी को जानना चाहते हो तो इस पुस्तक को पढ़ो। भाषा में आजतक ऐसी पुस्तक नहीं छपी। मूल्य डांकव्यय सहित केवल ।) आना॥

हितोपदेश भाषाटीका सहित दाम १) रुपया।

वर्षबोध भाषाटीका सहित दाम ।॥) आना।

— योगिनी तन्त्र भाषाटीका सहित छपता है।

— यन्त्र चिन्तामणि भाषाटीका सहित छपती है।

उपरोक्त पुस्तकों के अतिरिक्त हमारे यहां पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद निवासी रचित समस्त पुस्तकें मिल सक्ती हैं॥ इस ठिकाने पर पत्र भेजो —

पण्डित बलदेवप्रसाद मिश्र
मोहल्ला दीनदारपुरा,-मुरादाबाद